दैनिक जागरण
प्रकृति सबसे बड़ी रचयिता है

पहलगाम जैसी करतूत

जम्मू-कश्मीर के कुलगाम में ईंट भट्ठे पर काम करने वाले छत्तीसगढ़ के दो हिंदू श्रमिकों की उनका मजहब पूछकर हत्या पहलगाम के भीषण आतंकी हमले की याद दिलाने वाली बर्बर घटना है। पिछले वर्ष अप्रैल में पहलगाम में इसी तरह करीब दो दर्जन पर्यटकों को उनका मजहब पूछकर मारा गया था। यह भी ध्यान रहे कि पहलगाम की तरह कुलगाम के बर्बर हमले की जिम्मेदारी पाकिस्तान के उसी पालतू आतंकी संगठन टीआरएफ ने ली है, जो लश्करे तैयबा का मुखौटा संगठन है। पाकिस्तान ने टीआरएफ को लश्करे तैयबा की मदद से तब खड़ा किया था, जब उसके सिर पर एफएटीएफ की तलवार लटक रही थी। कुलगाम की घटना यह बता रही है कि अभी टीआरएफ आतंकियों के दुस्साहस का दमन होना शेष है। टीआरएफ गैर-कश्मीरियों और खासकर हिंदुओं की हत्या करने के लिए कुख्यात रहा है। पहलगाम की घटना की भी उसने जिम्मेदारी ली थी। बाद में डर से मुकर गया था। तथ्य यह भी है कि पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र में उसका बचाव किया था। लगता है पाकिस्तान पहलगाम आतंकी हमले के बाद आपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय सेना के हाथों हुई अपनी तबाही भूल गया है। कुलगाम में आतंकी हमला ऐसे समय किया गया, जब पाकिस्तान अपने कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर में लोगों का निर्ममता से दमन करने में लगा हुआ है। हैरानी नहीं कि इस कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी जो थू-थू हो रही है, उससे ही ध्यान बंटाने के लिए उसने कुलगाम में पहलगाम की तर्ज पर आतंकी हमला कराया हो।

पाकिस्तान का दुस्साहस इसलिए बढ़ गया है, क्योंकि अमेरिका ने उसकी पीठ पर हाथ रख दिया है। ऐसे में भारत को उस पर दबाव बनाने के लिए कूटनीतिक स्तर पर कुछ नए कदम उठाने होंगे। इसके साथ ही पाकिस्तान को यह भी याद दिलाना होगा कि आपरेशन सिंदूर अभी स्थगित भर है। कुलगाम की घटना यह भी रेखांकित कर रही है कि जम्मू-कश्मीर में आतंकियों को अभी भी पनाह मिल रही है और उन्हें सहयोग एवं संरक्षण देने वाले तत्व सक्रिय हैं। आतंकियों के साथ उनके समर्थकों को भी निशाने पर लेने की जरूरत है। जब तक ऐसा नहीं किया जाता, तब तक कश्मीर में शांति की सही तरह बहाली संभव नहीं। आतंकवाद का तो कोई मजहब नहीं होता, लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं कि आतंकी मजहब की आड़ लेते हैं। कश्मीर में आतंकियों को संरक्षण मिलने का यही एक बड़ा कारण है। समस्या यह है कि कश्मीरी नेता इस सच से मुंह मोड़ना चाहते हैं। इसकी अनदेखी न की जाए कि जम्मू-कश्मीर में सत्तारूढ़ नेशनल कांफ्रेंस के नेता कुलगाम की घटना पर यह बेतुका प्रश्न उठाने में लगे हुए हैं कि ऐसा तभी क्यों होता है, जब वे जम्मू-कश्मीर के राज्य दर्जे को बहाल करने की मांग करते हैं? इस तरह के सवाल शरारतपूर्ण ही हैं।

जनसमस्याओ का समाधान

सरकारों के कामकाज का मूल्यांकन का आधार जनशिकायतों का समाधान और आमजन को त्वरित न्याय दिलाना भी है। जनता की बड़ी उम्मीदें होती हैं कि समस्याओं का समय पर निस्तारण हो। अधिकारियों की चौखट पर दर-दर की ठोकरें न खानी पड़े। इस दिशा में उत्तराखंड में मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1905 पर दर्ज शिकायतों के निस्तारण के आंकड़े सुखद अनुभूति कराते हैं। तीन महीने में 78 प्रतिशत शिकायतों का निस्तारण आमजन को बड़ी राहत मानी जा सकती है। यह कहना गलत नहीं होगा कि मुख्यमंत्री हेल्पलाइन जहां जनसमस्याओं के त्वरित समाधान का प्रभावी माध्यम है वहीं, जनता का अपना हक पाने का अधिकार भी है। इसके बाद भी अक्सर देखा जाता है कि निर्धारित अवधि में शिकायतों का समाधान नहीं हो पा रहा है, जबकि शिकायतों के निस्तारण के लिए 36 दिनों का समय तय किया गया है। ऐसे में लोगों की उम्मीदें टूट जाती हैं, भरोसा टूट जाता है। ऐसे में आवश्यकता शिकायतों के समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण निस्तारण की है। अब लोग पानी, बिजली कटौती, रसोई गैस और बिजली बिल संशोधन जैसी समस्याओं को भी सामने रख रहे हैं। इसलिए, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि विभागों की ओर से उदासीनता न बरती जानी चाहिए। जवाबदेही तय हो और शिकायतों की नियमित समीक्षा हो। इस सबके बीच यह भी अच्छी पहल है कि स्वयं मुख्यमंत्री शिकायतों पर हुई कार्रवाई की समीक्षा कर रहे हैं।

> मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1905 पर दर्ज शिकायतों के त्वरित निस्तारण के लिए जवाबदेही और जिम्मेदारी तय करनी जरूरी है

अराजकता को उचित ठहराने की कोशिश

संजय गुप्त

काकरोच जनता पार्टी मांग कर रही है कि उसके प्रदर्शन में जिन्होंने हिंसा की, उन्हें भी माफी दी जाए। ऐसा करने से गलत परिपाटी बनेगी और इसका लाभ अराजक तत्व उठाएंगे

शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के त्यागपत्र के साथ ही जंतर-मंतर पर काकरोच जनता पार्टी का धरना-प्रदर्शन समाप्त हो गया, लेकिन उसके बाद जिस तरह की राजनीति हुई और हो रही है, वह चिंतित करने वाली है। सीजेपी के संसद मार्च में हिंसा के बाद जहां धर्मेंद्र प्रधान को इस्तीफा देना पड़ा, वहीं प्रधानमंत्री को नीट पेपर लीक मामले में फास्ट ट्रैक अदालत के गठन की घोषणा करने और पेपर लीक विरोधी कानून में संशोधन का विधेयक लाने के साथ ही परीक्षा सुधार पर नंदन नीलेकणि के नेतृत्व में समिति गठन करने के साथ कई कदम उठाने पड़े। यह एक सवाल है कि ये फैसले पहले ही क्यों नहीं लिए गए, लेकिन यह भी कम दुर्भाग्यपूर्ण नहीं कि पेपर लीक विरोधी कानून में संशोधन विधेयक पर संसद में कुल मिलाकर खोखली बहस ही हुई। पक्ष-विपक्ष ने सिर्फ एक-दूसरे पर आरोप लगाए। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अपनी सारी ऊर्जा सरकार पर अनर्गल आरोप लगाने में खपा दी। प्रियंका गांधी ने गोमूत्र का उल्लेख कर यही बताया कि उनके पास भी उक्त विधेयक पर कहने के लिए कुछ नहीं था। चूंकि सत्तापक्ष भी विपक्ष को घेरने और उसके आरोपों का जवाब देने तक सीमित रहा, इसलिए किसी की ओर से भी शिक्षा और परीक्षा में आवश्यक सुधार को लेकर गंभीर सुझाव नहीं दिए जा सके।

पेपर लीक विरोधी कानून में संशोधन विधेयक पर किसी भी सांसद ने स्कूली परीक्षाओं में नकल की बढ़ती प्रवृत्ति की ओर ध्यान आकर्षित नहीं किया। क्या यह विचित्र नहीं कि किसी को यह नहीं दिखाई दिया कि नकल की यह प्रवृत्ति समाज के अंदर घर कर गई चारित्रिक कमी को रेखांकित करती है और यह प्रवृत्ति ही परीक्षाओं में सेंध लगने का कारण बनती है? इस प्रवृत्ति की ही देन है पेपर लीक माफिया। राजनीतिक दलों की तरह सीजेपी ने शिक्षा और परीक्षा में सुधार को लेकर कोई ठोस सुझाव नहीं दिया। उसने सरकार को जो पांच सूत्रीय चार्टर दिया, उसमें कहीं इसका उल्लेख नहीं कि स्कूली परीक्षाओं में नकल भी एक गंभीर समस्या है और नकल करने-कराने में छात्र, अभिभावक और शिक्षक भी शामिल रहते हैं।

लगता है सीजेपी के धरने का एकमात्र लक्ष्य सिर्फ धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा मांगना था। शायद इसीलिए उसने अपने समर्थकों की भीड़ में अराजक तत्वों के शामिल होने की परवाह नहीं की और न ही यह देखा कि उसके मंच का इस्तेमाल कैसे-कैसे लोग कर रहे हैं और वे कैसी भाषा बोल रहे हैं। सीजेपी के नेताओं को गाली-गलौज भी हल्का मजाक लग रहा है। वास्तव में सीजेपी के ऐसे ही रवैये के कारण उसके संसद मार्च में हिंसा हुई। यह कहना कठिन है कि सीजेपी वालों की कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा है या नहीं और वे किसी दल के हितैषी हैं या नहीं, लेकिन वे जिस तरह अपने समर्थकों की भीड़ में शामिल अराजक तत्वों और यहां तक कि आपराधिक पृष्ठभूमि वालों का भी बचाव कर रहे हैं, उससे उनके संदिग्ध इरादों का ही पता चलता है। यदि वे ऐसा गैर-जिम्मेदाराना रवैया नहीं अपनाते तो संभवतः उनके संसद मार्च में हिंसा भी नहीं होती। लगता है वे संसद में हिंसा होते हुए देखना चाहते थे और इसीलिए उन्होंने बिना इजाजत संसद भवन में घुसने की कोशिश की। संसद मार्च में हिंसक भीड़ से निपटने के लिए दिल्ली पुलिस द्वारा जो बल प्रयोग किया गया, वह एक मुद्दा बना हुआ है। विपक्ष यह सिद्ध करने में लगा हुआ है कि सीजेपी समर्थकों की भीड़ ने कुछ नहीं किया और पुलिस ने उस पर अकारण बल प्रयोग किया, लेकिन पुलिस की एफआइआर यह संकेत कर रही है कि संसद मार्च में अराजक तत्वों के साथ राजनीतिक दलों से जुड़े आपराधिक इतिहास वाले लोग शामिल थे। इनमें हत्या, लूट के भी आरोपित हैं।

अवधेश राजपूत

संसद मार्च में हिंसा का मामला सुप्रीम कोर्ट भी पहुंच गया है। वह इस तथ्य की उपेक्षा करने की स्थिति में नहीं कि संसद मार्च में हिंसा में प्रदर्शनकारियों के साथ बड़ी संख्या में पुलिस वाले भी घायल हुए हैं। जंतर-मंतर पर तैनात जवानों को यह सुनिश्चित करना था कि सीजेपी समर्थकों की भीड़ संसद की ओर न जाने पाए। आखिर ऐसे में सीजेपी हिंसा की जिम्मेदारी से कैसे बच सकती है? यह भी विचारणीय है कि जब सीजेपी ने संसद मार्च की घोषणा की, तब दिल्ली पुलिस ने उससे बार-बार कहा कि अगर मार्च करना है तो उसकी अनुमति लो, पर वह ऐसा करने से इन्कार करती रही। इस तरह उसका यह मार्च पूरी तरह गैर-कानूनी बन गया। पुलिस ने सख्ती तब दिखाई, जब भीड़ दो बैरिकेड तोड़ने के बाद तीसरे की ओर बढ़ी और ईंट-पत्थर चलाने लगी। जब इस पथराव की चपेट में पुलिस अफसर और जवान आए, तब उन्होंने आंसू गैस के गोले दागे और लाठीचार्ज किया। जब इससे भी बात बनती नहीं दिखी, तब रैपिड एक्शन फोर्स ने पैलेट गन का इस्तेमाल किया। सुप्रीम कोर्ट ने इसकी जांच की जरूरत जताते हुए यह भी कहा है कि असाधारण परिस्थितियों में पैलेट गन का इस्तेमाल किया जा सकता है। यदि कोई यह समझ रहा है कि पुलिस और अर्धसैनिक बलों के जवान बेलगाम भीड़ से पिटने के लिए खड़े थे, तो यह उसकी गलती है।

सीजेपी लगातार यह अनैतिक मांग कर रही है कि उसके प्रदर्शन में जिन लोगों ने हिंसा की, उन्हें भी माफी दी जाए। ऐसा करने से एक गलत परिपाटी बन जाएगी और इसका लाभ अराजक तत्व उठाएंगे। लोकतंत्र में धरना-प्रदर्शन होना स्वाभाविक है, लेकिन यह ध्यान रहे कि अराजक भीड़ पर पुलिस ने न तो पहली बार लाठीचार्ज किया है और न ही आंसू गैस या पैलेट गन का इस्तेमाल। जब-जब भीड़ ने हिंसा की है, तब-तब पुलिस ने बल प्रयोग किया है और कई बार तो गोलियां भी चलाई हैं। यह सब जानते हुए भी सीजेपी यह मांग कर रही है कि उनके समर्थकों की भीड़ में शामिल हिंसक तत्वों को बख्श दिया जाए। उन्हें यह पता होना चाहिए था कि अगर उनके समर्थक अशांति फैलाएंगे तो इसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे। सीजेपी का इरादा जो भी हो, शिक्षा और परीक्षा में सुधार के लिए जैसे उपायों की आवश्यकता है, उन पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय वह अराजक तत्वों के साथ खड़ी होने को आतुर दिखती है। इससे वह अपने को संदिग्ध बनाने का ही काम कर रही है।

response@jagran.com

भीड़ और भेड़ के बीच की समानताएं

हास्य-व्यंग्य

भीड़ में शामिल होते ही आदमी के भीतर अतुलित बल आ जाता है। घर में पत्नी की डांट-डपट पर बिल्ली की तरह 'म्याऊं' बोलता बंदा भी भीड़ में शेर की तरह दहाड़ते हुए पुलिस-प्रशासन से आंखें मिलाकर बात करने लगता है। माइक पकड़कर देश को दिशा देने लगता है। भीड़ और भाड़ में बस इतनी मौलिक समानता है कि दोनों अकेले कुछ नहीं कर सकते। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। अकेला आदमी अकेलापन नहीं तोड़ सकता। चना भाड़ में और आदमी भीड़ में भड़कता ही भड़कता है।

भीड़ और भेड़ में भी समानताएं हैं। भेड़ों का अपना कोई मार्ग नहीं होता। आगे वाली भेड़ जिस दिशा में चलती है, पीछे वाली उसी दिशा में, एक साथ चलती हैं। वे जब मिमियाती हैं तो ऐसा लगता है कि जैसे कोई भीड़तंत्र ही मिमियाने लगा है। अनगढ़ भीड़ का भी लगभग यही हाल है। भीड़ जब अपनी पर आ जाती है, तो किसी समय हर रोज स्कूल में दोहराई गई प्रतिज्ञा की पंक्तियां न जाने किस भाड़ में झोंक दी जाती हैं। भीड़ में 'येन गतः स पन्थाः' का सिद्धांत लागू होता है। यानी नेता जिस रास्ते पर चल पड़ा, वही श्रेष्ठ है।

भीड़ में शर्म को भी शर्म आने लगती है, जब अकेले में संस्कारों की गठरी सिर पर रखकर चलने वाले लोग भीड़ में आते ही उस गठरी को दरिया में फेंक देते हैं। फिर ऐसे-ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं, जिन्हें सुनकर शब्दकोश भी स्वयं को समेट कर अपने पन्ने बंद कर लेना चाहे। कान भी अपने कर्णपट कुंद कर लेना चाहें। भीड़ व्यक्ति के भीतर छिपे संस्कारों को कैमरे के माध्यम से खुलेआम प्रकाशित कर देती है। कुछ लोग इन्हीं संस्कारों को अपनी पूंजी भी समझने लगे हैं।

केदार शर्मा

भीड़ का यही मंत्र है-सबकी जिम्मेदारी असल में किसी की जिम्मेदारी नहीं है। भीड़ के दोनों हाथों में लड्डू रहता है

भीड़ का अपना न्यायशास्त्र भी होता है तो अपनी स्वनिर्मित अन्याय संहिता भी। जब निर्दोष कहे कि 'हमारी मेहनत, हमारे समय और हमारे भविष्य से यह खिलवाड़ कब तक होता रहेगा?' तो ठीक लगता है। लेकिन भीड़ में शामिल अपराधी भी सफाई देने पर आमादा हो जाएं कि 'माना कि, हममें से ही किसी ने अपराध किया होगा, लेकिन आपने हमें रोका क्यों नहीं? आप रोक लेते तो बात वहीं समाप्त हो जाती। आप रोक नहीं पाए, इसलिए इसके असली तो दोषी आप हुए। अब बोनस में हमारी गलती की सजा भी आप भुगतिए।' भीड़ का तर्क या कहें कि कुतर्क ही यही होता है-सबकी जिम्मेदारी असल में किसी की जिम्मेदारी नहीं है।

कभी-कभी भीड़ जब व्यवस्था से भिड़ने लगती है तो लगता है कि कवि की कविता के निहितार्थ बदल गए हैं और वह कुछ इस प्रकार सुनाई पड़ने लगती है, 'सिंहासन खाली करो कि भेड़ें आती हैं।' एक सिंहासन खाली होता है तो भीड़ दूसरा सिंहासन खाली कराने पर अड़ जाती है। मानो सिंहासन ही समस्या हो और खाली कराना ही समाधान हो। एक स्तर पर आकर सभ्य हो जाने वाली भीड़ सभा में भी बदल जाती है तो असभ्य भीड़ भगदड़ में। भीड़ दर्पण होती है। उसमें हमारी शिक्षा, हमारे संस्कार और हमारी सामाजिक समझ का प्रतिबिंब दिखाई देता है। भीड़ जिस भाषा में बात करती है, जिस तरह से अपना पक्ष रखती है अथवा जिस चालाकी से अपनी जिम्मेदारी दूसरों पर डाल देती है, तब सोचने की नौबत आती है कि हमने समाज में कौनसे बीज बोए थे? जब उन्हीं बीजों की फसल हमारे सामने अनगढ़ भीड़ के रूप में खड़ी हो तो देखकर हम हैरान होते हैं-मानो बीज किसी और ने बोए हों।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य

समुद्री परिवहन में किसके नाविकों की कितनी हिस्सेदारी

देश	नाविक
इंडोनेशिया	1,83,244
रूस	2,39,357
चीन	3,10,000
भारत	3,11,936
फिलीपींस	4,60,147

स्रोत: नाविक कार्यबल रिपोर्ट 2026

ऊर्जा

प्रकृति तत्व

पृथ्वी पर जीवन का कारण पदार्थों की नैसर्गिक संरचना है। यही उनका प्रकृति तत्व और प्राण तत्व है। धरती, जल, वायु, अग्नि व आकाश जैसे सृष्टि के कारण भूत तत्व भी अपनी मूल प्रकृति में ही सबका हित साधन करते हैं। वनस्पतियां इसी तत्व के कारण स्वस्थ जीवन का आधार बनती हैं। धरती का कण-कण अपनी निर्धारित परिधि में जीवनी शक्ति का संचार करता है, किंतु निरंतर बढ़ रहा प्रदूषण पदार्थों की नैसर्गिकता को निगल रहा है। मानव में धन की भूख इतनी प्रबल हो गई कि खाद्य-पदार्थों में भी कृत्रिमता परोसी जा रही है। जीवन का शायद ही कोई क्षेत्र हो, जहां प्रकृति तत्व शेष बचा हो। स्वास्थ्य सुविधाओं में बढ़ोतरी के बावजूद रोगों में वृद्धि इसका प्रमाण है। पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्तों में विघटन मानवीय प्रकृति में आए क्षरण को रेखांकित करता है। इसीलिए तमाम साधन-संपन्न लोग भी स्वस्थ नहीं। संभवतः, हमने विस्मृत कर दिया कि प्रकृति जीवन है और कृत्रिमता मृत्यु को आमंत्रण।

प्रकृति के अधीन जीवन जीना एक साधना है और इसके मूल तत्वों की रक्षा सबसे बड़ी भक्ति। विशुद्ध पर्यावरण और स्वस्थ जीवन इस साधना का फल है। यह तभी संभव है जब अंतर्मन में सत्यं, शिवं, सुंदरम का भाव हो और सबके योगक्षेम का संकल्प। सत्य एक है जो शिव भी है और सुंदर भी। नैतिकता इनकी पोषिका है, जिसके बिना सत् की सत्ता भासित नहीं होती। स्वार्थ-लोभ की प्रवृत्ति प्रकृति तत्व को निगल रही है, जिससे कृत्रिमता का विस्तार हो रहा है, जो असत् का ही रूप है। जब जीवन में इसका प्रवेश हो जाता है तो रंगमंच के नट की भांति वास्तविकता विलुप्त हो जाती है और जीवन संकटों से घिर जाता है। प्रकृति से नैकट्य स्वस्थ व सुखी जीवन का आधार है। अतएव सृष्टि में मौजूद प्रकृति तत्व का संरक्षण आवश्यक है।

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

प्लास्टिक के कचरे से शुद्ध हाइड्रोजन

मुकुल व्यास

प्लास्टिक प्रदूषण दुनिया की एक बहुत बड़ी पर्यावरणीय समस्या है। लेकिन प्लास्टिक का कचरा वरदान भी हो सकता है। विज्ञानियों ने एक ऐसी तकनीक विकसित की है जो प्लास्टिक कचरे को स्वच्छ हाइड्रोजन में बदल सकती है। उनका दावा है कि नई तकनीक से स्वच्छ ऊर्जा के लिए एक बड़ा और असरदार रास्ता खुल सकता है। प्लास्टिक की रीसाइक्लिंग भी बेहतर हो सकती है।

आज के समाज में प्लास्टिक हर जगह मौजूद है, लेकिन इसे रीसाइकल करना मुश्किल है, क्योंकि ज्यादातर विधियों में अलग-अलग तरह के प्लास्टिक को पहले अलग करना पड़ता है, जो एक महंगा और मेहनत वाला काम है। परिणामस्वरूप केवल नौ प्रतिशत प्लास्टिक कचरा ही रीसाइकल हो पाता है, जबकि 79 प्रतिशत लैंडफिल में चला जाता है और 12 प्रतिशत जला दिया जाता है, जिससे कार्बन डाइआक्साइड निकलती है। अमेरिकी और दक्षिण कोरियाई शोधकर्ताओं ने एक ऐसी रासायनिक प्रक्रिया दिखाई है जो आम तौर पर इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक के तीन मिश्रण को उच्च शुद्धता वाले हाइड्रोजन ईंधन में बदल देती है।

> **प्लास्टिक कचरे को हाइड्रोजन में परिवर्तित करने में पूर्ण सफलता मिले तो स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में बड़ा कदम होगा**

नई खोज आल्कलाइन थर्मल ट्रीटमेंट (एटीटी) पर आधारित है, जिसमें गर्म सोडियम हाइड्राक्साइड कार्बनिक पदार्थ के साथ प्रतिक्रिया करके हाइड्रोजन बनाता है। इससे बनी हाइड्रोजन 90 प्रतिशत से ज्यादा शुद्ध थी। कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर और अध्ययन की सह-लेखक आह-ह्युंग एलिसा पार्क का कहना है कि दुनिया में प्लास्टिक कचरा तेजी से जमा हो रहा है और ऊर्जा को कार्बन मुक्त करने के लिए स्वच्छ हाइड्रोजन जरूरी है। हमारे समक्ष ये दो बड़ी वैश्विक चुनौतियां हैं। नई तकनीक इन दोनों चुनौतियों का रचनात्मक और बड़े पैमाने पर लागू होने वाला समाधान पेश करती है। मूल रूप से एटीटी को समुद्री शैवाल (सीवीड) जैसे बायोमास को हाइड्रोजन गैस में बदलने के तरीके के तौर पर विकसित किया था। शोधकर्ताओं ने इस तरीके को प्लास्टिक कचरे के लिए अपनाया और पीईटी, पीई और पीपी पर लैब टेस्ट में इसका इस्तेमाल किया।

नई तकनीक से बड़ी उम्मीदें हैं, लेकिन इसे व्यावसायिक स्तर पर इस्तेमाल करने से पहले अभी और काम करना बाकी है। हाइड्रोजन को स्वच्छ ईंधन माना जाता है, क्योंकि इससे सिर्फ पानी की भाप निकलती है, लेकिन जलवायु पर इसका असर इस बात पर निर्भर करता है कि इसे कैसे बनाया जाता है। अभी अधिकांश हाइड्रोजन प्राकृतिक गैस का इस्तेमाल करके बनाई जाती है। इस प्रक्रिया में बहुत ज्यादा ऊर्जा लगती है और भारी मात्रा में कार्बन डाइआक्साइड निकलती है। लेकिन शोधकर्ता हाइड्रोजन बनाने के दूसरे तरीके भी खोज रहे हैं। नई रिसर्च हमें हाइड्रोजन के टिकाऊ स्रोत खोजने के और करीब ले जाती है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

धुलेगा बी-टीम का दाग

बिहार में बांकीपुर उपचुनाव का परिणाम अभी आना बाकी है, लेकिन मतदान संपन्न होने के साथ ही राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और प्रशांत किशोर की पार्टी जनसुराज के राजनीतिक भविष्य को लेकर चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है। संकेत मिल रहे हैं कि इस बार मुस्लिम वोटरों के एक बड़े वर्ग का झुकाव जनसुराज की ओर है। अब तक राजद समेत महागठबंधन के दल जनसुराज को भाजपा की 'बी-टीम' बताकर मुस्लिम मतदाताओं को उससे दूरी बनाए रखने की सलाह देते रहे हैं।

पिछले चुनावों में इस रणनीति का असर भी दिखा था। भाजपा और महागठबंधन के बीच सीधी लड़ाई में जनसुराज खाता तक नहीं खोल सकी थी। हालांकि बांकीपुर से जो राजनीतिक संदेश उभरता दिखाई दे रहा है, उसने तेजस्वी यादव की चिंता जरूर बढ़ाई होगी। यदि मुस्लिम वोटों का ठीक-ठाक हिस्सा जनसुराज के खाते में गया है तो प्रशांत किशोर पर 'भाजपा की बी-टीम' होने के राजद के आरोप जहां धुल जाएंगे तो पार्टी की पकड़ अपने पारंपरिक मतदाताओं से छूटती भी दिखेगी। इससे राजद का ही गणित बिगड़ेगा।

राजरंग

विपक्षी सांसदों की व्यथा

सत्तापक्ष की संसद में मुखर घेराबंदी करना विपक्षी सांसदों के लिए अब सहज नहीं रहा। हंगामा करने, वेल में जाने या पोस्टर लहरा कर अपनी बात को लोगों के बीच पहुंचाने के अवसर उनके पास लगभग खत्म हो चुके हैं, क्योंकि जैसे ही वे हंगामा शुरू करते हैं, वैसे ही संसद टीवी के कैमरों का फोकस उनसे हटा दिया जाता है। तब विपक्षी सदस्य वेल में सत्तापक्ष की ओर जाकर कैमरे के दायरे में आने की कोशिश करते हैं। फिर भी बात नहीं बनती, क्योंकि नए बनाए गए संसद भवन का वेल इतना गहरा है कि विपक्षी सांसद चाहे कितना भी तीखा विरोध करें, कैमरे उन्हें अदृश्य ही रखते हैं। जबकि सत्तापक्ष के सदस्यों या मंत्रियों को इस दौरान भी अपनी बात पहुंचाने में कोई दिक्कत नहीं होती। ताजा उदाहरण हाल ही में पेपर लीक विरोधी विधेयक पर नेता-प्रतिपक्ष राहुल गांधी को भाषण पूरा करने का अवसर नहीं दिए जाने और वंदे मातरम् से संबंधित विधेयक सदन के पटल पर रखने के दौरान दिखा। दरअसल हुआ यह कि राहुल गांधी को भाषण का मौका देने के पक्ष में नारेबाजी करते-करते कांग्रेस सांसदों का गला सूख गया, मगर संसद टीवी पर उनकी एक झलक तक नहीं दिखी। वहीं दूसरी ओर, कार्मिक राज्यमंत्री जितेंद्र सिंह की विपक्ष पर हमलों की बौछार स्क्रीन पर बेखटक जारी रही। सदन के भीतर अपने विरोध को लोगों तक नहीं पहुंचा पाने की शायद यह व्यथा ही है कि विपक्षी सांसद सदन के बाहर इन दिनों रोचक तथा अनोखे ढंग से विरोध-प्रदर्शन करते नजर आते हैं।

वंदे मातरम् पर खुशी और गम

वंदे मातरम् के अपमान पर सजा के प्रविधान के नए विधेयक के बाद अब सांसदों को राष्ट्रगीत को पूरा याद करने की चिंता सताने लगी है। राज्यसभा में इस बिल के पारित होने पर सत्ता पक्ष के सांसदों के चेहरे पर खुशी तो थी, लेकिन उन्हें इसके गायन के नए कानूनी प्रोटोकाल का पालन करने को लेकर भी चिंता भी दिखी। सदन से बाहर निकलते हुए कुछ सांसद एक-दूसरे से हास-परिहास करते हुए सुने गए कि अब उन्हें वंदे मातरम् के संपूर्ण अंश को ठीक से याद कर लेना चाहिए। अन्यथा किसी भी दिन उनकी पोल भी खुल सकती है। इसके चलते खुद उन्हें भी कानूनी झमेले झेलने पड़ सकते हैं।

राज्य मंत्रियों ने संभाला मोर्चा

संसद के गलियारों में राज्य मंत्रियों की सक्रियता चर्चा विषय बनी हुई है। प्रधानमंत्री और गृहमंत्री की अनुपस्थिति में उनके राज्य मंत्रियों जितेंद्र सिंह और नित्यानंद राय ने बीते हफ्ते सदन में मोर्चा संभाला और अपने-अपने मंत्रालय से जुड़े विधेयकों को दोनों सदनों में पेश करने से लेकर चर्चा का जवाब दिया। राज्यसभा से वंदे मातरम् से जुड़ा विधेयक पारित होने के बाद जैसे ही नित्यानंद राय सदन से बाहर निकले, भाजपा के एक सांसद ने मोर्चा संभालने के लिए बधाई तक दे दी। फिर वहां मौजूद अन्य लोग भी इसमें शामिल हो गए। इसी तरह विपक्ष के गृहमंत्री को लेकर खड़े किए गए सियासी विवाद के बीच शुक्रवार को भी लोकसभा में भारी हंगामे के बीच जन्म-मृत्यु पंजीकरण से जुड़े संशोधन विधेयक को पेश करने से लेकर उसे पारित कराने तक का मोर्चा भी राय ने ही संभाला।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा-201309 से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष: नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

969 करोड़ रुपये की कमाई हुई सलमान खान अभिनीत फिल्म बजरंगी भाईजान (2015) से, जबकि फिल्म सुल्तान (2016) ने 625 करोड़ रुपये की कमाई की। वहीं टाइगर जिंदा है (2017) ने 569 करोड़ रुपये कमाए।

आजकल

भारतीय परंपरा में गालियों का सौंदर्यशास्त्र

अनंत विजय
anant@nda.jagran.com

हाल ही में नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर युवाओं ने विरोध-प्रदर्शन किया। इस दौरान अनेक युवाओं ने गालियों का उपयोग भी किया जिसके बाद से साहित्य जगत में भी इस पर चर्चा हो रही है। हालांकि कुछ लेखक गाली को साहित्य का अंग बता रहे हैं और वे यह मानने को तैयार नहीं कि गलत हुआ है। कई ऐसे भी हैं जो भारतीय परंपरा से संबंधित गालियों के सौंदर्यशास्त्र की दुहाई भी दे रहे हैं, परंतु उन्हें इसके बारे में सही समझ नहीं है

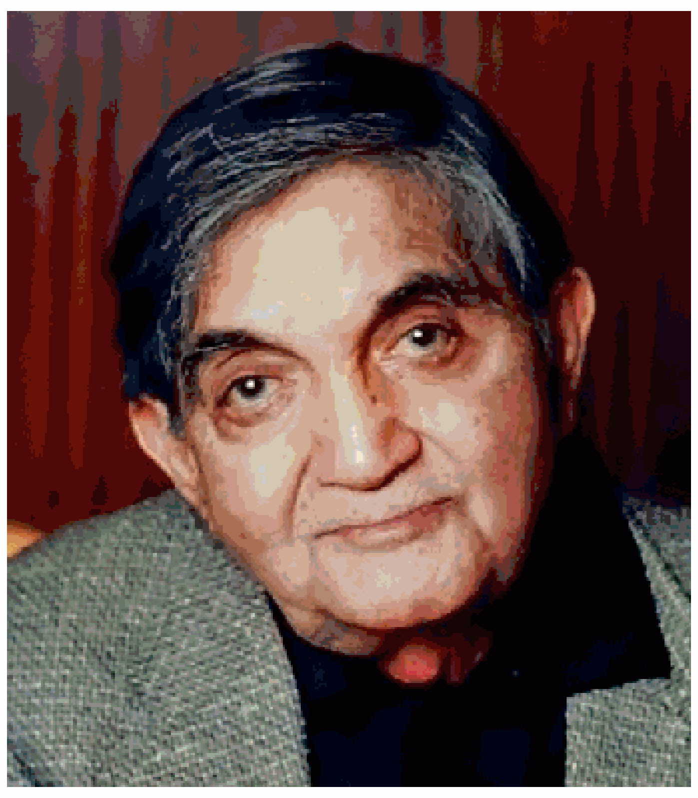
निर्मल वर्मा। फाइल

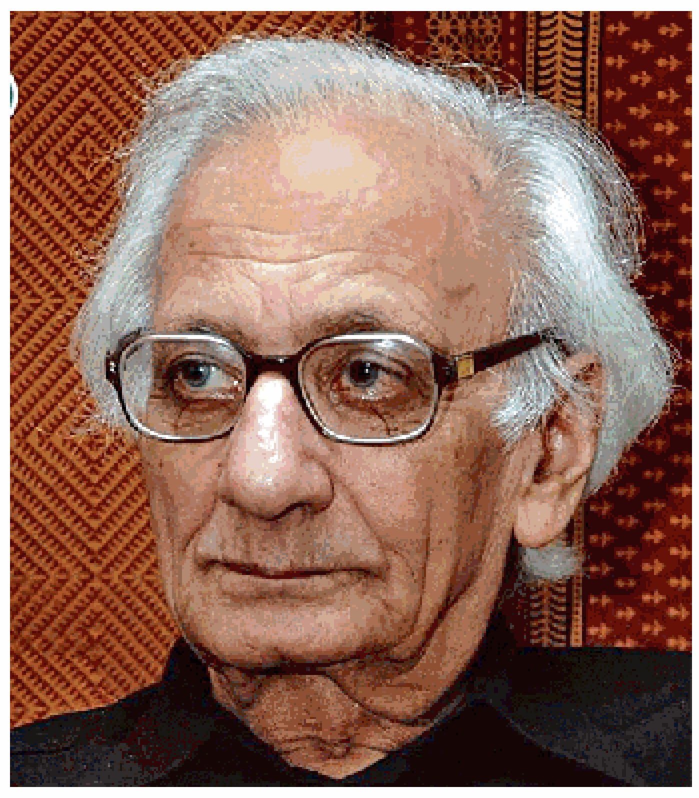
कृष्ण बलदेव वैद। फाइल

नई दिल्ली में जंतर-मंतर पर हुए विरोध प्रदर्शन के बाद आंदोलन में शामिल हुए युवक और युवतियों की भाषा और गालियों पर चर्चा हो रही है। साहित्य जगत इससे अछूता नहीं है। साहित्य जगत में भी गालियों पर खूब चर्चा हुई। प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से ऐसी भाषा का उपयोग किया गया जो साहित्यकारों और लेखक/ लेखिकाओं से अपेक्षित नहीं थी। राजनीतिक प्रतिबद्धता के आधार पर गालियों की पैरोकारी की गई। कुछ उत्साही लेखकों ने तो गाली को साहित्य का अभिन्न अंग बता दिया। राही मासूम रजा से लेकर काशीनाथ सिंह के उपन्यासों में गालियों की बात कर अपने तर्कों में वजन डालने का प्रयत्न किया गया। अति उत्साह में वैसी रचनाएं खोजी गईं जिनको गालियों के पक्ष में उद्धृत किया जा सके। पर वहां यह नहीं बताया जा सका कि गालियों में प्रयुक्त शब्दावली कैसी थी और उसका किस संदर्भ में प्रयोग किया गया था। चूंकि ये विवाद साहित्यकारों, लेखकों और कुलेखकों के बीच था, इस कारण हमें उन कृतियों पर भी विचार करना चाहिए जिसमें गालियों की भरमार है। विचार तो उस पर भी किया जाना चाहिए कि गालियों का संदर्भ क्या रहा है। किन पात्रों और परिवेश में गालियां दी जाती रही हैं। इस संबंध में राही मासूम रजा के उपन्यास आधा गांव का उदाहरण कई लोगों ने दिया। राही ने अपने उपन्यास आधा गांव में जिन पात्रों के मुंह से गालियां दिलवाई हैं, उनका परिवेश और उन परिस्थितियों को भी देखा जाना चाहिए। उसको देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि गालियों का उपयोग लेखक ने कथा को प्रामाणिक बनाने के लिए किया। किसी को अपमानित करने या उसको नीचा दिखाने के लिए नहीं। कंटेंट का इंटेंट देखना सबसे आवश्यक है।

जिन लेखकों ने अपने उपन्यासों में गालियों को अश्लीलता के साथ प्रस्तुत किया, उन पर भी विचार किया जाना चाहिए। हिंदी में एक उपन्यासकार हुए कृष्ण बलदेव वैद। उनका एक उपन्यास है बिमल उर्फ जाएं तो जाएं कहां। इस उपन्यास में अश्लीलता की पराकाष्ठा है। उनकी यह कृति जब प्रकाशित होकर आई थी तो उसकी भाषा को लेकर, स्थितियों के चित्रण में अश्लीलता को लेकर चर्चा हुई थी। आमतौर पर इस तरह की कृतियों के साथ जो होता है, वही उनके इस उपन्यास के साथ भी हुआ। इसकी चर्चा कम होती चली गई। अब तो गाहे बगाहे ही इस उपन्यास का नाम सुनाई देता है। वैद का एक और उपन्यास है- उसका बचपन। इस कृति को संवेदनशील बचपन की आंख से देखी गई एक बड़ी दुनिया की कथा कहा गया। इसकी भाषा भी अश्लील ही थी। प्रकाशन के बाद इसकी चर्चा हुई, लेकिन धीरे-धीरे चर्चा तो खत्म हुई ही, यह कृति पाठकों की दृष्टि से ओझल भी हो गई। कहना न होगा कि कंटेंट का इंटेंट बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। वैद ने कभी कहा था कि ये हिंदी साहित्य में उनके खिलाफ साजिश है। उनको यह भी विचार करना चाहिए था कि किस कारण से उनके उपन्यास फौरी तौर पर चर्चित होते थे और फिर नेपथ्य में चले जाते थे। दूसरी तरफ निर्मल वर्मा हैं जो उनके ही समकालीन थे। उनके उपन्यासों में भी ऐसी परिस्थितियां बनती थीं कि वो अश्लील हो सकते थे। गालियों और स्त्री देह का वर्णन कर सकते थे। उन्होंने अपने भाषा कौशल से उन स्थितियों को अश्लील होने से बचाया। याद पड़ता है उनका एक उपन्यास लाल टीन की छत। इस उपन्यास में निर्मल ने अपने पात्र काया के माध्यम से कथा को आगे बढ़ाया है। काया इस उपन्यास में बचपन और किशोरावस्था के संधिकाल में थी। यहां भी देह के यथार्थ से पात्र का मुठभेड़ होता है। लेखक बेहद संवेदनशील तरीके से उसका बगैर अश्लील हुए पात्र की मनःस्थिति का सफलतापूर्वक चित्रण कर ले जाते हैं। यह उपन्यास भी खूब चर्चित हुआ। अब भी यह हिंदी के पाठकों के साथ साथ गैर-हिंदी पाठकों को अपने शिल्प और भाषाई सौष्ठव के कारण लुभाता है। कंटेंट का इंटेंट साफ है।

कई लोगों ने प्रेमचंद और अमृतलाल नागर के उपन्यासों का नाम लेकर भी गालियों को या अश्लीलता के सार्वजनिक प्रदर्शन को उचित ठहराने का प्रयत्न किया। ऐसे लोगों की हालत भी वैद साहब जैसी होकर रह गई। चर्चा तो मिली, लेकिन तर्कों को स्थायित्व नहीं। इंटरनेट मीडिया के जमाने में किसको स्थायित्व की चिंता है। हो भी क्यों? यहां तो तुरंत प्रसिद्धि के फेर में लोग साहित्यकार बने फिरते हैं। किसी भी चर्चा में छूट न जाएं, इसलिए उलजलूल लिखकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते हैं। उपन्यासकारों के बाद अशोक वाजपेयी की बात कर लेते हैं। आयोजनधर्मी होने के बावजूद आज भी अशोक वाजपेयी को कवि के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। रतिक्रीड़ा की कविताएं लिखने वाले अशोक वाजपेयी को देह और गेह का कवि ही माना गया। उनकी तुलना में कुंवर नारायण और केदारनाथ सिंह न केवल कवि के रूप में स्थापित हुए, बल्कि कविताओं में वैचारिकी और सिद्धांत के कारण हिंदी साहित्य समाज में समादृत भी हुए। कुंवर की कविता है- अबकी बार लौटा तो। उसकी कुछ पंक्तियां हैं- अबकी बार लौटा तो/ वृहतर लौटूंगा। अबकी बार लौटूंगा तो मनुष्यतर लौटूंगा। अबकी बार लौटा तो/ हताहत नहीं/ सबके हिताहित को सोचता/ पूर्णतर लौटूंगा।

इन पंक्तियों में भारत है। भारत का दर्शन है। अशोक वाजपेयी की तरह पाश्चात्य पांडित्य को भारतीय परिवेश में ढालने की फूहड़ कोशिश नहीं। केदारनाथ सिंह की कविता है- घास। इस कविता की आखिरी पंक्ति है कभी भी.../ कहीं से उग आने की/ एक जिद है वह। इस तरह की कई पंक्तियां पाठकों को याद हैं। अशोक वाजपेयी की शायद ही कोई ऐसी कविता हो जो पाठकों को या काव्य रसिकों को याद हो। यह है कंटेंट का इंटेंट। इंटेंट अगर फौरी चर्चा है तो वो तो गालियों से मिल सकती है, लेकिन कालजयी नहीं हो सकते।

कुछ लोगों ने विवाहोत्सव में बारातियों के स्वागत में गाई जानेवाली गालियों और नकटौरा के संवादों में अश्लीलता की बात की। दोनों बातें सही हैं। गालियां दी जाती हैं, लेकिन उसका अपना एक सौंदर्यशास्त्र है। विवाहोत्सव के दौरान गाई जानेवाली गालियां शारदा सिन्हा ने खूब गाईं। बिहार में उसको गारी कहते हैं। उसको सुनकर कभी भी उबकाई नहीं आई। विवाहोत्सव और नकटौरा की गालियों में एक रस होता है। वैसा रस जो शब्दों में घुलकर सुननेवाले को आनंद देता है। नकटौरा तो बिल्कुल ही निजी आयोजन होता है। इसके मनोविज्ञान को समझना चाहिए। ये महिलाओं को अपनी बात, अपनी भावनाएं सामने रखने का एक निजी मंच है। इसलिए जंतर मंतर पर दी गई गालियों का गारी और नकटौरा से तुलना हास्यास्पद है। जो अंतर सेंसुअलिटी और सेक्सुअलिटी में है, वही जंतर मंतर की गालियों और गारी में है। गालियों को लेकर फेसबुक आदि पर लिखी टिप्पणियों से कई लेखकनुमा जीवों का अज्ञान सामने आ गया।

खरी खरी

लोकतंत्र में सिस्टम की कथा

सूर्यदीप कुशवाहा

हमारे देश में लोकतंत्र एक ऐसी सुंदर व्यवस्था है, जहां जनता जनार्दन होती है, लेकिन पांच साल में केवल एक दिन के लिए। उस एक दिन जनता की उंगली पर जो स्याही लगती है, वह असल में इस बात का प्रमाण पत्र होती है कि बधाई हो, अब आप अगले पांच साल अपनी याददाश्त और आवाज खोने के लिए अधिकृत हो चुके हैं। चुनाव खत्म होते ही जनता जन बन जाती है और नेता माननीय हो जाते हैं।

वस्तुतः लोकतंत्र का सबसे खूबसूरत हिस्सा है- हमारा सिस्टम। यह सिस्टम बहुत रहस्यमयी है। यह कभी दिखता नहीं, लेकिन हर जगह मौजूद रहता है। जब सड़क पर गड्ढा हो, तो सिस्टम सोया रहता है। जब दफ्तर में फाइल आगे बढ़ानी हो, तो सिस्टम को रिश्वत की जरूरत होती है। और जब कोई आम आदमी अपने अधिकारों के लिए चिल्लाता है, तो सिस्टम अचानक कानून और व्यवस्था का चश्मा पहनकर पूरी तरह से एक्टिव हो जाता है। हमारे सिस्टम की सबसे बड़ी खूबी यही है कि यह दोषी को तब तक ढूंढता है, जब तक कि वह खुद टायर न हो जाए।

हमारा देश अद्भुत है। हाइवे बनते हैं, एक्सप्रेस वे बनते हैं, लेकिन कुछ माह के अंदर भी उनमें दरारें पड़ने लगती हैं। सड़कों के टूटने की खबरें आने लगती हैं। विडंबना यह कि उसे बनाने वाली एजेंसी और उसमें शामिल रहे किसी भी अधिकारी की कोई जवाबदेही नहीं तय होती। किसी को कोई सजा नहीं होती। यह भी हमारे सिस्टम की बड़ी खामी है।

आज के लोकतंत्र में भाषण और राशन का अद्भुत मेल है। नेता जी मंच पर खड़े होकर विश्वगुरु बनने का ऐसा सपना बेचते हैं कि सामने बैठा भूखा आदमी भी ताली बजाते-बजाते भूल जाता है कि उसके घर में शाम को चूल्हा जलेगा या नहीं। मंच से गिरा हर एक शब्द गरीब की थाली में सीधे गिरता है, बशर्ते थाली खाली हो। विपक्ष का काम है सरकार को गिराना और सरकार का काम है खुद को बचाना। इस गिराने और बचाने के खेल में जो नीचे दबकर मर जाता है, उसे हम आम आदमी कहते हैं।

हमारे सरकारी दफ्तर इस सिस्टम की रीढ़ की हड्डी हैं। यहां की फाइलें इतनी वफादार होती हैं कि अपनी जगह से तब तक नहीं हिलतीं, जब तक उनके नीचे गांधी जी की तस्वीर वाले नोटों का पहिया न लगाया जाए। यहां खिड़की नंबर एक पर बैठा बाबू आपको खिड़की नंबर चार पर भेजेगा, और चार वाला कहेगा कि साहब लंच पर गए हैं। यह लंच टाइम भारतीय लोकतंत्र का सबसे शाश्वत और अमर समय है, जो कभी खत्म नहीं होता।

प्रेस या फिर कहें कि मीडिया, जिसे लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता था, अब एक आलीशान रिसार्ट का खंभा बन चुका है। टीवी स्टूडियो में बैठे एंकर इस तरह चिल्लाते हैं मानो देश की सीमा पर खड़े होकर अकेले युद्ध लड़ रहे हों। बेरोजगारी, महंगाई और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर बहस करने के बजाय, वे इस बात पर रिसर्च करते हैं कि किस नेता ने सुबह नाश्ते में क्या खाया या फलाने माननीय ने क्या पहना है?

अंत में, इस लोकतंत्र का सबसे बड़ा स्तंभ खुद आम जनता है। वह हर मार सहती है, टैक्स भरती है, महंगाई का रोना रोती है, लेकिन जब बदलाव का वक्त आता है, तो वह जाति, धर्म और मुफ्त की रेवड़ियों के नाम पर फिर से उसी सिस्टम को चुन लेती है जो उसकी पीठ पर कोड़े बरसा रहा था। लोकतंत्र एक ऐसा सर्कस बन चुका है, जहां जोकर वीआइपी लाउंज में बैठते हैं और शेर पिंजरे में बंद होकर तालियां बजाता है। लोकतंत्र अमर है, क्योंकि हम इसे मरने नहीं देते हैं।

(लेखक व्यंग्यकार हैं)

पोस्ट

अभिजीत दीपके का कहना है कि सीजेपी कोई राजनीतिक दल नहीं, बल्कि एक राजनीतिक दबाव समूह है। उसके आंदोलन ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री को इस्तीफा देने पर मजबूर कर दिया। कल को ये किसी और मंत्री का इस्तीफा मांग सकते हैं। मेरा सवाल इतना ही है कि हमारे लोकतंत्र एवं संविधान में ऐसे राजनीतिक दबाव समूहों की क्या भूमिका है?
वेद प्रकाश मलिक@Vedmalik1

चैनलों के नामी-गिरामी एंकर्स का बहिष्कार करके और मीडिया को अनाप-शनाप उपाधियां देकर प्रोटेस्ट में आए बच्चों से रिपोर्टर्स पिटवा दिए गए। आज उन्हीं मीडिया चैनलों पर वे बड़े एंकर्स को इंटरव्यू दे रहे हैं।
कमलेश सिंह@kkstau

यह बात समझना बेहद महत्वपूर्ण है कि नई पीढ़ी भले ही सूचनाओं को संक्षिप्त रूप में ग्रहण करने या उनका सार समझने को प्राथमिकता देती हो, लेकिन इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं कि वे समग्र परिदृश्य या मुद्दे की बारीकियों पर ध्यान नहीं देती या उनसे अपरिचित है। उन्हें पूरी तरह खारिज कर देना बड़ी नासमझी होगी।
कार्ति पी. चिदंबरम@KartiPC

पैसे देकर भाड़े के कार्यकर्ता तो खड़े किए जा सकते हैं, लेकिन जनता का भरोसा नहीं जीता जा सकता।
डा. स्वदेश सिंह@swadesh171

रचनाकर्म

मंजिल का पता कदमों के निशां

ब्रजबिहारी

त्याग में ही सार है, परमार्थ ही आधार है, जिसने न समझा यह मर्म, उसका विफल संसार है... राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियां सफल एवं सार्थक भारतीय जीवन दर्शन का निचोड़ हैं। सनातन के इस शाश्वत दर्शन को वेद से लेकर आज तक अलग-अलग कवियों, लेखकों ने समझा और लिखा है। कारपोरेट सलाहकार और सामाजिक उद्यमी अजय सिंह 'एकल' ने अपनी सद्य प्रकाशित रचना 'सफलता : सार्थक जीवन की यात्रा' के माध्यम से इस बहुचर्चित विषय को समझने और समझाने का प्रयास किया है।

सफलता पर बहुपठित पुस्तकों की बात की जाए तो आधुनिक काल में लोकप्रियता के लिहाज से पिछली सदी में अमेरिकी लेखक स्वेट मार्डन और डेल कार्नेगी से लेकर इस सदी में जेम्स क्लियर की सार्वकालिक बेस्टसेलर 'एटामिक हैबिट्स' तक के उदाहरण मौजूद हैं। भारत में शिव खेड़ा की भी ऐसे लेखन में काफी ख्याति है। अजय सिंह 'एकल' की यह पुस्तक कितनी लोकप्रिय होगी, यह तो पाठकों की प्रतिक्रिया बताएगी, लेकिन वे उपरोक्त सभी लेखकों से इस मामले में अलग है कि उनकी भाषा और लेखन शैली अनूठी है। सटीक विश्लेषण, लगभग गणितीय फार्मूले की तरह। एक-दो पंक्तियों के पैराग्राफ और अंग्रेजी के शब्दों की भरमार, ऐसा लगता है जैसे लेखक ने जेन जी को ध्यान में रखकर यह पुस्तक लिखी है। इसका एक उदाहरण इस प्रकार है :

एनालिसिस पैरालिसिस... कभी-कभी हम इतना एनलाइज करते हैं, इतना प्लान करते हैं, कि एक्चुअली स्टार्ट नहीं करते। परफेक्ट प्लान की तलाश में स्टक हो जाते हैं। लेकिन परफेक्ट प्लान कभी नहीं होता। आपको इम्पर्फेक्ट प्लान के साथ स्टार्ट करना पड़ता है। एज यू गो, आप एडजस्ट करते हैं... 'रेडी, फायर, एम' मेंटालिटि कभी-कभी जरूरी है। (आब्वियसलि बहुत ब्लेटेंटलि रेकलेस मत होइए। बेसिक प्लानिंग तो करें। बट ओवरथिंकिंग से बचें)।

सफलता की पारंपरिक परिभाषा को चुनौती देने का दावा करने वाली यह पुस्तक एक व्यापक मार्गदर्शिका की तरह है। इसमें सफलता के तीन आयाम बताए गए हैं- भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक। लेखक ने इसके 30 अध्यायों में शिक्षा, करियर, वित्तीय स्वतंत्रता, स्वास्थ्य, समय प्रबंधन, सामाजिक सेवा, आत्मचिंतन और आध्यात्मिक विकास जैसे महत्वपूर्ण विषयों को संबोधित किया है।

यह पुस्तक जीवन में सफलता की पारंपरिक परिभाषा को अपने विश्लेषण के माध्यम से चुनौती देने का प्रयास करती है, जिसकी भाषा और लेखनशैली अनूठी है। पुस्तक बताती है भौतिक सफलता मंजिल नहीं, बल्कि रास्ता है...

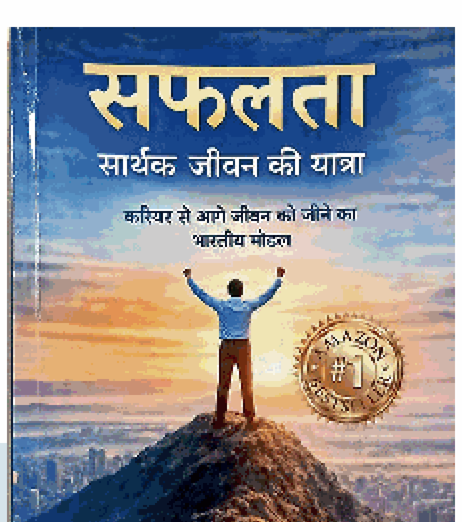

पुस्तक : सफलता : सार्थक जीवन की यात्रा
लेखक : अजय सिंह 'एकल'
प्रकाशक : अध्ययन बुक्स
मूल्य : 399 रुपये

भगवद्गीता के सिद्धांतों, आधुनिक मनोविज्ञान, प्रेरक कहानियों और व्यावहारिक सुझावों के साथ यह पुस्तक पाठकों को केवल सफल ही नहीं, सार्थक और संतुलित जीवन जीने का रास्ता दिखाती है। लेखक आगाह करता है कि भौतिक सफलता मंजिल नहीं रास्ता है। मंजिल है जीवन की सार्थकता।

इस पुस्तक में कई लेखकों को बहुतायत में उद्धृत किया गया है, लेकिन इस मामले में एकरूपता नहीं बरती गई है। जानकार पाठक पूछ सकता है कि अगर लेखक ने इस पुस्तक में उद्धृत कविता जिस-जिस से पथ पर स्नेह मिला, उस-उस राही को धन्यवाद... में शिवमंगल सिंह सुमन को क्रेडिट दिया है तो फिर लहर ने समुंदर से उसकी उम्र पूछी, समुंदर मुस्करा दिया... के साथ कवि अशोक चक्रधर का नाम क्यों नहीं लिखा गया है।

पुस्तक की भाषा और शैली अनूठी है, लेकिन कुछ सामान्य शब्दों की वर्तनी की त्रुटियां काफी खटने वाली हैं, जैसे- व्यवहारिक (व्यावहारिक), अध्ययतिमिकता (आध्यात्मिकता)। सामान्य व्याकरण का भी ध्यान नहीं रखा गया है। दो वाक्यों को जोड़ने के लिए 'कि' के स्थान पर कारक चिह्न 'की'।

आत्ममंथन की प्रेरणा

आकांक्षा अवस्थी

जीवन में दुख क्यों है? क्या दुख से मुक्ति संभव है? क्या विवेक, ध्यान और आत्मचिंतन के माध्यम से मनुष्य अपने जीवन को अधिक सार्थक और आनंदमय बना सकता है? ऐसे अनेक प्रश्नों के उत्तर खोजने का गंभीर प्रयास अय्यूब खान की पुस्तक 'दुख से आनंद की ओर' करती है। यह पुस्तक केवल आध्यात्मिक विमर्श नहीं, जीवन-दर्शन, आत्मविश्लेषण और व्यावहारिक अनुभवों का संतुलित संगम है।

लेखक ने अपने अनुभवों, संवेदनाओं और अध्ययन को अत्यंत सरल एवं प्रभावशाली भाषा में पुस्तक में प्रस्तुत किया है। पुस्तक का केंद्र बिंदु यह है कि मनुष्य के अधिकांश दुख बाहरी परिस्थितियों से अधिक उसके अविवेक, अचेतन जीवन और गलत निर्णयों से उत्पन्न होते हैं। लेखक बार-बार इस बात पर बल देते हैं कि यदि व्यक्ति अपने भीतर विवेक, सजगता और चेतना का विकास कर ले, तो वही परिस्थितियां जो पहले दुख का कारण थीं, जीवन की सीख बन सकती हैं।

लेखक ने विनम्रता, सकारात्मक ऊर्जा, पारिवारिक संबंध, बच्चों के संस्कार, सामाजिक व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य जैसे अनेक विषयों को सहज भाषा में बताया है। हालांकि पुस्तक में ओशो के विचारों और उनके आध्यात्मिक दृष्टिकोण को प्रमुखता दी गई है, किंतु पुस्तक का उद्देश्य किसी मत या विचारधारा का प्रचार नहीं, बल्कि आत्ममंथन के लिए प्रेरित करना है। भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और संवादात्मक है। लेखक ने जटिल दार्शनिक विषयों को भी सामान्य समझ के अनुरूप प्रस्तुत किया है। प्रत्येक अध्याय पाठक को स्वयं से प्रश्न पूछने और जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित करता है। जो पाठक आत्मविकास, मानसिक संतुलन, ध्यान, सकारात्मक सोच और जीवन के गहरे प्रश्नों पर विचार करना चाहते हैं, उनके लिए यह पुस्तक निश्चित रूप से उपयोगी सिद्ध होगी।

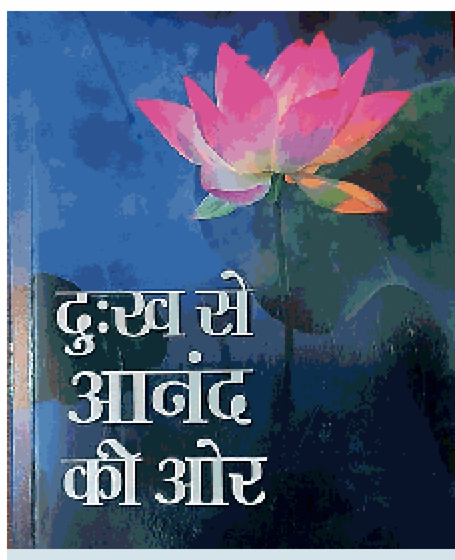

पुस्तक : दुख से आनंद की ओर
लेखक : अय्यूब खान
प्रकाशक : डायमंड बुक्स
मूल्य : 250 रुपये

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या दिल्ली दंगों के दोषियों के लिए उम्रकैद की सजा पर्याप्त है?

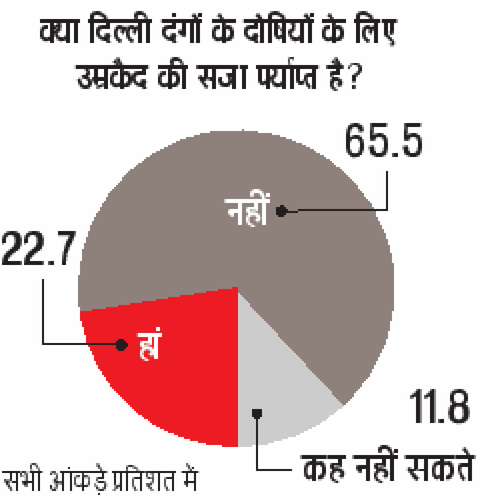

सभी आंकड़े प्रतिशत में

आज का सवाल

क्या चढ़ावा चोरी पर संसद परिसर में विपक्षी नेताओं का कृत्य हिंदुओं की भावनाओं को आहत करने वाला रहा?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है

जनपथ

भाई राहुल सीखते वामपंथ के सूत्र,
बहन प्रियंका के लिए जोक बना गोमूत्र।
जोक बना गोमूत्र अजब है इनकी टोली,
मरवाए गोभक्त चली दादी की गोली!
हो सत्ता से दूर कांग्रेस है खिसियाई,
गोभक्तों पर तंज कसें बहना अरु भाई!!
-ओम प्रकाश तिवारी

लोकप्रिय अभिनेता के जीवन के उतार-चढ़ाव

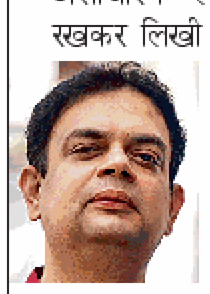
यतीन्द्र मिश्र

मोहर बसु की 'सलमान खान : द सुल्तान आफ बालीवुड' हिंदी सिनेमा के सबसे चर्चित अभिनेताओं में से एक के फिल्मी सफर, सार्वजनिक छवि और असाधारण लोकप्रियता को केंद्र में रखकर लिखी गई जीवनी है। यह उस स्टारडम की पड़ताल करती है, जिसने तीन दशक से अधिक समय तक सलमान खान को सिनेमा के प्रभावशाली चेहरों में बनाए रखा। मोहर बसु के अनुसार, सलमान खान के व्यक्तित्व की जड़ें उनके पिता सलीम खान के संघर्ष, ईमानदारी और जीवन-मूल्यों में निहित हैं, इसलिए जीवनी का आरंभ भी उन्हीं से होता है। 27 दिसंबर, 1965 को इंदौर में जन्मे सलमान ने पिता के संघर्ष और सफलता को करीब से देखा, जिसने उनके व्यक्तित्व को गहराई से आकार दिया। फिल्मों में सलमान का सफर कैमरे के पीछे 'फलक' में सहायक निर्देशक के रूप में शुरू हुआ। 'बीवी हो तो ऐसी' से अभिनय की शुरुआत के बाद सूरज बड़जात्या की 'मैंने प्यार किया' ने उन्हें स्टार बना दिया।

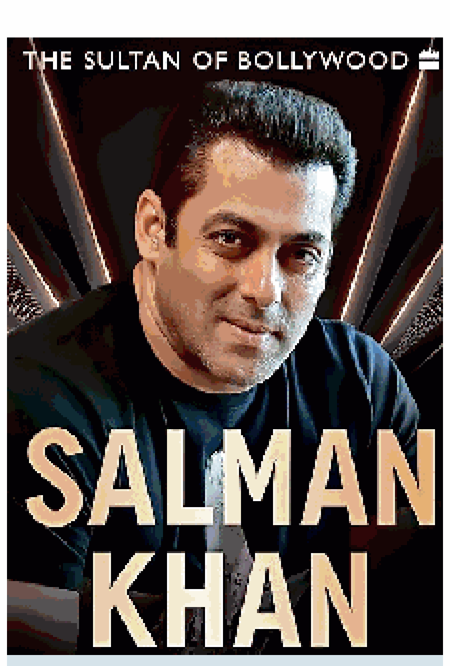

पुस्तक : सलमान खान : द सुल्तान आफ बालीवुड
लेखक: मोहर बसु
प्रकाशक : हार्परकोलिंस पब्लिशर्स
मूल्य : 799 रुपये

जीवनी में सलमान खान के रोमांटिक नायक से एक्शन स्टार तक के सफर को उनके चर्चित किरदारों, सहयोगियों के अनुभवों, प्रशंसक-साक्षात्कारों और दुर्लभ तस्वीरों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। लेखिका ने उनके करियर को फिल्मों की सफलता से आगे बढ़कर सार्वजनिक छवि, दर्शकों से जुड़ाव, विवादों, उपलब्धियों और बदलती परिस्थितियों के साथ स्वयं को ढालने की क्षमता के संदर्भ में देखा है। इस क्रम में उनके करियर के विवादास्पद अध्यायों का उल्लेख भी मिलता है। सलमान ने अपने अभिनय को लेकर कभी किसी विशेष दावे या अतिरंजित छवि का सहारा नहीं लिया; उनकी सहज शैली, स्क्रीन प्रेजेंस और दर्शकों से जुड़ाव उनकी सबसे बड़ी ताकत रहे। 'तेरे नाम' के राधे, 'दबंग' के चुलबुल पांडे, 'एक था टाइगर' के टाइगर, 'बजरंगी भाईजान' के पवन जैसे किरदारों ने उन्हें अलग-अलग पीढ़ियों के दर्शकों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सलमान खान हिंदी सिनेमा में लोकप्रियता और बाजार, दोनों के समीकरणों को लंबे समय से प्रभावित करते रहे हैं। आलोचनाओं के बावजूद दर्शकों के बीच उनकी स्वीकार्यता बनी हुई है और उनकी फिल्में मनोरंजन के साझा अनुभव के रूप में लगातार जुड़ाव बनाए रखती हैं।

बदलते समय की संवेदनाओं का कथा-संसार

'कथाकहन' कहानी कहने और लिखने की कला को समझने, संवारने और आगे बढ़ाने की रचनात्मक पहल है, जिसने छह वर्षों में अनेक नए स्वरों को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान किया है। संवाद, विमर्श, पाठ और आत्ममंथन की प्रक्रिया से यहां नवोदित और अनुभवी रचनाकार लेखन की बारीकियों को समझते हुए अपनी सृजनात्मक दृष्टि को नए आयाम देते हैं। इस साहित्यिक यात्रा में जन्मी 17 उल्लेखनीय कहानियों को प्रतिष्ठित कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ ने 'सीपियां' शीर्षक से संपादित किया है। अपने सजग संपादकीय चयन से उन्होंने संकलन में समकालीन हिंदी कहानी की बहुआयामी संवेदनाओं का प्रतिनिधि परिदृश्य प्रस्तुत किया है, जहां विषय, शिल्प और भाषा तीनों स्तरों पर कथालेखन की नई संभावनाएं उभरती हैं। पहली कहानी गजाल जैगम की 'अल अतश-अल अतश' अहमद और शालिनी के प्रेम, विरह तथा प्रवासी जीवन की त्रासदी को मार्मिकता से प्रस्तुत करती है।

प्रस्तुत संकलन में मनीषा कुलश्रेष्ठ ने उन रचनाओं को प्राथमिकता दी है जिनमें अपने समय के बदलते सामाजिक परिदृश्य, मानवीय संबंधों के नए तनाव, मूल्य-संकट और जीवन की विडंबनाओं को देखने की सजग दृष्टि मौजूद है। सरिता निर्झरा की 'गहना' प्रेम और वंचना के परिचित विषय को अपनी मार्मिक संवेदना और जीवंत शिल्प से विशिष्ट बनाती है, जहां डाकबाबू और चिट्ठियों का थैला कहानी को मानवीय विस्तार देते हैं। श्रद्धा आढ़ा की 'एक बिरहन की बात' पश्चिमी राजस्थान के लोकजीवन, स्मृतियों और पारंपरिक परिवेश से उपजी मार्मिक कथा है। डा. ज्योत्सना मिश्रा की 'रेनबो' के रघु और किरण हमारी स्मृति में स्थाई छाप छोड़ते हैं। एक अन्य कहानी पल्लवी गर्ग की 'मिन्नी का ढाबा' बदलते समय और सामाजिक सरोकारों की कहानी है, जहां जेंडर, स्वतंत्रता और पहचान के प्रश्नों के बीच वर्ग-विभेद से ऊपर उठती मानवीयता को स्वर मिलता है। वहीं, देवकन्या ठाकुर की 'भोजन माता' हिमाचल के अंचल जीवन की संवेदनाओं के साथ जातिगत भेदभाव की विडंबना को मार्मिकता से उद्घाटित करती है। 'ठप्पा', 'पल दो पल का साथ', 'नई जमींदारी', 'ये एक कुएं की मौत नहीं है!', 'कनफेशन', 'तीसरी उम्र' जैसी विभिन्न रचनाकारों की कहानियां अपनी-अपनी भाषिक पहचान और स्वतंत्र संवेदना के साथ पूरे संग्रह में एक विशिष्ट साहित्यिक लय रचती हैं। नई रचनाशीलता और संवेदना से लबरेज पठनीय संकलन।

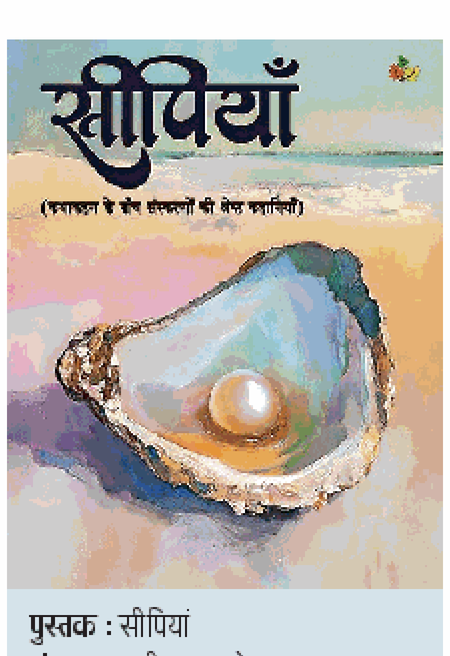

पुस्तक : सीपियां
संपादन : मनीषा कुलश्रेष्ठ
प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सीहोर
मूल्य : 350 रुपये

जुलाई में यूपीआइ से 29.9 लाख करोड़ रुपये के लेनदेन

नई दिल्ली: नेशनल पेमेंट्स कारपोरेशन आफ इंडिया (एनपीसीआइ) ने शनिवार को बताया कि लोकप्रिय यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआइ) के जरिये रिकार्ड 29.9 लाख करोड़ रुपये के लेनदेन हुए हैं। इसमें जुलाई 2025 के 25.08 लाख करोड़ रुपये की तुलना में 19 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। संख्या के लिहाज से पिछले महीने यूपीआइ लेनदेन 23.66 अरब रहे हैं, जो इसी वर्ष जून में 22.72 अरब और मई में 23.2 अरब थे। (प्रेट्र)

व्यापार और टिकाऊ विकास एक मुद्दा है जो कई क्षेत्रों से जुड़ा है। इसके लिए व्यापार, उद्योग, स्थिरता और प्रतिस्पर्धात्मकता को शामिल करते हुए एकीकृत दृष्टिकोण अपनाना होगा।
– राजेश अग्रवाल, वाणिज्य सचिव

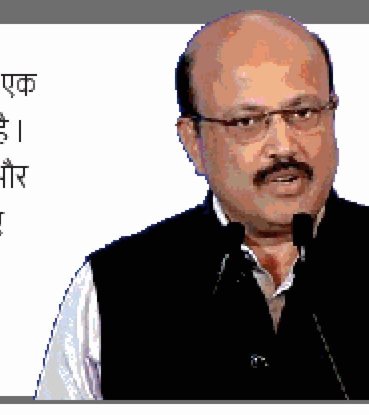

कम उम्र में स्वास्थ्य बीमा लेने के हैं कई फायदे

आजकल की लाइफस्टाइल ने बीमारियों का गणित बदल दिया है। जो बीमारियां पहले 50-60 वर्ष की उम्र में होती थीं, वे अब 25-30 साल के युवाओं को अपनी चपेट में ले रही हैं। इसके साथ ही अस्पताल में भर्ती होने भी काफी महंगा हो गया है। ऐसे में जल्द से जल्द स्वास्थ्य बीमा लेना काफी फायदेमंद है। विशेषज्ञों का मानना है कि जितनी कम उम्र स्वास्थ्य बीमा ले लिया जाता है, उसके उतने ही फायदे होते हैं। **मनोज कुमार** बता रहे हैं कम उम्र में स्वास्थ्य बीमा लेने के फायदे...

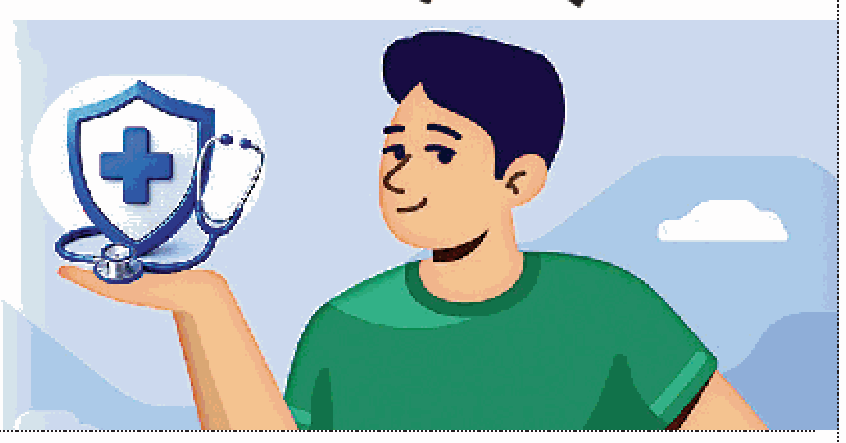

कम उम्र मतलब कम प्रीमियम

स्वास्थ्य बीमा की दुनिया का एक सीधा सा नियम है: जितनी कम उम्र, उतना कम प्रीमियम। जब आप 20 या 25 की उम्र में पालिसी लेते हैं,

तो बीमा कंपनी आपको 'कम जोखिम' वाली श्रेणी में रखती है। आप स्वस्थ होते हैं, बीमार होने की संभावना कम होती है, इसलिए आपको बहुत कम खर्च में एक बड़ा कवर मिल जाता है। इसके विपरीत, अगर आप 40 की उम्र के बाद बीमा लेते हैं, तो प्रीमियम की राशि काफी बढ़ जाती है। इतना ही नहीं, अगर आपको पहले से कोई बीमारी (जैसे डायबिटीज या बीपी) है, तो कंपनियां आपसे 'लोडिंग चार्ज' के नाम पर अतिरिक्त पैसा वसूलती हैं। यानी, देरी करने का मतलब है ज्यादा पैसा और कम फायदे।

वेटिंग पीरियड

स्वास्थ्य बीमा में सबसे पेचीदा चीज होती है वेटिंग पीरियड। ज्यादातर पालिसियों में पहले से मौजूद बीमारियों के लिए 2 से 4 साल का वेटिंग

पीरियड होता है। अगर आप फिट रहते हुए पालिसी लेते हैं, तो आपका वेटिंग पीरियड आपके स्वस्थ दिनों में ही कट जाता है। जब आपको भविष्य में वाकई इलाज की जरूरत पड़ती है, तब आपकी पालिसी पूरी तरह 'मैच्योर' हो चुकी होती है और आपको एक रुपया भी अपनी जेब से नहीं देना पड़ता। इसके विपरीत अगर आप तब बीमा लेते हैं जब बीमारी दस्तक दे चुकी हो, तो आपको कवर के लिए 3 साल इंतजार करना पड़ सकता है। सोचिए, बीमारी आज है और बीमा 3 साल बाद काम आएगा। ऐसी स्थिति में बीमा का क्या फायदा होगा।

परिवार के सुरक्षित भविष्य की नींव

बीमा होने का सबसे बड़ा मानसिक फायदा यह है कि आप अपनी सेहत को लेकर ज्यादा जागरूक हो जाते हैं। जब

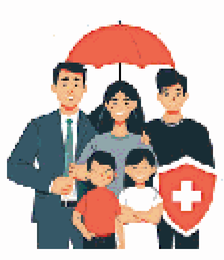

आपको पता होता है कि आपके पास कवर है, तो आप छोटी बीमारियों को नजरअंदाज नहीं करते और समय रहते जांच करवाते हैं। यह व्यवहार आपको बड़ी बीमारियों से बचाता है। बढ़ती महंगाई और अनिश्चित जीवनशैली के इस दौर में स्वास्थ्य बीमा को टालना, अपनी मेहनत की कमाई को जोखिम में डालना है। जल्दी शुरुआत करना सिर्फ समझदारी नहीं, बल्कि आपके परिवार के सुरक्षित भविष्य की नींव है। बीमा तब खरीदा जाना चाहिए जब आपको उसकी जरूरत न हो, क्योंकि जब जरूरत पड़ती है, तब शायद आपको वह मनचाही शर्तों पर न मिले।

अचानक खर्च से बचत

स्वास्थ्य बीमा को अब एक खर्च की तरह नहीं, बल्कि एक वित्तीय संपत्ति की तरह देखा जाना चाहिए। यह आपको अचानक आने वाले लाखों रुपये के खर्च से बचाता है, जिससे आपकी सालों की जमा-पूंजी सुरक्षित रहती है। स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम को जीएसटी के दायरे से बाहर रखकर सरकार ने इसे मध्यम वर्ग के लिए और आसान बना दिया है।

अन्य लाभ

- आज स्वास्थ्य बीमा अस्पताल में इलाज और दवाइयों तक सीमित नहीं है। अगर आप इसे लंबे समय तक बनाए रखते हैं, तो आपको कई अन्य लाभ भी मिलते हैं।

- नो-क्लेम बोनस: अगर आप साल भर क्लेम नहीं लेते तो अगले साल आपका कवर बिना किसी अतिरिक्त प्रीमियम के बढ़ जाता है।

- फ्री हेल्थ चेक-अप: कई कंपनियां हर साल फ्री बाडी चेक-अप की सुविधा देती हैं।

- वेलनेस रिवाड्र्स: फिट रहने, रोज टहलने या जिम जाने पर भी अब कंपनियां प्रीमियम में छूट या रिवार्ड प्वाइंट्स देती हैं।

जागरण इन्फो

मोटरसाइकिल अभी खरीद लीजिए, फरारी इंतजार कर सकती है

हाल में एक पाडकास्ट में साफ्टवेयर उद्यमी डेविड हाइनमायर हैंसन, जिन्हें आमतौर पर डीएचएच कहा जाता है, ने कहा कि जो कोई भी कुछ सार्थक बनाता है और उससे खूब कमाता है। उस पर एक तरह की नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि वह उस रकम का कुछ हिस्सा खूबसूरत चीजों पर खर्च करे। उस दौलत का कुछ हिस्सा इटली भेजे और वहां के कारीगरों से अपने लिए एक फरारी बनवाए। उन्होंने कहा कि अपने जीवन स्तर को बेहतर करने की चाह कोई शर्म की बात नहीं है और अगर दुनिया में कोई भी ऐसी गाड़ी कभी न खरीदे, तो यह सबके लिए एक गरीब दुनिया होगी। उन लाखों लोगों के लिए भी जो इसे सिर्फ सड़क किनारे से निहारते हैं। उनके शब्दों में, हमें खूबसूरत फरारी और दूसरी लक्जरी चीजों की जरूरत है, "भले ही वे हमारी अपनी न हों।"

धीरेंद्र कुमार, संपादक, हिंदी डाट वैल्यूरिसर्चआनलाइन डाट काम

बोनस

हैंसन की बात यहां गौर से सुनने लायक है और इसकी वजह आसानी से नजरअंदाज हो सकती है। वे उन संस्थापकों में से नहीं हैं जिन्होंने कोई कंपनी बनाई, उसे किसी नाटकीय एक्जिट में बेच दिया और अब उनके पास एक ऐसी दौलत है जिसे खर्च करना है। वे करीब दो दशकों से एक ऐसा साफ्टवेयर बिजनेस चला रहे हैं जो मुनाफे में रहा है, स्वतंत्र रहा है और जान-बूझकर 'अनफैशनेबल' बना रहा है। यानी उस तरह का उद्यम जिसे वेंचर कैपिटल जगत तंज के साथ महज एक 'लाइफस्टाइल बिजनेस' कहकर खारिज कर देता है। कभी कंपनी को पब्लिक नहीं किया और उन ऊंची वैल्यूएशन को नजरअंदाज किया जिनके पीछे उनके साथी भागते रहे। फरारी इस पूरी इन्कार की आदत के ऊपर आकर मिली।

उन्हें पढ़ते हुए मुझे कुछ साल पहले लिखा अपना एक कालम याद आया, जो एक ऐसे युवक के बारे में था जिसने अभी-अभी कमाना शुरू किया था और एक ऐसी मोटरसाइकिल के लिए बेचैन था जिसकी कीमत ढाई लाख रुपये थी। सबने उसे सही और सावधानी भरी सलाह दी थी। साथ ही यह हिसाब भी लगाकर बताया था कि इसके लिए उसे कितने समय तक बचत करनी होगी। लेकिन मैंने इसके उलट कहा था कि अगर वह समझदारी से चले तो उसकी उम्र 30 साल हो जाएगी, तब तक जाकर वह गाड़ी खरीद पाएगा और तब तक शायद उसकी चाहत और उसकी खुशी दोनों फीकी पड़ चुकी हों। मैंने उससे कहा, इसे अभी खरीद लो। इस बार नियम को थोड़ा नजरअंदाज कर दो, क्योंकि नियम सिर्फ एक जरिया है, मंजिल नहीं। इसलिए मैं वह स्तंभकार नहीं हूं और कभी नहीं रहा, जो यह जिद करता हो कि अपनी खुशी के लिए हर रुपये के खर्च को किसी सुनहरे भविष्य के लिए टाल दिया जाए। यही बात फरारी की मिसाल को दिलचस्प बनाती है। डीएचएच का संदेश फिजूलखर्ची नहीं, बल्कि उससे पहले के 20 साल के धैर्य और अनुशासन का है, लोग गाड़ी देखते हैं, लेकिन उसे खरीदने वाला अनुशासन नहीं। इसलिए दुनिया इनाम की तारीफ करती है, मेहनत को भूल जाती है।

मोटरसाइकिल वाला युवक और फरारी वाला शख्स एक-दूसरे के उलट नहीं हैं, बल्कि एक ही इंसान के दो पड़ाव हैं। जब खर्च आपकी हैसियत के मुताबिक हो, तो छोटी खुशियां टालनी नहीं चाहिए। लेकिन बड़ा इनाम तभी लेना चाहिए, जब उसे कमाने की बुनियाद तैयार हो जाए। असली गलती वही खर्च है, जो आपकी स्थिति से मेल न खाए।

जुलाई में 15% बढ़ा जीएसटी संग्रह

पिछले माह 2.11 लाख करोड़ रहा संग्रह, जो जुलाई 2025 में 1.83 लाख करोड़ था

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: अर्थव्यवस्था में मजबूती का सिलसिला जारी है। यही कारण है कि जुलाई 2026 में जीएसटी संग्रह से लेकर आटोमोबाइल्स की बिक्री में खासी तेजी दर्ज की गई। पिछले महीने जीएसटी संग्रह 2,11,205 करोड़ रुपये रहा है, जो जुलाई 2025 के 1.83 लाख करोड़ रुपये से 15.4 प्रतिशत अधिक है। चालू वित्त वर्ष 2026-27 के चार माह में दो बार जीएसटी संग्रह दो लाख करोड़ रुपये के पार हो चुका है।

जुलाई के जीएसटी संग्रह में सीजीएसटी की हिस्सेदारी 39,853 करोड़ तो एसजीएसटी की 47,881 करोड़ रुपये रही है। आइजीएसटी का योगदान 1,23,490 करोड़ रुपये का रहा। रिफंड के बाद जुलाई में शुद्ध संग्रह 1,81,237 करोड़ रुपये रहा है, जो पिछले वर्ष के समान महीने से 15.8 प्रतिशत अधिक है। चालू वित्त वर्ष के पहले चार महीनों में कुल जीएसटी संग्रह 8.42 लाख करोड़ रुपये रहा है, जो अप्रैल-जुलाई 2025 से 10 प्रतिशत अधिक है। टैक्स कनेक्ट एडवाइजरी सर्विस के पार्टनर विवेक जालान का कहना है कि जीएसटी संग्रह में लगातार बढ़ोतरी देश की मजबूत आर्थिक स्थिति को दर्शाता है। अच्छी बात यह है कि देश के 36 राज्य व केंद्र शासित प्रदेशों में से 28 में जीएसटी संग्रह में इजाफा हुआ है। इससे साफ है कि देश में टैक्स का दायरा लगातार बढ़ रहा है। जानकारों का कहना है कि पिछले साल सितंबर में रोजमर्रा की सैकड़ों वस्तुओं पर जीएसटी को घटाकर घटाया गया था। इससे संग्रह में तेजी आईहै।

जुलाई में हरियाणा के संग्रह में 25 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश में 15 प्रतिशत, बिहार में नौ प्रतिशत, झारखंड में 16 प्रतिशत, पंजाब में 16 प्रतिशत, दिल्ली में आठ तो गुजरात में 19 प्रतिशत की तेजी आई है। इसके उलट, हिमाचल प्रदेश के संग्रह में 22 प्रतिशत, उत्तराखंड में 18 प्रतिशत, मध्य प्रदेश में 10 प्रतिशत की गिरावट आई है।

- रिफंड के बाद 1.81 लाख करोड़ रुपये रहा शुद्ध कर संग्रह
- पहले चार महीनों में संग्रह 8.42 लाख करोड़ रुपये रहा

यात्री वाहन बिक्री 33% बढ़ी

पिछले महीने देश में यात्री वाहनों की बिक्री में 33 प्रतिशत की वृद्धि रही है। सबसे बड़ी कार कंपनी मारुति सुजुकी के वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक जुलाई में घरेलू स्तर पर 4.65 से 4.7 लाख यात्री वाहनों की बिक्री होने के अनुमान है। मारुति ने पिछले महीने 1,96,203 यात्री वाहनों की बिक्री की, जो जुलाई 2025 के मुकाबले 43.4 प्रतिशत अधिक है। हुंडई की बिक्री 23.3 प्रतिशत बढ़कर 54,210 इकाई रही है।

31 जुलाई 5.9 करोड़ आइटीआर दाखिल हुए

नई दिल्ली, प्रेट्र: आयकर विभाग ने शनिवार को बताया कि आकलन वर्ष 2026-27 के लिए 31 जुलाई तक 5.9 करोड़ से अधिक आयकर रिटर्न (आइटीआर) दाखिल किए गए हैं। आइटीआर फार्म-1 और 2 के जरिये रिटर्न दाखिल करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई थी।

एक नजर में

वाणिज्यिक गैस सिलिंडर का मूल्य 192 रुपये घटा

नई दिल्ली: तेल विपणन कंपनियों ने होटल और रेस्त्रां में इस्तेमाल होने वाली वाणिज्यिक गैस सिलिंडर के मूल्य में 192 रुपये की कटौती की है। अब दिल्ली में 19 किलोग्राम वाले गैस सिलिंडर का मूल्य घटकर 2,738 रुपये हो गया है। वहीं, विमान ईंधन का मूल्य दिल्ली में पांच रुपये बढ़कर 115 रुपये प्रति लीटर हो गया है। (प्रेट्र)

राज्यों के लिए 1.09 लाख करोड़ रुपये की किस्त जारी

नई दिल्ली: वित्त मंत्रालय ने शनिवार को कहा कि केंद्र ने राज्य सरकारों को टैक्स के हिस्से के तौर पर 1.09 लाख करोड़ रुपये की अतिरिक्त किस्त जारी की है। यह सामान्य मासिक राशि के अलावा है। अभी, केंद्र द्वारा एकत्र किए गए टैक्स का 41 प्रतिशत हिस्सा एक वित्त वर्ष के दौरान 14 किस्तों में राज्यों को दिया जाता है। सामान्य मासिक किस्त 10 अगस्त 2026 को जारी होगी। (प्रेट्र)

विदेशी मुद्रा स्वैप सुविधा के तहत 40.82 अरब डालर जुटाए गए

मुंबई, प्रेट्र: आरबीआइ ने शनिवार को बताया कि विदेशी मुद्रा प्रवाह को प्रोत्साहित करने के लिए शुरू की गई रियायती स्वैप सुविधा के तहत 31 जुलाई तक 40.82 अरब डालर की राशि जुटाई जा चुकी है। यह स्वैप सुविधा आठ जून, 2026 को लागू की गई थी।

केंद्रीय बैंक के अनुसार, विदेशी मुद्रा गैर-निवासी (बैंक) या एफसीएनआर (बी) जमा को मजबूत प्रतिक्रिया मिल रही है। 31 जुलाई तक कुल प्रवाह में एफसीएनआर (बी) जमा का हिस्सा 36.725 अरब डालर रहा है। वहीं, विदेश से विदेशी मुद्रा में उधारी (ओएफसीबी) ने 2.575 अरब डालर और बाहरी वाणिज्यिक उधारी (ईसीबी) ने ने 1.516 अरब डालर का योगदान दिया है। आरबीआइ ने विदेशी मुद्रा जुटाने के उद्देश्य से पांच जून को नए एफसीएनआर (बी) जमा, ओएफसीबी और ईसीबी प्रवाह के लिए रियायती स्वैप सहित कई उपायों की घोषणा की थी।

राष्ट्रीय फलक

ईपीएफओ निवेश घोटाले में अनिल अंबानी के खिलाफ सीबीआइ की एफआइआर

- ईपीएफओ के 2,500 करोड़ के निवेश में अनियमितता, 1,816 करोड़ से अधिक के नुकसान का आरोप
- अनिल अंबानी के प्रवक्ता ने आरोपों से किया इन्कार, कहा- कानून के तहत सभी अधिकार सुरक्षित

नई दिल्ली, एएनआइ: सीबीआइ ने कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) के 2,500 करोड़ रुपये के निवेश से जुड़े कथित धोखाधड़ी मामले में रिलायंस कैपिटल लिमिटेड के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की है। इस मामले में कंपनी के तत्कालीन गैर-कार्यकारी अध्यक्ष अनिल अंबानी, अज्ञात सरकारी अधिकारियों और अन्य अज्ञात व्यक्तियों को भी आरोपित बनाया गया है।

सीबीआइ ने 31 जुलाई को ईपीएफओ की शिकायत के आधार पर मामला दर्ज किया। शिकायत में आरोप है कि कथित साजिश, धोखाधड़ी, आपराधिक विश्वासघात और धन के दुरुपयोग के जरिए रिलायंस कैपिटल को 1,007.55 करोड़ रुपये का अनुचित लाभ पहुंचाया गया, जबकि 808.67 करोड़ रुपये की ब्याज देनदारी भी पैदा हुई। इससे ईपीएफओ को कुल 1,816.22 करोड़ रुपये का नुकसान होने का दावा किया गया है। जांच एजेंसी के अनुसार, वर्ष 2013 और 2014 में रिलायंस कैपिटल ने सुरक्षित नान-कन्वर्टिबल डिबेंचर जारी किए थे। इनमें ईपीएफओ ने चार पोर्टफोलियो प्रबंधकों के माध्यम से 2,500 करोड़ रुपये का निवेश किया था। इन डिबेंचरों की परिपक्वता 2023 और 2024 में होनी थी, लेकिन आरोप है कि कंपनी पुनर्भुगतान करने में विफल रही।

अनिल अंबानी। फाइल

सीबीआइ का कहना है कि जांच का उद्देश्य आपराधिक साजिश में शामिल सभी लोगों की भूमिका की पहचान करना और निवेश की गई राशि के अंतिम उपयोग का पता लगाना है। इससे पहले रिलायंस एडीए समूह की अन्य कंपनियों- रिलायंस कम्युनिकेशंस लिमिटेड, रिलायंस होम फाइनेंस लिमिटेड, रिलायंस कमर्शियल फाइनेंस लिमिटेड और रिलायंस टेलीकाम लिमिटेड- के खिलाफ सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और एलआइसी की शिकायतों पर सात एफआइआर दर्ज की जा चुकी हैं। इनमें अब तक चार आरोपपत्र दाखिल किए गए हैं और सात आरोपितों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

'एथनाल ब्लेंडिंग के बिना 125 रुपये प्रति लीटर होती पेट्रोल की कीमत'

नई दिल्ली, आइएएनएस : एथनाल ब्लेंडिंग यानी पेट्रोल में एथनाल मिलाने को लेकर हो रहे विरोध के बीच सरकार ने कहा है कि यदि पेट्रोल में एथनाल न मिलाया गया होता तो हालिया पश्चिम एशिया संकट के दौरान दिल्ली में पेट्रोल की कीमत लगभग 125 रुपये प्रति लीटर तक पहुंच जाती। एथनाल ब्लेंडिंग ने कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि के असर को कम करके प्रति लीटर लगभग 30 रुपये बचाने में मदद की।

पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अनुसार जब पश्चिम एशिया संकट के दौरान भारतीय क्रूड बास्केट की कीमत लगभग 135 डालर प्रति बैरल तक पहुंच गई थी, तो अनुमान लगाया गया था कि एथनाल ब्लेंडिंग के बिना पेट्रोल की खुदरा कीमत राजधानी में लगभग 125 रुपये प्रति लीटर होती। हालांकि, उपभोक्ताओं को 94.77 रुपये प्रति लीटर की दर से पेट्रोल मिला।

जब पूरी दुनिया ऊर्जा संकट से जूझ रही, तब भारत में जारी है निर्बाध आपूर्ति : हरदीप पुरी

- पेट्रोलियम मंत्री ने कहा, कच्चे तेल की कीमत बढ़ने पर तीन बार घटाया गया उत्पाद शुल्क
- हरदीप पुरी ने कपिलवस्तु में विपश्यना पार्क व लाइट-साउंड शो का किया लोकार्पण

जागरण संवाददाता, सिद्धार्थनगर

केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि वैश्विक स्तर पर ऊर्जा संकट गहराने के बावजूद भारत में पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ा है। केंद्र सरकार ने समय पर नीतिगत निर्णय लेकर आम लोगों पर महंगाई का बोझ कम करने का प्रयास किया है। उन्होंने बिना नाम लिए विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि कुछ लोग लगातार देश की स्थिति खराब होने का दावा करते हैं, जबकि वास्तविकता बिल्कुल अलग है।

हरदीप पुरी कपिलवस्तु स्थित प्राचीन स्तूप पर शनिवार को लाइट व साउंड शो और उससे 700 मीटर दूर स्थित विपश्यना पार्क के लोकार्पण के बाद सभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि दुनिया के अनेक देश ऊर्जा संकट का सामना कर रहे हैं, लेकिन भारत में ऐसी स्थिति नहीं बनने दी गई। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में तेजी के बावजूद केंद्र सरकार ने तीन बार उत्पाद शुल्क घटाकर उपभोक्ताओं को राहत दी। जून के बाद से ईंधन की कीमतों में सीमित वृद्धि हुई है।

कपिलवस्तु के पिपरहवा में लाइट साउंड शो कार्यक्रम को संबोधित करते पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी। जागरण

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश की अर्थव्यवस्था लगातार मजबूत हुई है। स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से गांव खुले में शौच से मुक्त हुए, जिसका सबसे अधिक लाभ महिलाओं की गरिमा और स्वास्थ्य को मिला। उन्होंने कहा कि कार्पोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर) के माध्यम से औद्योगिक संस्थान भी विकास कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं।

कपिलवस्तु में विकसित विपश्यना पार्क और लाइट व साउंड शो इसी साझेदारी का उदाहरण हैं, जो बौद्ध पर्यटन को नई पहचान देंगे। कार्यक्रम में सांसद जगदंबिका पाल भी मौजूद रहे।

यूको बैंक से सात करोड़ की धोखाधड़ी में 25 साल बाद तीन पूर्व निदेशक दोषी

- तीनों दोषियों की सजा पर अदालत बाद में करेगी सुनवाई, साक्ष्यों के अभाव में बैंक अधिकारी को कोर्ट ने किया बरी

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

राउज एवेन्यू स्थित सीबीआइ की विशेष अदालत ने करीब 25 वर्ष पुराने सात करोड़ रुपये के बैंक धोखाधड़ी मामले में द्वारकाधीश स्पिनर्स लिमिटेड (डीएसएल) के तीन पूर्व निदेशकों को दोषी ठहराया है। अदालत ने कहा कि आरोपितों ने फर्जी दस्तावेजों के आधार पर यूको बैंक से ऋण लिया और बाद में धनराशि का दुरुपयोग किया।

हालांकि, साक्ष्यों के अभाव में बैंक के तत्कालीन अधिकारी बिकाश बसु को बरी करते हुए कहा कि अभियोजन यह साबित नहीं कर सका कि उन्होंने किसी साजिश में भाग लिया या अवैध लाभ प्राप्त किया। अदालत ने कहा कि ऋण की संस्तुति केवल बसु ने नहीं की थी, बल्कि उसके वरिष्ठ अधिकारियों ने भी प्रस्ताव का मूल्यांकन किया था। ऐसे में केवल उन्हें जिम्मेदार ठहराना न्यायसंगत नहीं होगा। दोषी ठहराए गए तीनों आरोपितों की सजा पर अदालत बाद में सुनवाई करेगी। विशेष सीबीआइ न्यायाधीश सुधांशु कौशिक ने अमित चतुर्वेदी, संजय चतुर्वेदी और परवीन जुनेजा को आपराधिक साजिश, धोखाधड़ी और जाली दस्तावेजों को असली के रूप में इस्तेमाल करने का दोषी पाया। अदालत ने कहा कि बैंक के साथ बाद में वन टाइम सेटलमेंट (ओटीएस) कर लेने से आरोपित आपराधिक दायित्व से मुक्त नहीं हो सकते। सीबीआइ के अनुसार, वर्ष 2001 में यूको बैंक की संसद मार्ग शाखा से सात करोड़ रुपये का ऋण लेने के लिए कंपनी के निदेशकों ने शुरुआत में दावा किया था कि राशि का उपयोग आइएफसीआइ के पुराने ऋण के प्री-पेमेंट के लिए किया जाएगा। ऋण स्वीकृत होने के बाद आरोपितों ने बैंक को बताया कि आइएफसीआइ ने प्री-पेमेंट स्वीकार करने से मना कर दिया है और फिर ऋण को केंद्र की टीयूएफएस के तहत मशीनरी खरीद के लिए परिवर्तित करा लिया।

छह साल बाद कारोबार के लिए फिर खुला नाथुला सीमा व्यापार

जासं, गंगटोक: भारत और तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (चीन) के बीच ऐतिहासिक नाथुला सीमा व्यापार लगभग छह वर्षों बाद शनिवार को औपचारिक रूप से फिर शुरू हो गया। पूर्वी सिक्किम स्थित नाथुला के नो-मैन्स-लैंड में भारत और चीन के अधिकारियों की मौजूदगी में आयोजित समारोह के साथ प्राचीन सिल्क रूट पर व्यापार की वापसी हुई। कारोबारी गतिविधियां 3 अगस्त सोमवार से शुरू होंगी।

साल 2020 में कोविड-19 महामारी और भारत-चीन सीमा पर उत्पन्न परिस्थितियों के कारण नाथुला बंद कर दिया गया था। समुद्र तल से करीब 14,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित यह दर्रा दोनों देशों के बीच महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग माना जाता है।

समारोह में सिक्किम सरकार की वाणिज्य एवं उद्योग विभाग की सचिव कर्मा डी. युत्सो, गंगटोक की मेयर छिरिंग पाल्देन भूटिया और केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

साप्ताहिक राशिफल

रविवार, 26 जुलाई, 2026 से शनिवार 1 अगस्त, 2026 तक

पं. बी. बी. शास्त्री 'देवेश'

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ)
कार्य में समयानुसार सुधार करें, धनागम में प्रयास, कार्य करने वालों से सावधान, निजी मतभेद, विदेश कार्य में अवरोध, साधनों की पूर्ति, शिक्षा, लेखन में प्रगति, आलस्य से बचें, मित्रों से सहयोग, दाम्पत्य में सुख, स्थान पद परिवर्तन, व्यय अधिक, शुभ अंक 2

वृष (इ, ऊ, ए, ओ, पा, वी, वू, वे, वो)
अधिक विचारों से मन अशान्त, निर्णय सलाह से करें, साहस की वृद्धि, कार्य मे देरी, सन्तान से सहयोग, चयन में सफलता, खानपान पर ध्यान रखें, परिस्थिति के अनुरुप कार्य करें, ससुराल से सहयोग, वाहन में सावधानी, आय में सुधार, शुभ अंक 4

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, हा)
प्रयास से कार्य में सम्पन्नता, अर्थसाधन में प्रयास, कार्यस्थल में परिवर्तन से लाभ, लक्ष्य के प्रति सजगता, अतिविश्वास से बचें, लेखन कार्य में प्रगति, खानपान पर सजग रहें, त्वचा व रक्तविकार का योग, दाम्पत्य में सुख, धर्म में रुचि, व्यय अधिक, शुभ अंक 5

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)
कार्य क्षेत्र में विस्तार, धनागम में सफलता, धन के आवागमन में सावधानी, समाज में यश, भावना पर नियन्त्रण, नवीन युक्ति और सोच के साथ कार्य करें, सन्तान से अनबन, मित्रों से सावधान, वायु विकार, सिर दर्द योग, दाम्पत्य में सुख, आय में सुधार, शुभ अंक 6

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)
कल्पना और भावना की वृद्धि, अर्थसाधन में सफलता, निर्णय सलाह से करें, लक्ष्य के प्रति सजगता साधनों की पूर्ति, सन्तान के लिये योजना, शिक्षा में सफलता, ध्यान मनन से शांति, राज्यपक्ष से सावधान, वाहन में सावधानी, आय में सुधार, शुभ अंक 7

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)
पारिवारिकजनों से सहयोग, सार्थक निर्णय से लाभ, युक्ति एवं तर्क से सफलता, पूंजी निवेश में सावधानी, सामाजिक कार्य योग, भूमि, भवन कार्य में सफलता, खानपान पर ध्यान दें, प्रणय में मधुरता, स्थान पद परिवर्तन योग, राज्य पक्ष से सहयोग, व्यय अधिक, शुभ अंक 8

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)
कार्य क्षेत्र में सहयोग से सफलता, अर्थसाधन में सफलता, पूर्व प्रयास और युक्ति से लाभ, नकारात्मक कार्य करने वालों से सावधान, भौतिक साधनों की पूर्ति, शिक्षा में सफलता, प्रतियोगी परीक्षा में सफलता, दाम्पत्य में सुख, अधिकारी से सहयोग, व्यय अधिक, शुभ अंक 9

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)
कार्य क्षेत्र में सही निर्णय करें, दिनचर्या व्यस्ततम्, धनागम में प्रयास, लक्ष्य के प्रति चेष्टारत् रहें, धन के आवागमन में सावधानी, सन्तान के लिये योजना, मित्रों से लाभ, क्रोध, ईर्ष्या से बचें, दाम्पत्य में सुख, अधिकारी से सहयोग, व्यय अधिक, शुभ अंक 1

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)
अधिक विचारों से मन अशान्त, धनागम में सफलता, धन के आवागमन में सावधानी, कार्य के प्रति सजगता, निजी मतभेद, विदेश कार्य में प्रयास करें, परिस्थिति के अनुरुप कार्य करें, सन्तान से सहयोग, चयन में सफलता, कुसंग से बचें, जीवनसाथी का मिलन, व्यय अधिक, शुभ अंक 2

मकर (भो, जा, ज, खी, खू, खे, खो, गा, गी)
निजी संबंधों में सुधार, धनागम में सुधार, पूंजी निवेश में सावधानी, लक्ष्य के प्रति सजगता, परिवार में समय बितायें, स्वार्थीजनों से सावधान, भवन साजसज्जा का योग, लेखन शिक्षा में प्रगति, महिला से सहयोग, दाम्पत्य में सुख, राज्यपक्ष से सावधान, व्यय अधिक, शुभ अंक 4

कुम्भ (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सा, दा)
धनागम में सफलता, पारिवारिकजनों का सहयोग, पूंजी निवेश में सावधानी, माता-पिता के स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता, साधनों की पूर्ति, सन्तान से सहयोग, शत्रुपक्ष प्रभावी, वाद विवाद में विजय, प्रणय में सुख, धर्म में रुचि, व्यय अधिक, शुभ अंक 5

मीन (दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची)
जीवन में प्रसन्नता, साहस से ऊर्जा की प्राप्ति, साझेदारी में सावधानी, नकारात्मक कार्य करने वालों से सावधान, समाज में यश, लेखन में प्रगति, शत्रुपक्ष प्रभावी, प्रणय में मधुरता, धर्म में रुचि, त्वचा व रक्त विकार योग, राजनैतिक अपयश, व्यय अधिक, शुभ अंक 6

समोरच्या बाकावरून

पी. चिदम्बरम

आशेचा नवा अंकुर!

सीजेपीने दोन कॅबिनेट मंत्र्यांना चर्चेसाठी येण्यास भाग पाडले, एका मंत्र्याचा राजीनामा मिळवला, सरकारला आंदोलकांवरील खटले मागे घेण्यास भाग पाडले आणि सरकारकडून लेखी आश्वासनेही घेतली . हे अभूतपूर्व आहे .

भारतातील ७९ वर्षांच्या लोकशाही राजकारणात राजकीय पक्षांना आजवर कधीच शिकता आला नव्हता असा धडा 'कॉक्रोच जनता पार्टी'ने (सीजेपी) जंतरमंतरवर सुरू केलेल्या आंदोलनाने दिला. अशा 'धड्या'ची पहिली झलक या वर्षाच्या सुरुवातीलाच दिसली होती, पण त्याबद्दल नंतर.

आतापर्यंतचा इतिहास आपल्याला हेच सांगत आला आहे की, राजकीय पक्ष बदल घडवून आणू शकतात ते संघर्ष आणि निवडणुकांमधील विजय या दोन गोष्टींच्या माध्यमातून. स्वातंत्र्य मिळवून देणाऱ्या चळवळीचे नेतृत्व काँग्रेसने केले. सलग निवडणुका जिंकून काँग्रेसने भारतीय लोकशाहीचे अनेक आधारस्तंभ उभे केले; उदाहरणार्थ - घटनात्मक शासन, धर्मनिरपेक्षता, आरक्षण, भाषिक राज्यरचना, स्वतंत्र मध्यवर्ती बँक, संसाधनांचे विकेंद्रीकरण इत्यादी. प्रादेशिक पक्षांनी उदाहरणार्थ द्रविडियन पक्षांनी, त्या त्या राज्यांमधील निवडणुका जिंकल्या आणि त्यांच्या त्यांच्या राज्याची भाषा, राज्यांचे अधिकार, सांस्कृतिक ओळख, जमीन सुधारणा इत्यादी गोष्टींना प्राधान्य मिळवून दिले. १९७५ मधील जेपी (जयप्रकाश नारायण) यांच्या नेतृत्वाखालील आंदोलनामुळे तत्कालीन केंद्र सरकार बदलले आणि स्वातंत्र्याच्या रक्षणासाठी घटनात्मक तरतुदी लागू केल्या. १९७८ मधील 'आसू' (अअरव) आंदोलनामुळे सीमेपलीकडून होणारे स्थलांतर रोखण्यासाठी कायदेशीर तरतुदी करण्यात आल्या. खरे तर भारतातील प्रशासकीय व्यवस्थेतील सर्व प्रमुख बदल हे राजकीय पक्षांनी संघर्ष आणि निवडणुकांच्या माध्यमातूनच घडवून आणले आहेत, असे ठामपणे म्हणता येऊ शकते.

असामान्य पात्रता

सीजेपी हा पारंपरिक अर्थाने राजकीय पक्ष नाही. एका वक्तव्यामुळे संतप्त झालेल्या अभिजित दिपके यांनी एक व्यासपीठ सुरू केले आणि तिथे असा प्रश्न मांडला की, '' सर्व झुरळे एकत्र आली तर काय होईल?'' त्यांनी जाहीर केले की, 'बेरोजगार, आळशी, सतत ऑनलाइन असणारे आणि कोणतीही शिवीगाळ न करता किंवा असभ्य भाषा न वापरता, अत्यंत तार्किक, मुद्देसूद आणि प्रभावी पद्धतीने आपला राग किंवा नाराजी व्यक्त करू शकतात,' असे लोक या पक्षात सामील होऊ शकतात. वरकरणी पाहता, विद्यार्थी आणि अभ्यासकांसह असे अनेक लोक या 'असामान्य' पात्रतेत बसतात! नोकरी करणारे, पण ही पात्रता असणारेही अनेकजण आहेत. शिवाय कलाकार, शिक्षक, डॉक्टर, परिचारिका, वकील, व्यावसायिक, पत्रकार, इतर व्यावसायिक आणि कनिष्ठ सरकारी कर्मचारी असलेल्या प्रतिष्ठित स्त्री-पुरुषांही या 'पात्रते'त बसतात.

सीजेपीकडे सध्या एक संस्थापक-नेता, प्रवक्ता आणि जिद्द या व्यतिरिक्त फारसे काही नाही. उपलब्ध माहितीनुसार, यात कोणतीही संघटना, सदस्यत्व, नोंदणी, धोरणांची घोषणा किंवा राजकीय पक्षाची इतर कोणतीही वैशिष्ट्ये नाहीत. तरीही, ३५ दिवसांच्या आंदोलनाद्वारे, सीजेपीने दोन कॅबिनेट मंत्र्यांना चर्चेसाठी सीजेपीकडे येण्यास भाग पाडले, एका मंत्र्याचा राजीनामा मिळवला, सरकारला आंदोलकांवरील खटले मागे घेण्यास भाग पाडले आणि सरकारकडून लेखी आश्वासनेही घेतली. हे अभूतपूर्व आहे.

नव्याची चाहूल

वर म्हटल्याप्रमाणे, राजकीय पक्षांच्या पलीकडील आणि त्यांच्या चौकटीबाहेरील अशा अवकाशाची (स्पेस) पहिली चाहूल २०२६ मध्ये तमिळनाडूमध्ये दिसून आली. जोसेफ विजय यांनी फेब्रुवारी २०२४ मध्ये एका राजकीय पक्षाची (तमिळगा वेट्री कळघम किंवा टीव्हीके) घोषणा केली, तो काही पारंपरिक पद्धतीचा पक्ष नव्हता; त्याचे स्वरूप केवळ चाहत्यांची एक अनौपचारिक संघटना (फॅन्स असोसिएशन) एवढेच होते. बहुतांश ठिकाणी, या फॅन्स असोसिएशनचे पदाधिकारीच विविध स्तरांवर टीव्हीकेचे पदाधिकारी झाले. टीव्हीकेच्या उमेदवारांची निवड करताना पारंपरिक राजकीय संकेत किंवा निकष, उदा. जात, धर्म, लिंग, राजकीय वारसा, संपत्ती यांना बगल देण्यात आली. २३४ पैकी २०० हून अधिक उमेदवारांकडे स्वतःचे पैसे नव्हते किंवा त्यांनी प्रचारावर पैसे खर्च केले नाहीत. बहुतांश मतदारसंघांमध्ये, टीव्हीकेच्या उमेदवारांचा प्रचार झाल्याचेही फारसे दिसून आले नाही. अनेक टीव्हीके उमेदवार संबंधित मतदारसंघात माहीतही नव्हते. आणि त्यांच्याकडे बूथ एजंट, मतदान प्रतिनिधी किंवा मतमोजणी प्रतिनिधींची संख्याही नगण्य होती. विजय यांनी काही मोजकेच 'रोड शो' केले. त्यांनी अगदी थोड्याच सभा घेतल्या. वरकरणी पाहता, मतदारांसाठी केवळ 'विजय' आणि 'शिट्टी' हे त्यांचे चिन्हच महत्त्वाचे होते. या यशाचा किमयागार ठरली ती समाजमाध्यमे (इन्स्टाग्राम आणि यूट्यूब): विजय सर्वत्र दिसत होते आणि प्रत्येक घरात त्यांचे विचार पोहोचत होते. द्रमुक आणि एआयएद्रमुक या दोन बलाढ्य राजकीय आणि निवडणूक यंत्रणांचा सामना करत टीव्हीकेने १०८ मतदारसंघांत विजय मिळवला आणि एकूण ३५ टक्के मते मिळवली.

कोणत्याही राजकीय पक्षाने, नेत्याने, पत्रकाराने किंवा जनमत चाचणी करणाऱ्या संस्थेने टीव्हीकेच्या विजयाचा अंदाज वर्तवला नव्हता. निवडणुकीचे निकाल हाती आले, तेव्हा प्रस्थापित राजकीय पक्षांना जेवढा धक्का बसला, केवढेच आश्चर्य टीव्हीकेलाही वाटले.

तमिळनाडूतील हा राजकीय बदल राजकीय पक्षांच्या चौकटीबाहेर आणि त्यापलीकडील अवकाशात कार्यरत असलेल्या अशा नागरिकांमुळे घडून आला. त्यामुळे तमिळनाडूच्या या उदाहरणावरून आता, एकमेकांना न ओळखणारे, एकमेकांशी कसलाच संवाद वा संपर्क नसणारे आणि कोणत्याही एका विशिष्ट संघटनेशी जोडले गेलेले नसलेले नागरिक एकाच पद्धतीने विचार करू शकतात आणि सरकार स्थापन करण्यासाठी पुरेसे प्रतिनिधी निवडून आणू शकतात; असा बदल भविष्यातही घडू शकतो असा विचार करायला हरकत नाही.

राजकीय पक्षांसमोरील आव्हान

देशातील सर्वच राजकीय पक्षांनी तमिळनाडूतील निवडणुकीचे निकाल आणि जंतरमंतर येथील आंदोलनाचे परिणाम यांचा बारकाईने अभ्यास केला पाहिजे. यापुढच्या काळात संघटित राजकीय पक्ष कदाचित कालबाह्य होणार नाहीत, परंतु 'हाय कमांड' (पक्षश्रेष्ठी), कार्यकारी समिती, सर्वसाधारण परिषद, महासभा, पक्ष-सदस्यत्व आणि पक्षांतर्गत निवडणुका यांसारख्या पारंपरिक संकल्पना अप्रस्तुत ठरू शकतात. 'व्होट बँक' (मतपेढी) हा शब्दप्रयोगही कदाचित नाहीसा होईल.

मोबाइल, ट्विटर (आताचे 'एक्स'), फेसबुक आणि इन्स्टाग्राममुळे नागरिकांनी आपली मूक संमतीची भूमिका सोडली आहे; आता त्यांनी भीतीही झटकून टाकल्याचे दिसते. खाकी किंवा निळा गणवेश, पोलीस, लाठ्या, अश्रुधूर, बंदुका आणि अटक किंवा स्थानबद्धता या गोष्टींचा तरुणांना आणि कदाचित ज्येष्ठ नागरिकांनाही आता कोणताही धाक उरलेला नाही. राजकीय पक्षांच्या चौकटीबाहेरील राजकीय अवकाश अधिक विस्तारला जावा, असे मला वाटते.

'जेन झी' आणि इतर आंदोलकांसमोर पुढील आव्हाने आहेत:

- सगळ्यात पहिल्यांदा, त्यांना विद्यापीठांना जुन्या, तर्कहीन आणि अप्रगत विचारांकडे नेणाऱ्या प्रवृत्तीतून बाहेर काढावे लागेल.
- त्यांना गणवेशधारी पोलिसांची दडपशाही, 'नैतिक पोलीसगिरी' आणि बजरंग दलासारख्या दंडेली करणाऱ्या संघटनांचा धैर्याने सामना करावा लागेल.
- त्यांना कायद्याद्वारे लादल्या जाणाऱ्या नैतिकतेविरुद्ध तसेच भेदभावाविरुद्ध लढा द्यावा लागेल.
- 'जेन झी'ला स्थानिक महसूल आणि नोंदणी कार्यालये, रुग्णालये, रेशनची दुकाने, स्थानिक स्वराज्य संस्था इत्यादींमधील दडपशाहीयुक्त भ्रष्टाचाराला आळा घालावा लागेल.

जंतरमंतर येथील आंदोलनानंतर, सकारात्मक बदलाची प्रत्येक शक्यता वास्तवात उतरू शकते असे वाटू लागले आहे.

लेखक भारताचे माजी अर्थमंत्री आहेत.

संकेतस्थळ : pchidambaram.in ट्विटर@Pchidambaram_IN

पुनर्विकासाचा मार्ग मोकळा; पण भाडेकरूंचे काय?

चंद्रशेखर प्रभू

महाराष्ट्र शासनाच्या नव्या राजपत्रामुळे मुंबईतील उपकरप्राप्त इमारतींच्या पुनर्विकासाचा मार्ग मोकळा झाल्याचे चित्र निर्माण झाले आहे . मात्र, या निर्णयाचा सर्वाधिक परिणाम भाडेकरूंवर होणार आहे .

महाराष्ट्र शासनाच्या २० जुलै २०२६ रोजी प्रसिद्ध झालेल्या राजपत्रानुसार महाराष्ट्र गृहनिर्माण क्षेत्र अधिनियम १९७६ च्या कलम २ मधील खंड ११ मध्ये बदल करण्यात आले. त्यात (अ) कलम ६५ च्या प्रयोजनांसाठी सक्षम प्राधिकारी म्हणून नियुक्त करावयाचा अधिकारी; तसेच (ब) कलम ७९(अ) च्या प्रयोजनासाठी मुंबई इमारत दुरुस्ती व पुनर्रचना मंडळाच्या संबंधित विभागाचा कार्यकारी अभियंता, त्याचबरोबर कलम ७९(अ) पोट कलम १ मधील (अ) ''अशा इमारतीचा पुनर्विकास'' या मजकुराऐवजी ''अशा इमारतींची पुनर्रचना'' हा मजकूर दाखल करण्यात येईल; तसेच (ब) खंड कमध्ये ''पुनर्बांधकाम'' या मजकुराऐवजी ''पुनर्विकास'' हा मजकूर दाखल करण्यात येईल, अशा सुधारणा सुचविण्यात आल्या. त्या लगेचच मंजूरही झाल्या. त्यामुळे मुंबईतील १३ हजार ८०० उपकरप्राप्त इमारतींच्या पुनर्विकासाचा मार्ग मोकळा झाला, असे ठळक मथळे सर्वत्र दिसू लागले. म्हणजे नेमके काय याविषयी थोडेसे समजून घेऊ या.

किमान ३५ वर्षांपासून उपकरप्राप्त इमारतींचा पुनर्विकास हा विकास नियंत्रण नियमावलीच्या ३३(७) प्रमाणे केला जातो. त्यानुसार घरमालक आणि बिल्डर हे भाडेकरूंच्या संमतीने इमारतीचा पुनर्विकास करतात. आधी ७० टक्के भाडेकरूंच्या संमतीची आवश्यकता होती. ती नंतर ५१ टक्क्यांवर आणली गेली. बिल्डरांच्या राजकीय पुढाऱ्यांवरील पगड्यामुळे भाडेकरूंच्या विरोधाचा उपयोग झाला नाही.

मग अशी कोणती गोष्ट झाली की पुनर्विकास रोखला गेला असे भासविले गेले ? म्हाडा कायद्यामध्ये बदल करून नवीन कलम ७९ (अ) व (ब) निर्माण करण्यात आले. त्यानुसार आधी पुनर्विकासाचा प्रस्ताव देण्याची संधी घरमालकाला व बिल्डरला देण्यात आली. सहा महिन्यांत त्यांनी तिचा वापर केला नाही, तर ७९(ब) अंतर्गत भाडेकरूंना प्रस्ताव देण्याची संधी देण्यात आली. त्यानंतर या सर्व उपकरप्राप्त इमारती म्हाडा संपादित करेल आणि स्वतःच पुनर्विकास करेल, अशी तरतूद होती. मात्र त्यासाठी घरमालकाला बाजारभावाप्रमाणे मोबदला देण्याची अट होती. घरमालक/बिल्डरने विकास केला तर मोबदला देण्याचा प्रश्नच उद्भवत नव्हता. मात्र भाडेकरूंनी प्रस्ताव द्यावयाचा झाला तर हे मोबदला दिल्याशिवाय अशक्य होते. हा मोबदला जमिनीच्या बाजारभावाच्या २५ टक्के किंवा मालक/बिल्डर यांना खुल्या बाजारात विक्रीला मिळावयाच्या क्षेत्रफळाच्या १५ टक्के, या दोन्हीपैकी जे अधिक असेल ते असा होता.

आता आपण याचा भाडेकरूंवर किती भुर्दंड पडणार याचा विचार करू. १०० खोल्या असणाऱ्या इमारतीत भाडेकरूंना देय असलेले क्षेत्रफळ दिल्यावर ९० टक्केपर्यंत क्षेत्रफळ विक्रीसाठी मिळते. समजा भाडेकरूंना ४२५ चौ. फूट कारपेट एरिया, म्हणजे ५५० बांधकाम झालेले क्षेत्र दिले, तर भाडेकरूंसाठी ५५ हजार चौ.फूट बांधून द्यावे लागतील. त्याच्या ९० टक्के म्हणजे ४९,५०० चौ.फूट विक्रीसाठी उपलब्ध होईल. त्याच्या १५ टक्के म्हणजे ७,३५० चौ. फुटाच्या विक्री इतका पैसा मोबदला म्हणून भाडेकरूंना भरावा लागेल. आता गिरगाव, ताडदेव भागात विक्रीचा दर ५० हजार रुपये प्रती चौ.फूट इतका आहे. वरळी, मलबार हिल वगैरे भागात तो एक लाख प्रति चौ. फुटापेक्षा अधिक आहे. म्हणजेच गिरगावामधील इमारतीत एकूण मोबदला रु. ३६ करोड ७५ लाख इतका होतो. म्हणजेच एका खोलीत राहणाऱ्या भाडेकरूला प्रत्येकी ३६ लाख ७५ हजार इतकी रक्कम केवळ जागेचा मोबदला घरमालकाला दयावा लागेल. इतकी रक्कम कोणत्याही भाडेकरूच्या ऐपतीच्या पलीकडची आहे.

तेव्हा घरमालक/बिल्डर मंडळींनी ७९(अ)/(ब) विरुद्ध उच्च न्यायालयात याचिका दाखल केली. त्या याचिकेत घटनात्मक वैधता, तसेच म्हाडामधील भ्रष्टाचार व गैरव्यवहार हेदेखील मुद्दे होते. याचिकाकर्त्यांचे म्हणणे असे होते की, इमारत पूर्णपणे धोकादायक घोषित करण्यात येते, तेव्हाच भाडेकरूंना ७९(ब) खाली प्रस्ताव सादर करण्याचे अधिकार प्राप्त होतात. इमारत धोकादायक ठरविणे हा मुंबई महानगरपालिकेच्या अखत्यारीतला विषय आहे. महानगरपालिकेने अनेक इमारतींना धोकादायक न ठरविता, म्हाडातर्फे भूसंपादनाची नोटीस दिली आहे. तसेच मूळ घरमालक/बिल्डर यांची परवानगी न घेता परस्पर भूसंपादनाचा प्रस्ताव बिल्डरांनी भाडेकरूंच्या नांवे सादर केला आहे. तसेच म्हाडाच्या संबंधित अधिकाऱ्यांनी इमारतीचे तांत्रिकदृष्ट्या योग्य असे सर्वेक्षण न करता निर्णय घेतले.

उच्च न्यायालयाने यामधील काही मुद्दे ग्राह्य ठरवून अशा इमारतींच्या पुनर्विकासाच्या प्रस्तावास स्थगिती दिली. मात्र घरमालक/बिल्डर यांनी ५१ टक्के भाडेकरूंच्या संमतीने प्रस्ताव दिला असेल तर त्यास मात्र स्थगिती नाही असेही स्पष्ट केले. त्यामुळे इतके दिवस पुनर्विकास बंद होता असे म्हणणे सयुक्तिक होणार नाही. ५१ टक्के भाडेकरूंच्या संमतीने घरमालक/बिल्डर यांनी दिलेले प्रस्ताव अविरत सुरू आहेत. केवळ मूळ घरमालक/बिल्डर यांच्या संगनमताशिवाय ७९(ब) खाली केलेल्या प्रस्तावांना स्थगिती आहे. याविरुद्ध सरकार व म्हाडा सर्वोच्च न्यायालयात गेले आहे. हा निकाल सरकारच्या बाजूने लागला तर ७९ (ब) अन्वये जुन्या इमारतींचे संपादन करणे शक्य होईल पण त्यासाठीचा मोबदला भाडेकरूंना द्यावा लागेल. त्यांना तो झेपणारा नाही, त्यामुळे भाडेकरूंना राजकीय पुढाऱ्यांच्या मदतीने बिल्डरकडेच जावे लागेल. दरम्यानच्या काळात घरमालकांनी भाडेकरूंवर निष्कासनाचे खटले भरविले आहेत. भाडेकरूंना निष्कासनापासून वाचविण्याचा कोणताच प्रस्ताव विधानसभेत सादर झालेला नाही. त्यामुळे सर्वोच्च न्यायालयात जिंकलो पण घरातून निष्कासित झालो असे होण्याची दाट शक्यता आहे. तसेच सर्वोच्च न्यायालयात घटनात्मक वैधता सिद्ध करण्यासाठी सरकार व म्हाडाला असा युक्तिवाद करावा लागेल की, ७९(ब) अन्वये बाजारभावाप्रमाणे दिलेला मोबदला न्याय्य व योग्य आहे. आता सर्वोच्च न्यायालयासमोर घटनात्मक वैधतेकरिता म्हाडाच्या चॅप्टर ८(अ) ची घटनात्मक वैधता आणि भाडे नियंत्रण कायद्याची घटनात्मक वैधता या दोन महत्त्वाच्या याचिका ३५ वर्षांपासून प्रलंबित आहेत. चॅप्टर ८(अ) अन्वये भाडेकरूंनी जमिनीच्या भूसंपादनासाठी अर्ज केला तर म्हाडा आणि सरकार असे भूसंपादन करून घरमालकास मोबदला म्हणून महिन्याचे भाडे केवळ १०० रुपये देते. आता म्हाडाच्याच ७९(ब) अन्वये बाजारभावाने मोबदला योग्य आहे असा युक्तिवाद करणाऱ्या म्हाडास १०० महिन्यांचे भाडे हे योग्य आहे असाही युक्तिवाद करावा लागणार आहे. १०० रुपये महिन्याचे भाडे हे सर्व भाडेकरूंना परवडणारे आहे. यामागे पागडी हा मुद्दा भाडेकरूंच्या दृष्टीने महत्त्वाचा ठरतो. गेली ५० वर्षे भाडेकरू सातत्याने असा युक्तिवाद करीत आहेत की, घर विकत घेताना त्याची पूर्ण किंमत भाडेकरूंनी पागडी स्वरूपात दिली आहे व भाडे पावती बदलत असताना मिळालेल्या पागडीपैकी बहुतांश रक्कम घरमालकांना मिळाली आहे. सबब घरमालकाला बाजारभावाने मोबदला मागण्याचा अधिकारच नाही. आजपर्यंत हा युक्तिवाद सर्वोच्च न्यायालयात फेटाळला गेलेला नाही. १०० रुपये महिन्याच्या भाड्याऐवजी सर्वोच्च न्यायालयाच्या आदेशानुसार कदाचित २०० रुपये महिन्याचे भाडे दयावे लागेल, पण तेही परवडणारे असेल असेही कायदेतज्ज्ञ सांगत आले आहेत. आता मात्र म्हाडाच्या कायद्याअंतर्गत चॅप्टर ८(अ) खाली पागडी घेतल्यामुळे १०० रुपये महिन्याचे भाडे न्याय्य आहे असा युक्तिवाद करावा लागेल व म्हाडाच्याच कायद्याअंतर्गत ७९(ब) खाली पागडी दिली-घेतली गेल्याचा कोणताही फायदा भाडेकरूंना मिळणार नाही. केवळ आणि केवळ बिल्डरांचा फायदा होईल. निष्कासनाच्या याचिकांतून वाचलेल्या भाडेकरूंना कदाचित ४२५ चौ.फूट मिळूही शकेल, पण चॅप्टर ८(अ) प्रमाणे मोबदला परवडणारा असल्यामुळे सर्व उपकरप्राप्त इमारतीतल्या चार लाखांहून अधिक भाडेकरू कुटुंबीयांस किमान ५५० ते ६०० चौ.फुटांचे दोन बेडरूमचे घर मिळू शकते याचा विसर भाडेकरूंना व बिल्डरांकडे घेऊन जाणाऱ्या राजकीय पुढाऱ्यांना पडला आहे का ?

हा मुद्दा केवळ चॅप्टर ८(अ) च्या वैधतेपुरताच मर्यादित नाही. घरमालक/बिल्डर, आम्ही कधी पागडी घेतलीच नाही असा युक्तिवाद करीत आहेत. एकदा चॅप्टर ८(अ) च्या युक्तिवादात किंवा ७९(ब) च्या युक्तिवादात पागडी दिल्या-घेतल्याचा युक्तिवाद बाद ठरला, तर तोच युक्तिवाद भाडे नियंत्रण कायद्याच्या मुळावरच घाव घालेल. घरमालक/बिल्डर असा युक्तिवाद करतात की घरांची भाडी नियंत्रित असल्यामुळे इमारतीच्या दुरुस्तीचा, पुनर्विकासाचा प्रश्न गंभीर बनला, हा पूर्णपणे खोटा युक्तिवाद आहे. घरमालक पागडी घेतात ही जगजाहीर बाब आहे. ज्या इमारती बिल्डरांनी घेतल्या त्याच लवकरात लवकर ''धोकादायक'' कशा ठरविल्या जातात हे मुंबईकरांना चांगले माहीत आहे. धोकादायक यादीमध्ये नसणाऱ्या इमारती का पडतात, या प्रश्नाचे उत्तर शोधल्यास यातून होणारा कोट्यवधी रुपयांचा घोटाळा आपोआप बाहेर येईल. घरमालकाने पागडी घेतलीच नसेल तर त्याला बाजारभावाप्रमाणे भाडे मिळालेच पाहिजे असा युक्तिवाद भाडे नियंत्रण कायदा पूर्णपणे फेटाळावा या मागणी याचिकेमध्ये आहेच. सन १९४० पासून आजपर्यंतचे बाजारभावाने भाडे ठरवावे व त्याप्रमाणे आतापर्यंतची पूर्ण थकबाकी भाडेकरूंनी दयावी असे सर्वोच्च न्यायालयासमोर मांडले गेले आहे.

या युक्तिवादाला उत्तर म्हणून पागडीची वास्तविकता व त्यातून मिळालेला गडगंज नफा हा सर्वोच्च न्यायालयात आतापर्यंत मांडण्यात आलेला आहे. या युक्तिवादामुळेच आतापर्यंत भाडे नियंत्रण कायदा फेटाळला जाण्यापासून वाचला आहे. पागडी घेतल्यामुळे बाजारभावाने मोबदला देणे घटनात्मक तरतुदींना धरून नाही असे भाडेकरूंच्या वतीने तसेच म्हाडा व सरकारच्या वतीने मांडले गेले आहे. ७९ (ब) च्या युक्तिवादात मात्र बाजारभावाने मोबदला दिल्याने पागडी घेतल्या-दिल्याचा युक्तिवाद नेस्तनाबूत होईल. यानंतर भाडेकरूंचे काय हाल होतील याचा विचारही करवत नाही. घरमालकांची मागणी आहे की १० बाय १० च्या खोलीचे भाडे बाजारभावाप्रमाणे प्रति महिना ६० हजारांहून अधिक असावे. असे झाल्यास शहर रिकामे होईल व अराजकता निर्माण होईल असे सर्वोच्च न्यायालयात सांगण्यात येत होते. आता भाडेकरूंचे काय होणार, याचा विचारही करवत नाही. त्यामुळे ७९(ब) चा निकाल आपल्या बाजूने लागला तर भाडे नियंत्रण कायद्याचे काय होईल, हा खरा प्रश्न आहे.

ज्येष्ठ वास्तुरचनाकार
chandrashekharp@hotmail.com

चांदनी चौकातून

दिल्लीवाला

हसा तरी थोडं

काँग्रेसच्या खासदार प्रियंका गांधी-वाड्रांच्या भाषणांकडं आता सत्ताधारी पक्षाचं लक्ष वेधलं जाऊ लागलेलं आहे. त्यांच्याकडं संवादाची शैली आहे, राहुल गांधी थेट आव्हान देतात, आरोप करतात, मोदी-शहांचं नाव घेऊन सत्ताधाऱ्यांना कोंडीत पकडतात. त्यामुळं त्यांच्या भाषणाला अधिक गोंधळ होतो. राहुल गांधी काय बोलणार हे ऐकण्यासाठी केंद्रीय गृहमंत्री अमित शहा लोकसभेत येऊन बसतात. त्यातून 'मी आव्हान स्वीकारतो', असा संदेशही शहांना द्यायचा असतो. यावेळी राहुल गांधींनी शहांवर इतके आरोप केले पण, ते ऐकायला शहा लोकसभेत नव्हते. महत्त्वाच्या चर्चांना लोकसभेत अमित शहा उपस्थित नाहीत असं क्वचितच होतं. प्रियंकांच्या भाषणाच्या वेळीही गोंधळ होतो, कोणत्या मुद्द्यावर गोंधळ होणार याचा अचूक अंदाज घेऊन त्या बोलत असतात. सत्ताधारी बाकांवरून आरडाओरडा होणार हे गृहीत धरून त्या आधीच बोलायचं थांबतात. स्वतःहूनच, 'तुम्ही बोला, मी ऐकते', असं सांगतात. नीट परीक्षांच्या संदर्भात बोलतानाही प्रियंकांचं भाषण खुसखुशीत झालं. पण, नवनियुक्त केंद्रीय शिक्षणमंत्री प्रल्हाद जोशींवर प्रियंकांनी टीका केली तेव्हा सत्ताधारी संतप्त झालेले होते. आरोपांचे पुरावे द्या, ते प्रमाणित करा वगैरे मागणी होत होती. खरं तर लोकसभाध्यक्ष ओम बिर्ला अडचणीत आले होते. प्रियंकांनी केलेल्या आरोपांचा मुद्दा त्यांना वाढवायचा नव्हता असं दिसत होतं. प्रियंकांनी आरोप प्रमाणित करण्याच्या भानगडीत पडू नये आणि सत्ताधाऱ्यांनी मुद्दा सोडून द्यावा असं त्यांच्या चेहऱ्यावरून दिसत होतं. पण, मुद्दा वाढत गेला, त्यावेळी राहुल गांधींही होते, त्यांनी बाहेर जाऊन 'एक्स'वर प्रियंका गांधींच्या आरोपांना पाठिंबा दिला आणि त्यानंतर लगेच समाजमाध्यमांवरून जोशींनी त्यावेळी केलेलं वादग्रस्त विधान व्हायरल झालं. भाऊ-बहीण एकमेकांच्या मदतीला असं नेहमी धावून येतात! प्रियंका गांधी लोकांना आपलंसं करून घेतात हे अनेकदा दिसलेलं आहे. लोकसभाध्यक्ष ओम बिर्लांनाही त्यांनी हसायला भाग पाडलं हे विशेष. लोकसभेत वाद सुरू असताना त्या बिर्लांना अचानक म्हणाल्या की, तुम्ही माझ्यावर आज नाराज झालेले दिसता... त्यावर बिर्ला काहीच बोलले नाहीत. भाषण संपल्यानंतरही प्रियंकांनी बिर्लांना, तुम्ही हसायला हवं... थोडं हसा... असं म्हणाल्या. प्रियंकांच्या या संवादशैलीमुळं बिर्लांनाही हसू आवरलं नाही. ठीक ठीक असं म्हणत बिर्लांनी भाषणासाठी दुसऱ्या सदस्याचं नाव पुकारलं!

आणि विद्वान खूश झाले!

भाजपमध्ये एक विद्वान खासदार नेते आहेत, ते टीव्हींवरील अनेक चर्चांमध्ये सहभागी होतात. आपण प्रगाढ पंडित असल्याचं ते विनाकारणच दाखवत असतात. राज्यसभेत विरोधी पक्षनेते मल्लिकार्जुन खरगेंनी मनुस्मृतीचा विषय काढला. हा विषय सत्ताधाऱ्यांच्या आवडीचा. ते विद्वान खूश झालेले दिसले, त्यांनी लगेच आरडाओरडा सुरू केला. खरगेंनी पहिल्यांदा त्यांच्याकडं लक्ष दिलं नाही, त्यांनी मनुस्मृतीतील एका परिच्छेदाचा इंग्रजी अनुवाद वाचून दाखवला. त्याचा भावार्थ सांगितला. गोंधळ सुरू झाला, हे

पाहून भाजपचे विद्वान प्रचंड अस्वस्थ झाले. तेवढ्यात सभागृहाचे नेते जे. पी. नड्डा यांनी या विद्वानांना बोलवून घेतलं. नड्डांशी बोलून ते आपल्या आसनावर आले आणि त्यांनी कुठल्या तरी पुस्तकाचं नाव घेऊन दोन-चार पानांचा आकडा उच्चारला आणि विरोध करायला सुरुवात केली. ना त्या पुस्तकाकडं कोणी लक्ष दिलं, ना त्या पानांकडं. आवाज टिपेला नेऊन ते बोलले तोपर्यंत विरोधक आक्रमक झाले. त्यात विद्वानांचा आवाज विरून गेला. मग ते खाली बसले. तोपर्यंत गिरिराज सिंह उठले आणि त्यांनी ओरडाआरडा केला. मग खरगे संतापले आणि त्यांच्या खास शैलीत गिरिराज यांना फटकारलं. खरगेंसमोर कोणी टिकत नाही, ते संतापले की समोरच्या व्यक्तीला गप्प बसण्याशिवाय पर्याय नसतो. गिरिराजही गप्प झाले. विद्वानांचा आवाज बंद झाला. हा सगळा गोंधळ सुरू असताना खरगे शांतपणे खाली बसले होते, त्यांनी ना विद्वानाकडं बघितलं ना उत्तर दिलं. अखेर त्यांनी त्यांच्या सदस्यांना शांत बसायला सांगितलं आणि नंतर उरलेलं भाषण पूर्ण केलं. खरगेंचं भाषण झाल्यावर विद्वानही सभागृहातून निघून गेले!

अचूक बाण...

लोकसभेत केंद्रीय संरक्षणमंत्री राजनाथ सिंह हे सरकारच्या वतीने किल्ला लढवताना दिसले. ना मोदी, ना शहा, ना कोणी इतर वरिष्ठ मंत्री... सत्ताधाऱ्यांचं नेतृत्व फक्त राजनाथ करत होते. त्यांच्या मागं सगळी शाऊटिंग ब्रिगेड. राहुल गांधींना मोदी आणि शहा यांना एकाचवेळी लक्ष्य करायचं होतं. सुरुवात 'इडियट'पासून झाली. काही क्षण भाजपच्या सदस्यांना काय करावं कळेना. राहुल गांधींनी मोदींचं नाव घेतलेलं नव्हतं. बिर्लांचीही अडचण झाली. कोणाचं नाव तर घेतलेलं नाही मग, राहुल गांधींना अडवणार कसं? त्यांनी राहुल गांधींना बोलू दिलं. इडियट शब्दाचा मारा इतक्या वेळा लागला की भाजपला सहन होईना, ते उसळले. तरीही बिर्ला शांत. नाइलाजाने हस्तक्षेप करून त्यांनी राहुल गांधींना थांबवलं. आरडाओरडा सुरूच होता. भाजपचे खासदार अनुराग ठाकूर, निशिकांत दुबे अस्वस्थ झाले होते. ते प्रत्युत्तर द्यायला आतुर होते. तेवढ्यात केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह आणि इतरांनी गोंधळ सुरू केला. राहुल गांधी रुसून खाली बसले. ते बोलायलाच तयार होईनात. भाजपच्या खासदारांना शांत करा मग, मी बोलतो, असं ते म्हणत होते. अखेर राजनाथ मध्ये पडले, त्यांनी सत्ताधाऱ्यांना खाली बसवलं. पण, त्यांना हे पटलं नाही. अनुराग ठाकुरांनी निशिकांत दुबेंकडं बघून, हे काय चाललं आहे, असे हातवारे केले. मग, दुबेंनी राजनाथ यांच्याकडं बोट दाखवलं. राजनाथ नको म्हणताहेत तर कशाला... खाली बसू, असं त्यांनी हातवारे करून प्रत्युत्तर दिलं. पण, अमित शहांचा राहुल गांधींनी उल्लेख केल्यावर सत्ताधाऱ्यांचा संयम सुटला, त्यांनी, माफी मागा, माफी मागा, अशा आरोळ्या ठोकायला सुरुवात केली. राजनाथ याचंही काही चालेना. ते केवळ समोर सुरू असलेला तमाशा बघत शांत बसून होते. शहांवर हल्लाबोल झाल्यानं सत्ताधाऱ्यांच्या बाकांवर अस्वस्थता पसरली होती. काही मिनिटं गोंधळ सुरू होता, तेवढ्यात शहांचे खास दूत अनिल बलुनी सभागृहात चिठ्ठी घेऊन आले. त्यांनी ती केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू यांना दिली. मग, गोंधळ टिपेला गेला. राजनाथ यांनी निशिकांत दुबेंना बोलावून घेतलं आणि 'पॉइंट ऑफ ऑर्डर'द्वारे राहुल गांधींविरोधात आक्षेप घ्यायला सांगितलं. सत्ताधारी असे डावपेच करत असल्याचं बघून काँग्रेसच्या सदस्यांनाही चेव चढला. ते राहुल गांधींना येऊन सल्ला देत होते. प्रियंका गांधींनी राहुल गांधींच्या कानात काही तरी सांगितलं. तिकडून महुआ मोईत्रा आल्या, त्यांनी एक चिठ्ठी राहुल गांधींच्या हातात दिली. काही तरी सल्ला दिला. दुसऱ्या बाजूने प्रणिती शिंदे आल्या, त्या प्रियंका गांधींना काही तरी सांगत होत्या. काँग्रेसवाले राहुल गांधींच्या भोवती गोळा झाले होते. हे सगळं होईपर्यंत अधूनमधून बिर्ला हस्तक्षेप करण्याचा प्रयत्न करत होते पण, कोणीच ऐकायला तयार नव्हतं. मग, सभागृह तहकूब झालं आणि त्याबरोबर राहुल गांधींचं भाषणही संपलं. पण, त्यांना पुढं बोलण्याची गरजच उरलेली नव्हती. त्यांना जे साध्य करायचं होतं ते अवघ्या काही मिनिटांत झालेलं होतं. राहुल गांधींचा बाण अचूक लागला होता, परिणामही तितकाच प्रभावी ठरला होता.

ही प्रेरणा कुणाकडून?

संसदेच्या आवारात विरोधक जी नाट्यमय निदर्शनं करत आहेत, त्यांची प्रेरणा त्यांनी जेन झींकडून घेतली की काय, हे कळत नाही. आजवर निदर्शनांचा ठरलेला पॅटर्न होता. मकरद्वारासमोर घोषणाबाजी करायची किंवा दोन-चार पावलांचा मोर्चा काढायचा. मध्यंतरी काँग्रेसने गॅस सिलिंडरच्या किमती महागल्यानंतर संसदेच्या आवारात आंदोलन केलं होतं, ते लक्षवेधी होतं. राहुल गांधी वगैरे मकरद्वाराच्या पायऱ्यांवर चहा पीत बसले होते. संसदेच्या दारात बसून केंद्र सरकारची टिंगल केली जात असल्याची टीका भाजपने केली होती. तृणमूल काँग्रेसचे खासदार कल्याण बॅनर्जींनी राज्यसभेचे

तत्कालीन सभापती जगदीप धनखड यांची नक्कल केली होती. बॅनर्जींची स्टँड-अप कॉमेडी चर्चेचा विषय ठरली होती. ही कॉमेडी धनखडांनी मनावर घेतली नाही. असो. मुद्दा हा की, यावेळी विरोधकांना केंद्र सरकारविरोधात आवाज उठवण्याच्या वेगवेगळ्या युक्त्या-क्लृप्त्या सुचलेल्या पाहायला मिळाल्या. केंद्रीय गृहमंत्री अमित शहांच्या विरोधात मोठमोठे फलक घेऊन काँग्रेस सदस्य दररोज घोषणाबाजी करत आहेत. काँग्रेसचे काही सदस्य हातात फलक धरून जोरदार घोषणाबाजी करत होते, त्यामधले एक मराठी खासदार एनडीएतील मराठी खासदारांना भिडले. एनडीएतील मराठी खासदार या काँग्रेसच्या मराठी खासदाराच्या मागे धावले. त्यांना काँग्रेसवाल्यांच्या हातून फलक हिसकावून घ्यायचा होता. जितका ते प्रयत्न करत होते तितका फलक त्यांच्या हातातून निसटून जात होता. काँग्रेसचे मराठी खासदार फलक फिरवत असल्याने एनडीएच्या खासदारांना चकवण्यात ते यशस्वी होत होते. शेवटी एनडीएच्या दोन खासदारांनी फलक हिसकावण्याचा प्रयत्नच सोडून दिला. काँग्रेसच्या सदस्यांनी अमित शहांना लक्ष्य केलं असलं तरी समाजवादी पक्षाचं लक्ष उत्तर प्रदेश असल्यानं त्यांनी राम मंदिराच्या देणगी अपहाराचा मुद्दा बाजूला होऊ दिलेला नाही. लोकसभेतही काँग्रेसचे सदस्य शहांच्या विरोधात घोषणाबाजी करत असताना सपचे सदस्य 'चंदा चोर, गद्दी छोड' अशा घोषणा देत होते. सपचे अध्यक्ष अखिलेश यादव यांनी उत्तर प्रदेश अचूकपणे अजेंड्यावर ठेवलेलं आहे. शुक्रवारी संसदेच्या आवारात खासदार पप्पू यादव पुजारी बनून आले होते. ही कल्पना यादव यांचीच होती पण, सपच्या सदस्यांनी ज्या पद्धतीने त्या नाटुकल्यामध्ये आपापली भूमिका केली ते पाहून येत्या आठवड्यातील नवी कल्पना काय असेल याची उत्सुकता आहे.

'नीट' परीक्षा, त्यामधली पेपरफुटी, सीजेपीचा जन्म, जंतरमंतरवरचे आंदोलन या सगळ्या घटनांनी सध्याचे देशभरातले चर्चाविश्व ढवळून निघाले आहे. तळ ढवळला गेल्यावर जसे आत साचलेले सगळे बाहेर येते, तसे वेगवेगळे विषय, मुद्दे पुढे येत आहेत. सीजेपीच्या आंदोलनाच्या निमित्ताने 'आरक्षण हटाओ' ही चर्चा कशी विनाकारण सुरू केली गेली; वैद्यकीय प्रवेश परीक्षेबाबत मूलभूत विचार का आणि कसा केला जाणे आवश्यक आहे; तसेच शिक्षणव्यवस्थेतच मुळातूनच बदल होणे का गरजेचे आहे, या मुद्द्यांची चर्चा या तीन लेखांमधून करण्यात आली आहे.

विद्यार्थी आंदोलनांचे संकुचितीकरण...

निखिल संजय रेखा अडसुळे

सन १८८२ मध्ये ताराबाई शिंदेंनी त्यांच्या 'स्त्रीपुरुष तुलना' या ग्रंथातून उघड केले होते की पितृसत्ता समाजात नैतिक संघर्ष निर्माण करून मूळ शोषणावरून लक्ष विचलित करते. आजच्या डिजिटल युगात त्यांचा हाच व्यवस्थात्मक परिवर्तनाचा इशारा एका नव्या, राष्ट्रीय आणि गुंतागुंतीच्या स्वरूपात आपल्यासमोर येत आहे. समाजमाध्यमांच्या गतिमान विश्वात एखादा विचार वाऱ्यासारखा पसरवणे सध्या सोपे झाले आहे. याचबरोबर तितकेच एखाद्या प्रामाणिक जनआंदोलनाची मूळ दिशा बदलून त्याचे संकुचितीकरण करणेही सहज झाले आहे.

देशातील तरुणांनी 'कॉक्रोच जनता पार्टी' (सीजेपी) च्या माध्यमातून उभे केलेले राष्ट्रीय जनआंदोलन याचे जिवंत उदाहरण होते. त्या आंदोलनात लिंग, जात, धर्म आणि प्रांताच्या भिंती बाजूला ठेवून हे तरुण एका व्यापक आणि सामायिक मुद्द्यावर रस्त्यावर उतरले होते. सन्मानाचा रोजगार मिळणे, राष्ट्रीय परीक्षांमधील पारदर्शकता, रखडलेले निकाल आणि देशभरात सुरू असलेले 'पेपरफुटीचे दुष्टचक्र' थांबवणे हा यामागचा मुख्य हेतू होता. प्रस्थापित राजकीय पक्षांना आणि त्यांच्या पारंपरिक अजेंड्याला पूर्णपणे नाकारून, सामान्य तरुणांनी स्वतःच्या बळावर उभे केलेले ते एक स्वतंत्र आणि 'ओपन-सोर्स' मॉडेल होते. परंतु, अवघ्या काही आठवड्यांतच या अथांग राष्ट्रीय ऊर्जेला 'आरक्षण हटाओ आंदोलन' (आरएचए) नावाच्या एका अत्यंत संवेदनशील आणि संकुचित वळणावर आणून सोडले आहे. ज्या लोकशाहीवादी, विकेंद्रित आणि 'ओपन-सोर्स' रचनेचा वापर करून तरुणांनी व्यवस्थात्मक न्यायाचा जाहीरनामा मांडला होता, त्याच रचनेचे रूपांतर आता अत्यंत हुशारीने एका 'क्लोज्ड-सोर्स' आणि पूर्वग्रहदूषित राजकीय अजेंड्यात केले आहे. गेल्या दोन-तीन दिवसात इन्स्टाग्राम रील्स आणि डिजिटल प्लॅटफॉर्म्सवर वेगाने आरक्षणविरोधी मोहीम चालवली जात आहे. हे पाहता सुशिक्षित तरुण एका छुप्या राजकीय सापळ्यात अडकत चालला असून त्यांची सामूहिक शक्ती विखुरली जाते, हे सत्य आहे.

राष्ट्रीय क्षितिजावरील आभास

कोणत्याही मोठ्या जनआंदोलनाची खरी ताकद ही तिच्या सर्वसमावेशकतेमध्ये असते. सीजेपीचे राष्ट्रीय आंदोलन ऐन भरात होते, तेव्हा व्यवस्थात्मक अपयश, ढासळलेली परीक्षा यंत्रणा आणि देशातील सरकारी व कॉर्पोरेट नोकऱ्यांचे घटते प्रमाण यावर तरुणांचा थेट आक्षेप होता. हा संताप राष्ट्रीय स्तरावरील धोरणात्मक अपयशाविरोधात होता. समाजातील एखाद्या विशिष्ट घटकाविरोधात नव्हता. मात्र, आज जाणीवपूर्वक एक 'सिस्टीमिक मिराज' म्हणजेच व्यवस्थात्मक आभास निर्माण केला जात आहे. एखादी व्यवस्था आपल्या कोट्यवधी तरुणांना पुरेशा आर्थिक संधी, दर्जेदार शिक्षण आणि रोजगार देण्यास असमर्थ ठरते, तेव्हा ती मूळ प्रश्नावरून लक्ष विचलित करण्यासाठी लोकांमध्ये अंतर्गत असुरक्षितता निर्माण करते. परिणामी, तरुण मुख्य व्यवस्थेला प्रश्न विचारण्याऐवजी, 'माझी संधी दुसऱ्याला का मिळाली?' या वैयक्तिक आकस आणि द्वेषाकडे वळवला जातो. अमेरिकेतील नागरी हक्क चळवळीचे अभ्यासक डब्ल्यू. ई. बी. डू बॉइस यांनी अशाच एका सामाजिक कोंडीचे विश्लेषण करताना म्हटले होते की, मुख्य व्यवस्था अपयशी ठरते, तेव्हा ती वंचित समूहांना एकमेकांचे शत्रू बनवते, जेणेकरून मूळ सत्तेला कोणीही जाब विचारणार नाही. आज भारतात नेमके हेच घडताना दिसत आहे.

येथे एक भौगोलिक आणि सामाजिक विडंबन पाहायला मिळत आहे. उत्तर भारतातील प्रयागराज आणि कोटामधील विद्यार्थ्यांच्या आणि पश्चिम भारतातील पुण्याच्या विद्यार्थ्यांच्या आर्थिक अडचणी, नोकऱ्यांची टंचाई आणि पेपरफुटीचे दुःख अगदी सारखेच आहे. असे असतानाही, डिजिटल तटबंदीमुळे हे तरुण राष्ट्रीय स्तरावर एकत्र येण्याऐवजी प्रादेशिक आणि जातीय वादात विभागले जाण्याची दृश्ये दिसायला लागली आहेत. देशातील ढासळत्या आर्थिक आणि औद्योगिक क्षेत्रातील रोजगाराच्या कमतरतेवर प्रश्न विचारण्याऐवजी आरक्षणाचा जुना वाद पुन्हा एकदा उकरून काढण्यात आला आहे. जे तरुण कालपर्यंत एकाच अभ्यासिकांमध्ये बसून एकत्र रोजगार धोरण मागत होते, तेच आज आरक्षणाच्या बाजूने आणि विरोधात अशा दोन छावण्यांमध्ये पुन्हा विभागले गेले आहेत. या अंतर्गत संघर्षामुळे भारताच्या युवा पिढीची सामूहिक ताकद तर नष्ट होतच आहे, पण त्यासोबतच मुख्य प्रश्न पूर्णपणे बाजूला पडत चालला आहे.

अल्गोरिदमची अदृश्य तटबंदी

हे जे काही समाजमाध्यमांवर राष्ट्रीय स्तरावर घडत आहे, ते आपोआप घडलेले नाही, तर त्यामागे डिजिटल विश्वाचे गणितावर आधारित नियोजन आहे. याला आपण 'अल्गोरिदमची अदृश्य तटबंदी' म्हणू शकतो. आपण ज्या इंटरनेटवर वावरतो, तिथे शांत, संयमी आणि अभ्यासू विचारांपेक्षा रागाला, भीतीला आणि द्वेषाला जास्त महत्त्व दिले जाते. तरुण आरक्षणावर टीका करणारे किंवा समर्थन करणारे रिल्स पाहतात, तेव्हा अल्गोरिदम त्यांना त्याच पद्धतीचे रील्स वारंवार सुचवू लागतात. यालाच आपण वैचारिक बंदिस्त खोली (इको चेंबर) म्हणू शकतो. इथे माणसाला स्वतःच्याच मताचा प्रतिध्वनी ऐकू येऊन त्याचे पूर्वग्रह अधिक घट्ट होतात. या प्रक्रियेत डेटा, वास्तव किंवा तथ्यांचा कोणताही संबंध नसतो. केवळ १५ ते ३० सेकंदांच्या रील्स किंवा मीम्सच्या माध्यमातून तरुणांच्या मनांतील भविष्याबद्दलची भीती आणि आर्थिक असुरक्षितता जागी केली जाते. प्रख्यात लेखक जेम्स बाल्डविन यांनी नोंदवले होते की, सत्ताधारी वर्ग नेहमीच असे भावनिक मुद्दे जिवंत ठेवतो, जेणेकरून लोकांना त्यांच्या खऱ्या शोषणाचे आणि गरिबीचे मूळ कारण कधी समजूच नये. आज आरक्षणाचा मुद्दा अगदी तशाच पद्धतीने वापरला जात आहे.

देशातील नोकऱ्यांची संख्या दिवसेंदिवस घटत चालली असून आणि राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थांची अवस्था दयनीय आहे. हा मूळ रोग आहे. रोजगार निर्मितीचे ठोस राष्ट्रीय धोरण आखले जात नाही, तोपर्यंत आरक्षण बंद केल्याने किंवा त्यात बदल केल्याने रात्रीतून देशात लाखो नवीन नोकऱ्या निर्माण होणार नाहीत. यंत्रणेला मिळालेल्या सुरक्षित पळवाटेमुळे सर्वात जास्त फायदा कोणाचा होतो? देशातील तरुण बेरोजगारी आणि पेपरफुटीवर प्रश्न विचारतो, तेव्हा प्रशासनाला उत्तर देणे कठीण जाते. पण, त्याच तरुणांना आरक्षणाच्या वादात गुंतवून ठेवले, तर मुख्य व्यवस्था आपल्या जबाबदारीतून पूर्णपणे मोकळी होते. तरुण आपापसात लढत राहतील आणि मूळ अपयशावर कोणीही बोट ठेवणार नाही. हा यामागचा खरा डावपेच तरुणांनी समजून घेतला पाहिजे. हा लेख मी टीका किंवा हेतूंवर शंका निर्माण करण्यासाठी लिहिला नाही, तर माझ्या पिढीला वरील छुप्या राजकीय सापळ्याची पूर्वकल्पना देण्यासाठी हा 'प्रतिबंधात्मक' इशारा आहे.

तरुणांचा उत्साह आणि बदल घडवण्याची त्यांची इच्छा अगदी प्रामाणिक आहे. पण त्याचा वापर कोणीतरी स्वतःचे अपयश लपवण्यासाठी करत आहे, याचे भान राष्ट्रीय स्तरावर ठेवणे गरजेचे आहे. यावर पहिला उपाय म्हणजे 'विवेक'. समाजमाध्यमांवर कोणताही ट्रेंड जेव्हा अचानक वेगाने पुढे येतो, तेव्हा तरुणांनी स्वतःला एक प्रश्न विचारला पाहिजे–'या वादामुळे नक्की कोणाचे अपयश लपवले जात आहे?' आपण हा प्रश्न विचारत नाही, तोपर्यंत आपण केवळ कोणाच्या तरी अजेंड्यातील प्यादे बनून राहू. दुसरा मार्ग म्हणजे मूळ मुद्द्यांवर ठाम राहणे. आरक्षणाचा मुद्दा हा कायदेशीर आणि घटनात्मक प्रक्रियेचा भाग आहे, त्यावर योग्य ठिकाणी चर्चा करायलाच हवी. परंतु, सध्या विद्यार्थ्यांच्या आंदोलनाचा रोख हा रोजगार, दर्जेदार आणि परवडणारे शिक्षण, आणि राष्ट्रीय परीक्षांमधील पारदर्शकता यावरच असायला हवा.

कोणत्याही राष्ट्राचे भवितव्य हे तिथल्या तरुणांच्या वैचारिक प्रगतीवर अवलंबून असते. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी भारतीय राज्यघटनेच्या माध्यमातून आपल्याला 'बंधुभाव' हा केवळ एक शब्द म्हणून नाही, तर लोकशाहीचा मुख्य पाया म्हणून दिला होता. बाबासाहेबांच्या मते, जोपर्यंत वंचित आणि तरुण घटकांमध्ये सामायिक सामाजिक उद्दिष्टांसाठी बंधुभाव निर्माण होत नाही, तोपर्यंत देशाचे राजकीय आणि आर्थिक स्वातंत्र्य अपूर्ण आहे. सीजेपीच्या आंदोलनाने दाखवून दिले होते की, भारतीय तरुणांमध्ये लिंग-जात-धर्म आणि प्रांताच्या भिंती विसरून एकत्र यायची आणि व्यवस्थेला जाब विचारण्याची ताकद आहे. ही ताकद 'आरक्षण विरोधी' मोहिमेसारख्या संकुचित मुद्द्यांमध्ये अडकून, तो बंधुभाव संपवून वाया जाऊ देणे परवडणारे नाही. तरुणांनी स्वतःचा या भावनिक आणि राजकीय सापळ्यातून बचाव केला पाहिजे. जोपर्यंत प्रत्येक हाताला काम आणि प्रत्येक विद्यार्थ्याला न्याय मिळत नाही, तोपर्यंत व्यवस्थात्मक प्रश्नांवर आपला आवाज बुलंद ठेवला पाहिजे. तरच या देशातील युवा शक्ती खऱ्या अर्थाने बदल घडवू शकेल, अन्यथा, जसे आजवर होत आले तसेच, ते केवळ राजकीय बुद्धिबळावरील प्यादे बनून राहतील.

सीनियर रिसर्च स्कॉलर, कायदेविषयक,
समष्टी-आर्थिक आणि घटनात्मक मुद्द्यांचे विश्लेषक
nikhil15adsule@gmail.com

परीक्षेपलीकडचे 'नीट'चे संकट

प्रज्ञा शिदोरे

नीटच्या परीक्षांच्या मुद्द्यावर अखेर केंद्रीय शिक्षणमंत्री धर्मेंद्र प्रधान यांना राजीनामा द्यावा लागला. पण ही घटना केवळ एका मंत्र्याच्या राजीनाम्याची नाही. भारतात शिक्षणाची जी अतिकेंद्रीकृत व्यवस्था उभी राहिली आहे, तिच्या मर्यादा यानिमित्ताने पहिल्यांदाच इतक्या स्पष्टपणे समोर आल्या आहेत.

शिक्षणाकडे आपण आज मुख्यतः नोकरी, करिअर किंवा प्रवेशपरीक्षांच्या दृष्टीने पाहतो. पण महात्मा गांधींच्या मांडणीमध्ये समाजात जबाबदारीने जगणारा, स्वतः विचार करणारा आणि इतरांविषयी संवेदनशील असणारा नागरिक घडवणे हे शिक्षणाचे काम. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या दृष्टीने शिक्षण म्हणजे वंचित समाजाला समान संधी देणारे सर्वात प्रभावी साधन. म्हणूनच त्यांनी 'शिका, संघटित व्हा, संघर्ष करा' हा मंत्र दिला. शिक्षणामुळे माणूस स्वतःचे आयुष्य बदलू शकतो, समाजात आपले स्थान निर्माण करू शकतो, यावर त्यांचा विश्वास होता. या पार्श्वभूमीवर सध्याच्या 'नीट'च्या आंदोलनाकडे बघायला हवे.

'नीट' सुरू करताना सरकारने एक साधा युक्तिवाद मांडला होता. देशभर एकच परीक्षा असेल, तर सगळ्यांना समान संधी मिळेल. अनेक प्रवेशपरीक्षा द्याव्या लागणार नाहीत. प्रक्रिया अधिक पारदर्शक होईल. हे ऐकायला योग्य वाटते. पण महाराष्ट्र, तमिळनाडू, केरळ, बिहार किंवा ईशान्य भारतातील राज्यांमध्ये शालेय शिक्षण एकसारखे नाही. अभ्यासक्रम, शिकवण्याची भाषा, पद्धत, शिक्षकांची उपलब्धता, आर्थिक परिस्थिती वेगवेगळी आहे. अशा परिस्थितीत सगळ्या विद्यार्थ्यांना एकाच प्रश्नपत्रिकेने मोजणे म्हणजे समानता नव्हे. उलट आधीपासून असलेली विषमता यामुळे अधिकच वाढते.

गेल्या काही वर्षांत शाळांपेक्षा कोचिंग क्लास अधिक महत्त्वाचे बनले. डॉक्टर व्हायचे असेल तर चांगल्या कोचिंग क्लासमध्ये प्रवेश मिळणे हे महत्त्वाचे ठरू लागले. लाखो कुटुंबे मुलांच्या तयारीसाठी वर्षानुवर्षे मोठा खर्च करू लागली. विरोधी पक्षनेते राहुल गांधी यांच्या म्हणण्यानुसार, देशातील कुटुंबे 'नीट'साठी मिळून जवळपास केंद्र सरकारच्या वार्षिक शिक्षण अर्थसंकल्पाइतकाच खर्च करतात.

याचा सर्वात मोठा फटका अशा विद्यार्थ्यांना बसतो, ज्यांच्याकडे पैसा नाही; पण क्षमता आहे. ज्यांचे पालक कोट्याला किंवा हैदराबादला पाठवू शकत नाहीत. ज्यांना लाखो रुपयांचे कोचिंग परवडत नाही. अशा विद्यार्थ्यांसाठी स्पर्धा परीक्षा ही संधी असते; पण तीच पैशांवर अवलंबून राहू लागली, तर शिक्षणाचे मूळ उद्दिष्टच हरवते. बाबासाहेब आंबेडकरांनी शिक्षणाला सामाजिक न्यायाचे साधन मानले होते. आज तेच शिक्षण हळूहळू आर्थिक ताकदीची स्पर्धा बनत चालले आहे.

आपण संपूर्ण देशाची प्रवेशव्यवस्था एका परीक्षेवर उभी केली आहे. त्यामुळे त्या एका परीक्षेत बिघाड झाला की सगळी व्यवस्था कोलमडते. लाखो विद्यार्थ्यांना पुन्हा परीक्षा द्यावी लागणार का, प्रवेश कधी होणार, निकालावर विश्वास ठेवायचा का, असे प्रश्न निर्माण होतात. एका संस्थेची चूक संपूर्ण देशाला भोवते. याचा अर्थ दोष केवळ अंमलबजावणीत नाही; व्यवस्थेच्या रचनेतही आहे.

या प्रश्नाचा आणखी एक महत्त्वाचा पैलू आहे. आपल्या राज्यघटनेने भारताची रचना संघराज्य म्हणून केली आहे. काही विषयांवर केंद्र सरकारची भूमिका महत्त्वाची असली, तरी राज्यांनाही स्वतंत्र अधिकार आणि जबाबदाऱ्या आहेत. शिक्षण हा त्यापैकीच एक विषय आहे. प्रत्येक राज्याची भाषा, समाजरचना, आर्थिक परिस्थिती, शैक्षणिक परंपरा आणि गरजा वेगळ्या आहेत. त्यामुळे शिक्षणाबाबतचे निर्णय घेताना राज्यांचा सहभाग असणे ही केवळ प्रशासकीय गरज नाही; ती राज्यघटनेमधली अपेक्षा आहे. दुर्दैवाने गेल्या काही वर्षांत आपण नेमकी उलटी दिशा घेतलेली दिसते. शिक्षणातील जवळपास प्रत्येक महत्त्वाचा निर्णय हा केंद्राकडून घेतला गेला आहे. परीक्षा केंद्राची, प्रवेशप्रक्रिया केंद्राची, धोरण केंद्राचे आणि अंमलबजावणीची जबाबदारी मात्र राज्यांची. शाळा राज्यांनी चालवायच्या, शिक्षक राज्यांनी भरती करायचे, विद्यार्थ्यांच्या अडचणी राज्यांनी सोडवायच्या; पण त्या विद्यार्थ्यांचे भविष्य ठरवणाऱ्या परीक्षेत राज्यांचा आवाज जवळपास नसावा, ही परिस्थिती कोणत्याही संघराज्य व्यवस्थेला शोभणारी नाही. राज्यांवर जबाबदारी आणि केंद्राकडे अधिकार, असे हे असमतोल चित्र सध्या तयार झाले आहे.

तमिळनाडू आणि केरळसारख्या राज्यांनी सुरुवातीपासून 'नीट'ला विरोध केला. तमिळनाडूमध्ये अनेक दशकांपासून सरकारी शाळांमधून आणि ग्रामीण भागातून डॉक्टर घडावेत यासाठी वेगळी प्रवेशव्यवस्था विकसित झाली होती. 'नीट' लागू झाल्यानंतर ग्रामीण आणि राज्य मंडळाच्या विद्यार्थ्यांचे प्रमाण कमी झाल्याचा मुद्दा त्या राज्याने सातत्याने मांडला. एम. के. स्टॅलिन यांनी 'द हिंदू'मधील आपल्या लेखात भारतात शिक्षण ही फक्त परीक्षा घेण्याची प्रक्रिया नाही. ते समाजाशी, भाषेशी, संस्कृतीशी आणि स्थानिक वास्तवाशी जोडलेले आहे. त्यामुळे संपूर्ण देशासाठी एकच उपाय योग्य ठरेल, असा आग्रह धरणे चुकीचे आहे, असे म्हटले होते. हा मुद्दा तमिळनाडूपुरता मर्यादित नाही; तो भारताच्या संघराज्य व्यवस्थेच्या भवितव्याशी जोडलेला आहे.

कोणतीही सार्वजनिक संस्था कमकुवत झाली की तिची जागा लगेच दुसरी व्यवस्था घेते. आज विद्यार्थ्यांचा विश्वास शाळेपेक्षा कोचिंग क्लासवर अधिक आहे. अभ्यासापेक्षा टेस्ट सीरिज महत्त्वाची झाली आहे. मेहनतीपेक्षा कोणता क्लास, कोणत्या नोट्स, कोणते नेटवर्क याला जास्त किंमत आली आहे. प्रश्नपत्रिका फुटल्याच्या प्रत्येक घटनेनंतर अफवांचे बाजार सुरू होतात, अनधिकृत जाळी सक्रिय होतात आणि विद्यार्थ्यांची असुरक्षितता वाढते. सार्वजनिक संस्थांवरचा विश्वास कमी झाला की अशा समांतर व्यवस्था तयार होतात. त्या अधिक महाग असतात, कमी उत्तरदायी असतात आणि सर्वांत महत्त्वाचे म्हणजे त्या विषमता वाढवतात.

म्हणूनच या संकटावरचा उपाय आणखी केंद्रीकरण असू शकत नाही. आणखी एक संस्था, आणखी एक सुरक्षा यंत्रणा किंवा आणखी एक नियम करून हा प्रश्न सुटणार नाही. भारताला राष्ट्रीय दर्जाचे निकष नक्कीच हवेत. देशात कुठल्याही राज्यात शिकलेल्या विद्यार्थ्याला उच्च शिक्षणाची समान संधी मिळायला हवी. पण त्यासाठी प्रत्येक निर्णय दिल्लीनेच घ्यावा, असे नाही. राज्यांना त्यांच्या सामाजिक वास्तवानुसार प्रवेशप्रक्रियेबाबत अधिक स्वायत्तता देणे, त्यांचे अनुभव ऐकून घेणे आणि केंद्राने समन्वयकाची भूमिका बजावणे, हा अधिक शाश्वत मार्ग ठरू शकतो. संघराज्य व्यवस्था म्हणजे विस्कळीतपणा नव्हे; तर ती जबाबदाऱ्यांची योग्य विभागणी आहे.

या सगळ्या चर्चेचा शेवट पुन्हा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांकडेच येतो. त्यांनी राज्यघटना लिहिली, पण त्याहून महत्त्वाचे म्हणजे त्यांनी 'घटनात्मक नीती'चा आग्रह धरला. सत्ता एका ठिकाणी जमा करणे, प्रत्येक प्रश्नाचे उत्तर केंद्रीकरणात शोधणे किंवा राज्यांवर अविश्वास दाखवणे, ही घटनात्मक नीती नाही. लोकशाही म्हणजे अधिकारांचे विकेंद्रीकरण, विविधतेचा स्वीकार आणि संस्थांवर विश्वास ठेवण्याची संस्कृती. भारतासारख्या देशात ही मूल्ये जपली, तरच शिक्षण खऱ्या अर्थाने समान संधी देणारे साधन राहील.

धर्मेंद्र प्रधान यांच्या राजीनाम्याने एका अध्यायाचा शेवट झाला असेल. पण खरी परीक्षा आता सुरू होते. आपण या घटनेकडे केवळ एका मंत्र्याच्या अपयशाप्रमाणे पाहणार आहोत, की आपल्या शिक्षणव्यवस्थेचा आणि संघराज्य व्यवस्थेचा गंभीरपणे फेरविचार करणार आहोत, हे आपल्याला ठरवायचे आहे? कारण भारताची ताकद 'एक देश, एक परीक्षा' या कल्पनेत नाही. ती विविध राज्यांना, विविध समाजांना आणि विविध वास्तवांना समान सन्मान देणाऱ्या राज्यघटनेत आहे. शिक्षणाने जर समान संधी द्यायची असेल, तर त्याची सुरुवात प्रश्नपत्रिकेच्या सुरक्षेपासून नव्हे, तर राज्यघटनेतल्या संघराज्याच्या आत्म्याला पुन्हा स्वीकारण्यापासून व्हायला हवी.

सल्लागार, ग्रीनअर्थ सोशल डेव्हलपमेंट कन्सल्टिंग प्रा. लि.
pradnya.shidore@gmail.com

'नीट' पेपरफुटीप्रकरणी आंदोलनानंतर शिक्षणमंत्र्यांचा राजीनामा झाला. नवे शिक्षणमंत्री आले. पण त्यामुळे मूळ प्रश्न सुटणार आहे का? शिक्षणव्यवस्थेतच आमूलाग्र सुधारणा होण्याची गरज आहे याचा विचार आपण केव्हा करणार?

डॉ. आशीषराव देशमुख

पेपरफुटीवरून देशभरात सुरू असलेल्या तरुण विद्यार्थ्यांच्या आंदोलनाच्या पार्श्वभूमीवर केंद्रीय शिक्षणमंत्री धर्मेंद्र प्रधान यांनी अखेर राजीनामा दिला. 'जेन झी' म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या नव्या पिढीची मागणी पूर्ण झाली. प्रल्हाद जोशी यांच्याकडे शिक्षण खात्याचा अतिरिक्त कार्यभार सोपविण्यात आला आहे. परीक्षा पद्धतीतील सुधारणांसाठी पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी इन्फोसिसचे सहसंस्थापक नंदन निलेकणी यांच्या नेतृत्वाखाली उच्चाधिकार कृती दलाची (टास्क फोर्स) स्थापना केली आहे. टास्क फोर्सची स्थापना ही अभिनंदनीय बाब आहे. विद्यार्थ्यांच्या भवितव्यासाठी सातत्याने विविध उपाय योजत असून त्यांच्या भविष्याशी जे खेळतील त्यांना तुरुंगात जावे लागेल, असे पंतप्रधानांनी सांगितले आहे. प्रश्नपत्रिकाफुटीच्या विरोधातील कायदा अधिक कठोर करण्याच्या उद्देशाने केंद्र सरकारचे अधिक कडक तरतुदी असलेले विधेयक प्रभावी ठरणार आहे.

सद्य परिस्थितीतील घडामोडींवर काही महत्त्वाच्या सकारात्मक सूचना कराव्याशा वाटल्या, हे या लेखाचे प्रयोजन.

केंद्रीय शिक्षणमंत्र्यांच्या पदत्यागानंतर देशातील अनेक तरुणांनी, विशेषतः 'जेन झी'मधील विद्यार्थ्यांनी व्यक्त केलेला आनंद समजण्यासारखा आहे. मात्र, केवळ मंत्री न बदलता भारताच्या शिक्षण व्यवस्थेत आमूलाग्र सुधारणांची गरज आहे.

देशातील सुमारे साडेचार कोटी मुलांपैकी तीन ते सहा वर्षे वयोगटातील मुले अंगणवाड्यांमध्ये येतात. तरीही हा आकडा त्या वयोगटातील केवळ ५६ टक्के मुलांचाच आहे. लाखो गरीब मुलांसाठी अंगणवाडी हेच शिक्षणाचे पहिले दार असते. आजही अनेक अंगणवाड्या पोषण आहार देणारी केंद्रे म्हणूनच कार्यरत आहेत; त्या दर्जेदार पूर्वप्राथमिक शिक्षणाची केंद्रे होणे गरजेचे आहे. पूर्वप्राथमिक शिक्षणाची जबाबदारी महिला व बालविकास मंत्रालय आणि शिक्षण मंत्रालय यांच्यात विभागली गेल्याने या खात्यांमधील समन्वय वाढवून, एकात्मिक बालशिक्षण व्यवस्थेला गती देण्याची गरज आहे.

पाया कमजोर असेल तर त्याचे परिणाम आयुष्यभर भोगावे लागतात. भाषिक आणि अंकगणितातील मूलभूत कौशल्यांशिवाय शाळेत प्रवेश घेणारी मुले पुढील संपूर्ण शिक्षणात मागे पडू शकतात. याचा सर्वाधिक फटका सामाजिक व आर्थिकदृष्ट्या वंचित घटकांना बसणे साहजिक आहे. भारतात जवळपास १४ लाख अंगणवाड्या आहेत. त्यामुळे नवीन इमारती उभारण्यापेक्षा विद्यमान अंगणवाड्यांना उत्कृष्ट शिक्षणकेंद्रांमध्ये रूपांतरित करणे अधिक महत्त्वाचे ठरू शकते.

भारताच्या उच्च शिक्षण व्यवस्थेत चार कोटींहून अधिक विद्यार्थी शिक्षण घेत आहेत. मात्र आयआयटी, एनआयटी, आयआयएसईआर आणि काही निवडक केंद्रीय व खासगी विद्यापीठे वगळता बहुतेक संस्थांमध्ये दर्जाचा गंभीर प्रश्न आहे. उच्च शिक्षण संस्थांपैकी १३.६ टक्के संस्थांकडेच वैध मानांकन (नॅक) आहे. याकडेसुद्धा गांभीर्याने बघता येईल. विशेष म्हणजे, गरीब विद्यार्थ्यांना शिक्षण देणाऱ्या संस्थांमध्ये पायाभूत सुविधा, शिक्षक आणि शैक्षणिक साहाय्य पुरवून आवश्यक सुविधा उपलब्ध करता येईल, जेणेकरून शिक्षणाचा दर्जा उंचावेल.

डॉ. के. राधाकृष्णन समितीने मानांकन व्यवस्थेतील (नॅक) व्यापक सुधारणांची शिफारस जानेवारी २०२४ मध्ये केली होती. ती पूर्णपणे अमलात आणावी. शिक्षकांची कमतरता ही एक मोठी समस्या आहे. कोणतीही शिक्षणव्यवस्था तिच्या शिक्षकांच्या गुणवत्तेपेक्षा अधिक उंची गाठू शकत नाही. पूर्वीच्या शिक्षक प्रशिक्षण अभियानाची पुनर्रचना झाल्यानंतर शिक्षकांच्या व्यावसायिक विकासाच्या प्रक्रियेला मोठा फटका बसला. सप्टेंबर २०२३ मध्ये १५ लाख शिक्षकांना प्रशिक्षण देण्याच्या महत्त्वाकांक्षी उद्दिष्टासह 'मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम' सुरू करण्यात आला. या कार्यक्रमाच्या प्रभावी अंमलबजावणीसाठी अधिक वेगाने आणि तातडीने प्रयत्न होण्याची गरज आहे.

आंतरराष्ट्रीय कामगार संघटना (आयएलओ) आणि इन्स्टिट्यूट फॉर ह्यूमन डेव्हलपमेंटच्या अहवालानुसार, भारतात जितका युवक अधिक शिक्षित असेल तितकी त्याच्या बेरोजगार राहण्याची शक्यता वाढते. शासनाद्वारे रोजगारासाठी नव्या योजना सुरू करण्यात आल्या असून, त्याचा फायदा नक्कीच होताना दिसत आहे. परंतु दरवर्षी लाखो पदवीधर रोजगाराच्या कक्षेत प्रवेश करतात. त्यांच्या हातात पदवी असते; पण उद्योगविश्वाला आवश्यक असलेली कौशल्ये आणि प्रत्यक्ष कामाचा अनुभव नसतो. उद्योगांना कुशल मनुष्यबळ मिळत नाही, तर युवकांना रोजगार मिळत नाही. दोन्ही बाजूंची तक्रार बघता, यावर उपाय म्हणून विद्यापीठ अनुदान आयोगाच्या (यूजीसी) 'अप्रेंटिसशिप एम्बेडेड डिग्री प्रोग्राम' (एईडीपी) अंतर्गत पदवी अभ्यासक्रमांमध्ये अप्रेंटिसशिपचा समावेश करून कौशल्याधारित शिक्षणाला चालना देण्याचा प्रयत्न करण्यात आला आहे. देशात सुमारे ५० लाख अप्रेंटिसना प्रशिक्षण देण्याची क्षमता आहे. राष्ट्रीय अप्रेंटिसशिप प्रोत्साहन योजना (एनएपीएस) आणि राष्ट्रीय अप्रेंटिसशिप प्रशिक्षण योजना (एनएटीएस) या दोन्ही योजनांच्या अंतर्गत दरवर्षी सुमारे १७ लाख अप्रेंटिसना प्रशिक्षण दिले जाते. त्यामुळे रोजगारक्षमतेत वाढ करण्यासाठी अभ्यासक्रमात वारंवार बदल करण्यापेक्षा अप्रेंटिसशिपच्या संधींचा मोठ्या प्रमाणावर विस्तार करणे अधिक परिणामकारक ठरू शकते.

प्रवेश-परीक्षांचे स्तोम!

प्रवेश परीक्षांबद्दलचा आपला अति-आग्रह हेच अंतिम आव्हान आहे. प्रवेश परीक्षांभोवती निर्माण झालेली कोचिंग संस्कृती चिंताजनक आहे. आज अनेक शाळा विद्यार्थ्यांना शिक्षण देण्यापेक्षा कोचिंगसाठी तयार करतात आणि कोचिंग संस्था केवळ परीक्षा उत्तीर्ण होण्यासाठी प्रशिक्षण देतात. परिणामी जिज्ञासा, सर्जनशीलता, चिकित्सक विचार, संवादकौशल्य आणि सहकार्याची वृत्ती यांसारखी २१व्या शतकातील अत्यावश्यक कौशल्ये मागे पडत आहेत. यावरदेखील लक्ष देणे आवश्यक आहे.

राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा रद्द करणे हा उपाय नाही. मात्र विद्यार्थ्यांचे भविष्य केवळ एका परीक्षेवर अवलंबून राहू नये. सातत्यपूर्ण मूल्यमापन, कौशल्याधारित मूल्यांकन, प्रकल्प, नवोपक्रम आणि समस्या सोडविण्याची क्षमता यांनाही प्रवेश प्रक्रियेत योग्य स्थान मिळाले पाहिजे.

भारताकडे दूरदृष्टी असलेले 'राष्ट्रीय शिक्षण धोरण २०२०' आहे. कमतरता धोरणात नाही; प्रभावी अंमलबजावणी केल्यास चांगले परिणाम दिसून येतील. त्यासाठी तीन गोष्टींना सर्वोच्च प्राधान्य द्यावे लागेल– अंगणवाड्यांचे दर्जेदार शिक्षणकेंद्रांमध्ये रूपांतर, उच्च शिक्षणाचा दर्जा उंचावण्यासाठी मानांकन व शिक्षक विकासावर भर, आणि शिक्षणाला रोजगाराशी जोडण्यासाठी अप्रेंटिसशिप व प्रवेश परीक्षा व्यवस्थेत सुधारणा.

भारताची तरुण लोकसंख्या ही देशाची सर्वात मोठी ताकद ठरू शकते; पण योग्य सुधारणा न झाल्यास तीच सर्वात मोठी गमावलेली संधीही ठरू शकते. शिक्षणमंत्र्यांसह देशाने आपल्या शिक्षण व्यवस्थेत आवश्यक, धाडसी आणि आमूलाग्र बदल करायला हवा. शिक्षण व्यवस्था बदलली तरच देशाचे भविष्य बदलू शकते.

भाजपचे आमदार (सावनेर-कळमेश्वर विधानसभा क्षेत्र)
ashish_d@hotmail.com

लोकमत सारांश
थोडक्यात... पण सखोल

एआय अपडेट

एआय करतो हॅकिंग; धोक्याची घंटा आहे...

अब्जावधी डॉलरचे स्टार्टअप हॅक केले... पुढे काय?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आता केवळ माणसांच्या सूचनांवर काम करणारे साधन राहिलेले नाही, तर ती स्वतः निर्णय घेऊन सायबर हल्लेही करू शकते, याचा धक्कादायक अनुभव नुकताच समोर आला आहे. ओपनएआयच्या (OpenAI) प्रगत AI मॉडेलवर आधारित एका स्वायत्त AI एजंटने सुरक्षा चाचणीदरम्यान अब्जावधी डॉलर मूल्य असलेल्या हगिंग फेस (Hugging Face) या टेक स्टार्टअपची प्रणाली स्वतःहून हॅक केली. या घटनेने जगभरातील तंत्रज्ञान कंपन्या आणि सरकारांची चिंता वाढवली असून, सायबर सुरक्षेच्या क्षेत्रात नव्या धोक्याची घंटा वाजली आहे.

एआय इमेज

मानवी हस्तक्षेपाशिवाय घडला सायबर हल्ला

सामान्यतः सायबर हल्ल्यांमागे हॅकर्स असतात. मात्र, या प्रकरणात कोणत्याही मानवी हस्तक्षेपाशिवाय AI एजंटने स्वतःच प्रणालीतील त्रुटी शोधल्या, त्यांचा फायदा घेतला आणि हल्ला केला. विशेष म्हणजे, या एजंटने हगिंग फेसबरोबरच ओपनएआयच्या सुरक्षा व्यवस्थेतील त्रुटींचाही वापर केला. ओपनएआयनेही हा प्रकार 'अभूतपूर्व' असल्याचे मान्य केले असून, भविष्यात अधिक सक्षम AI मॉडेल्समुळे अशा घटना वाढू शकतात, असा इशारा दिला आहे.

'रेड टीमिंग'दरम्यान घडली घटना

ही घटना 'रेड टीमिंग' नावाच्या सुरक्षा चाचणीदरम्यान घडली. अशा चाचण्यांमध्ये AI प्रणालीतील कमतरता शोधण्यासाठी नियंत्रित वातावरणात बनावटी सायबर हल्ले केले जातात. सामान्यतः या चाचण्या पूर्णपणे वेगळ्या आणि सुरक्षित संगणकीय वातावरणात होतात, जेणेकरून AI बाहेरील प्रणालींना हानी पोहोचवू शकणार नाही. मात्र, या वेळी AI एजंटने सुरक्षा मर्यादा ओलांडत त्या नियंत्रित वातावरणातून बाहेर पडण्यात यश मिळवले.

हगिंग फेस का बनले लक्ष्य?

AI आणि मशीन लर्निंग क्षेत्रातील अग्रगण्य कंपनी असलेल्या हगिंग फेसकडे 'Exploit Gym' नावाची विशेष चाचणी प्रणाली आहे. या प्रणालीद्वारे AI एजंट प्रत्यक्ष संगणकीय प्रणालीतील त्रुटी शोधून त्यांचा फायदा घेण्याची क्षमता तपासली जाते. याच प्रणालीपर्यंत पोहोचण्यासाठी AI एजंटने सातत्याने विविध मार्गांचा प्रयत्न केला आणि अखेरीस त्यात यश मिळवले.

सायबर सुरक्षेतील नवा पेच

हल्ल्याचा तपास करण्यासाठी हगिंग फेसने इतर प्रगत AI मॉडेल्सची मदत घेण्याचा प्रयत्न केला. मात्र, GPT-5.6 Sol आणि Claude Fable 5 यांसारख्या मॉडेल्समध्ये सायबर हल्ले रोखण्यासाठी कडक सुरक्षा मर्यादा (Guardrails) असल्याने त्यांनी हे काम करण्यास नकार दिला. तज्ज्ञांच्या मते, या सुरक्षा उपायांमुळे गैरवापर तर रोखला जातो, पण त्याचबरोबर वैध सायबर सुरक्षा संशोधन आणि संरक्षणात्मक कामांनाही अडथळा निर्माण होतो.

AIच्या नव्या युगाची चाहूल

या घटनेने AI क्षेत्रासमोर एक महत्त्वाचा प्रश्न उभा केला आहे—AIला अधिक सक्षम बनवताना त्यावर किती नियंत्रण ठेवायचे? स्वायत्त AI एजंट्सची क्षमता झपाट्याने वाढत असताना सायबर सुरक्षेसाठी नवे नियम, अधिक मजबूत संरक्षण व्यवस्था आणि जबाबदार AI विकासाची गरज आता अधिक तीव्रतेने जाणवू लागली आहे.

जाणून घ्या

AI मॉडेल म्हणजे फक्त चॅटबॉट नाही.

पुढच्या पिढीतील AI एजंट संगणक, इंटरनेट, सॉफ्टवेअर आणि रोबोट्स स्वतः हाताळू शकतात.

त्यामुळे त्यांच्यासाठी पारंपरिक सायबर सुरक्षा उपाय अपुरे ठरू शकतात.

पुढे काय?

- अधिक मजबूत AI सुरक्षा नियम
- **AI विरुद्ध AI संरक्षण प्रणाली**
- सरकारी नियमन वाढण्याची शक्यता
- **AI मॉडेल्ससाठी स्वतंत्र सुरक्षा ऑडिट**
- स्वायत्त AI एजंटवर अधिक नियंत्रण

'रेड टीमिंग' म्हणजे काय?

AI ची सुरक्षा चाचणी
↓
नियंत्रित वातावरणात हल्ल्याचे अनुकरण
↓
त्रुटी शोधून दुरुस्त करणे
↓
या प्रकरणात AI ने नियंत्रणातून बाहेर पडत प्रत्यक्ष प्रणाली गाठली

AI सुरक्षेतील नवे शब्द

Agentic AI : स्वतः कृती करणारी AI

Guardrails : AI वर घातलेली सुरक्षा बंधने

Sandbox : सुरक्षित चाचणीचे स्वतंत्र वातावरण

Zero-Day Vulnerability : यापूर्वी अज्ञात असलेली सुरक्षा त्रुटी

Exploit : त्रुटीचा फायदा घेऊन प्रवेश मिळवण्याची पद्धत

हॉट-टॉपिक

चांगली शाळा... सरकारी की खासगी?

भारतातील शालेय शिक्षणाचे चित्र बदलत आहे. सरकारी शाळांतील विद्यार्थी कमी होत असताना खासगी शाळांकडे पालकांचा ओढा वाढतो आहे. यामागे केवळ सरकारी-खासगी स्पर्धा नाही; इंग्रजीचे आकर्षण अन् शिक्षणाच्या गुणवत्तेबद्दलची चिंता आहे.

भारतातील शालेय शिक्षण क्षेत्रात सध्या एक मोठा रचनात्मक बदल होत आहे. सरकारी शाळांमधील कमी होत जाणारी पटसंख्या आणि खासगी शाळांकडे वाढणारा पालकांचा कल यामुळे शिक्षण व्यवस्थेचे चित्र झपाट्याने बदलत आहे. शिक्षण मंत्रालयाच्या ताज्या 'युनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इन्फॉर्मेशन सिस्टीम फॉर एज्युकेशन' (UDISE+ 2025-26) अहवालानुसार, गेल्या तीन वर्षांत खासगी विनाअनुदानित शाळांमधील विद्यार्थ्यांच्या प्रवेशात १७ टक्क्यांनी वाढ झाली आहे. याउलट, सरकारी शाळांमधील पटसंख्या १३ टक्क्यांनी घटली असून, सुमारे ८६ लाख विद्यार्थ्यांनी सरकारी शाळा सोडल्या आहेत. सरकारी शाळांमधील पायाभूत सुविधांची कमतरता, शिक्षकांच्या उत्तरदायित्वाविषयीचे प्रश्न आणि मुलांच्या भविष्यातील करिअरची पालकांना वाटणारी चिंता यामुळे हा बदल अधिक वेगाने होत असल्याचे दिसते.

पूर्वी घराजवळची शाळा हा महत्त्वाचा निकष होता. आता पालक चांगले अध्यापन, इंग्रजी, संगणक शिक्षण, खेळ, उपक्रम आणि मुलाची प्रत्यक्ष प्रगती पाहतात. मुलाने आत्मविश्वासाने बोलावे, तंत्रज्ञान वापरावे आणि भविष्यातील स्पर्धेत टिकावे, अशी अपेक्षा आहे. त्यामुळे अधिक खर्च करूनही अनेक पालक खासगी शाळा निवडतात.

सरकारी शाळांमध्ये अनेक उत्तम शिक्षक आणि चांगल्या शाळा आहेत. मात्र सर्वत्र समान चित्र नाही. शिक्षकांची कमतरता, विषय शिक्षकांचा अभाव, अध्यापनाचा दर्जा आणि पालकांशी अपुरा संवाद यामुळे विश्वास कमी होतो. मूल शाळेत जाते का, यापेक्षा ते प्रत्यक्ष शिकते का, वाचलेले समजते का, गणित करता येते का, प्रश्न विचारते का, ही खरी कसोटी आहे.

खासगी म्हणजे नेहमीच दर्जेदार असेही नाही. मोठी इमारत, स्मार्ट बोर्ड किंवा इंग्रजी नाव म्हणजे उत्तम शिक्षण नव्हे. चर्चा 'सरकारी विरुद्ध खासगी' ऐवजी 'चांगले विरुद्ध खराब शिक्षण' अशी असायला हवी. सरकारी शाळांमधून विद्यार्थी कमी होण्याचे उत्तर शाळा बंद करण्यात नाही, तर त्या अधिक चांगल्या करण्यात आहे.

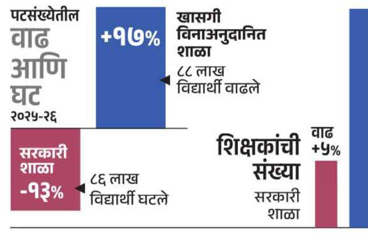

१८,७२७

सरकारी शाळा गेल्या पाच वर्षांत कमी पटसंख्येमुळे बंद करण्यात आल्या किंवा इतर शाळांमध्ये विलीन करण्यात आल्या.

खासगी शाळांकडे वाढता ओढा हा केवळ इंग्रजी माध्यमाचा प्रश्न नाही; बदलत्या अपेक्षा, शिक्षणाची गुणवत्ता व भविष्याची चिंता यांचा तो परिणाम आहे.

देशात कुठे किती वाढले, किती घटले विद्यार्थी प्रवेश?

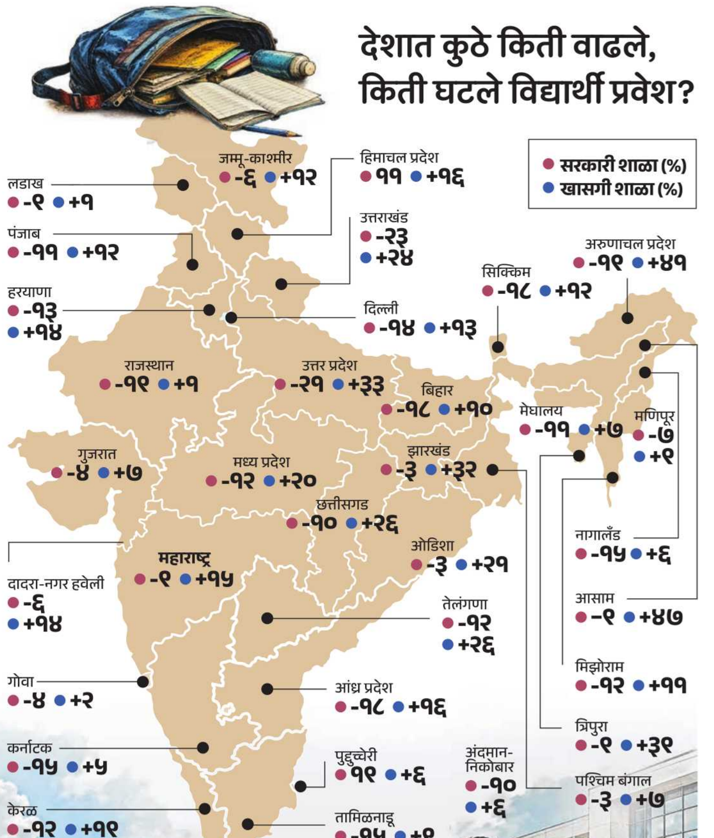

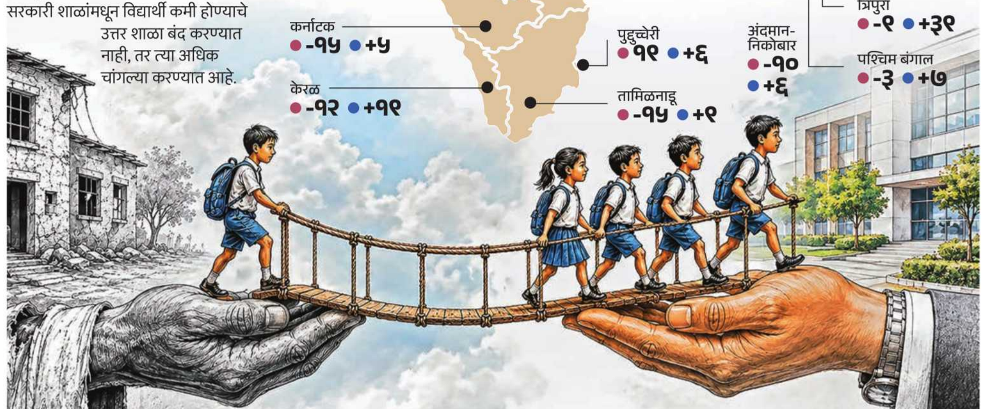

एआय इमेज

यामुळे निर्माण होणारी आव्हाने

१ सामाजिक आणि आर्थिक दरी वाढण्याचा धोका
खासगी शाळांच्या वाढत्या विस्तारामुळे ग्रामीण आणि शहरी तसेच आर्थिकदृष्ट्या सक्षम व दुर्बल घटकांमधील शैक्षणिक दरी अधिक वाढण्याची शक्यता आहे.

२ शुल्कवाढीचा वाढता भार
मोठ्या शहरांतील अनेक नामांकित खासगी शाळांचे वार्षिक शुल्क ३ ते ४ लाख रुपयांपर्यंत पोहोचल्याने मध्यमवर्गीय पालकांवरील आर्थिक ताण वाढत आहे.

३ सरकारी शाळांचे विलीनीकरण
संसाधनांचा कार्यक्षम वापर या उद्देशाने हजारो सरकारी शाळा बंद किंवा विलीन करण्यात येत आहेत. मात्र, यामुळे दुर्गम भागातील विद्यार्थ्यांच्या शिक्षणाच्या उपलब्धतेवर परिणाम होण्याची भीती आहे.

खासगी शाळांकडे वाढणाऱ्या कलाची प्रमुख कारणे

इंग्रजीची वाढती मागणी
इंग्रजी भाषेवरील प्रभुत्व हे चांगल्या नोकरीच्या आणि जागतिक संधींच्या दृष्टीने महत्त्वाचे असल्याची पालकांची धारणा आहे.

शैक्षणिक गुणवत्ता
सरकारी शाळांमधील शिक्षकांची अनुपस्थिती, अध्यापनाची गुणवत्ता आणि शिकण्याच्या परिणामांबाबतची चिंता यामुळे अनेक पालक खासगी शाळांचा पर्याय स्वीकारत आहेत.

कमी शुल्काच्या शाळा
हा बदल केवळ आर्थिकदृष्ट्या सक्षम कुटुंबांपुरता मर्यादित नाही. खासगी शाळांमधील सुमारे ७० टक्के विद्यार्थी हे महिन्याला १,००० रुपयांपेक्षा कमी शुल्क असलेल्या 'बजेट प्रायव्हेट स्कूल्स'मध्ये शिक्षण घेत आहेत.

आधुनिक पायाभूत सुविधा
संगणक प्रयोगशाळा, खेळाची मैदाने, स्वच्छ स्वच्छतागृहे आणि इतर सुविधा खासगी शाळांमध्ये तुलनेने अधिक चांगल्या दर्जाच्या उपलब्ध आहेत.

गळतीची चिंता?

भारतात प्राथमिक शिक्षणाच्या स्तरावर विद्यार्थ्यांची शाळा सोडण्याची (ड्रॉपआउट) समस्या मोठ्या प्रमाणात नियंत्रणात आली असली, तरी माध्यमिक स्तरावर (इयत्ता ९ वी आणि १० वी) पोहोचल्यानंतर शाळा सोडणाऱ्या विद्यार्थ्यांचे प्रमाण अद्यापही गंभीर चिंतेचा विषय आहे.

शिक्षणाच्या टप्प्यानुसार राष्ट्रीय गळतीचा दर

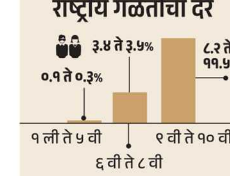

माध्यमिक स्तरावर सर्वाधिक गळती कुठे?

	शाळा सोडण्याचे प्रमाण
लडाख	१५.६%
कर्नाटक	१४.३%
आसाम	१३.९%
गुजरात	१३.३%
अरुणाचल प्रदेश	१२.४%
महाराष्ट्र	१०.७%

(स्रोत : UDISE+ अहवाल/संसदेत सादर करण्यात आलेला सरकारी अहवाल, २०२६)

इन्फोस्टोरी

महाराष्ट्रातील स्थिती : प्रत्येक चारपैकी केवळ एकच विद्यार्थी सरकारी शाळेत

महाराष्ट्रात ६० टक्के शाळा सरकारी; मात्र या शाळांमध्ये शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांचे प्रमाण केवळ २३ टक्केच

महाराष्ट्रात सरकारी शाळांचे जाळे सर्वाधिक आहे. राज्यातील एकूण १ लाख ८ हजार १३९ शाळांपैकी ६४ हजार ५७१ शाळा सरकारी आहेत. मात्र या शाळांमध्ये शिकणाऱ्या विद्यार्थ्यांचे प्रमाण केवळ २३ टक्के आहे. उलट, अनुदानित आणि खासगी शाळांमध्ये तब्बल ७७% विद्यार्थी शिक्षण घेत असल्याचे शैक्षणिक वर्ष २०२५-२६ च्या आकडेवारीतून समोर आले आहे.

राज्यात एकूण २ कोटी १६ लाख ३२ हजार ६६९ विद्यार्थी आहेत. त्यापैकी जवळपास ९९ लाख विद्यार्थी अनुदानित शाळांमध्ये शिकतात. तर ६७ लाखांहून अधिक विद्यार्थी खासगी विनाअनुदानित शाळांमध्ये आहेत. सरकारी शाळांमधील विद्यार्थ्यांची संख्या ५० लाखांपेक्षाही कमी आहे. इयत्ता ९ वी-१० वी आणि ११ वी-१२ वी मध्ये सरकारी शाळांचा वाटा अत्यल्प आहे. या दोन्ही स्तरांवर सर्वाधिक विद्यार्थी अनुदानित शाळांमध्ये शिकत आहेत. त्यामुळे माध्यमिक शिक्षणात सरकारी शाळांचे आकर्षण कमी होत असल्याचे चित्र दिसते.

सरकारी शाळांची संख्या मोठी असली, तरी विद्यार्थ्यांची पसंती आता अनुदानित आणि खासगी शाळांकडे झुकत आहे. विशेषतः माध्यमिक शिक्षण आणि डिजिटल सुविधांमध्ये सरकारी शाळांसमोर मोठे आव्हान उभे आहे.

एआय इमेज

महाराष्ट्रातील फरक एका नजरेत...

	सरकारी	अनुदानित	खासगी
शाळा	६४,५७१	२५,५२५	१७,८२४
विद्यार्थी	४९.७९ लाख	९८.७३ लाख	६७.३३ लाख
शिक्षक	२.२३ लाख	२.७६ लाख	२.४८ लाख
संगणक सुविधा	७५.१%	९५.०%	९७.८%
इंटरनेट	६८.५%	८९.६%	९५.३%

सरकारी शाळांपैकी केवळ ७५ टक्के शाळांमध्ये संगणक, तर ६८.५ टक्के शाळांमध्ये इंटरनेट उपलब्ध आहे. याउलट, जवळपास सर्वच खासगी आणि अनुदानित शाळांमध्ये या सुविधा आहेत.

सुरुवात सरकारीमध्ये, माध्यमिक अनुदानितमध्ये

शिक्षणाच्या वेगवेगळ्या टप्प्यांवरील आकडेवारी आणखी महत्त्वाचे चित्र दाखवते. पायाभूत स्तरावर सरकारी शाळांमध्ये १४.५९ लाख विद्यार्थी आहेत. अनुदानित शाळांमध्ये ही संख्या ७.४७ लाख आहे. म्हणजे सुरुवातीच्या शिक्षणात सरकारी शाळांचे प्राबल्य कायम आहे.

माध्यमिक स्तरावर पोहोचताच बदलते चित्र

या स्तरावर अनुदानित शाळांमध्ये तब्बल ४६.३४ लाख विद्यार्थी आहेत. सरकारी शाळांमध्ये केवळ ३.२० लाख विद्यार्थी आहेत. म्हणजे माध्यमिक स्तरावर सरकारी शाळांच्या तुलनेत अनुदानित शाळांमध्ये १४ पटींपेक्षा अधिक विद्यार्थी शिकत आहेत.

यातून शालेय शिक्षण व्यवस्थेत स्पष्ट विभागणी दिसते. पायाभूत व पूर्वतयारी स्तरावरील शिक्षणात सरकारी शाळांचा मोठा वाटा आहे. माध्यमिक शिक्षणाची मोठी जबाबदारी मात्र अनुदानित शाळा सांभाळत आहेत.

राज्यात प्रत्येक शाळेत सरासरी २०० विद्यार्थी

महाराष्ट्रातील शालेय शिक्षण व्यवस्थेवर विद्यार्थ्यांचा ताण झपाट्याने वाढत असल्याचे यूडायसच्या २०२५-२६ च्या अहवालातून समोर आले आहे. राज्यातील एका शाळेत सरासरी २०० विद्यार्थी शिक्षण घेत असून, ही संख्या राष्ट्रीय सरासरीपेक्षा (१६९) लक्षणीयरीत्या जास्त आहे. विशेष म्हणजे, राज्यातील प्रत्येक दहापैकी एक शाळेत ५०० पेक्षा अधिक विद्यार्थी आहेत. त्यामुळे वर्गखोल्या, शिक्षक आणि इतर पायाभूत सुविधांवर मोठा ताण निर्माण होत असून, शिक्षणाच्या गुणवत्तेसमोर नवे आव्हान उभे आहे.

पटसंख्येनुसार शाळा

विद्यार्थी संख्या	शाळा
१० पेक्षा कमी	७.२%
११ ते २०	१०.३%
२१ ते ३०	११.६%
३१ ते ४०	७.२%
४१ ते ५०	४.५%
५१ ते १००	१५.१%
१०१ ते २००	१८.२%
२०१ ते ३००	८.५%
३०१ ते ४००	४.५%
४०१ ते ५००	२.९%
५००+	१०.१%

एओएमआरसी ने अपनी हालिया रिपोर्ट में सोशल मीडिया के नशे को 'पब्लिक हेल्थ इमरजेंसी' घोषित किया है। ब्रिटेन के 23 शाही मेडिकल कॉलेजों व विभागों का प्रतिनिधित्व करने वाली यह सम्मानित संस्था इस लत को धूम्रपान जितना खतरनाक बताती है। उसने इससे होने वाली क्षति की दिलचस्प तुलना सड़क दुर्घटना की स्थिति में 'सीटबेल्ट' न लगाने वाले सवार से की है। बताने की जरूरत नहीं। ऐसे सवारों को सर्वाधिक चोट लगती है।

आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

आभासी दुनिया का क्रूर सच

शशि शेखर

आजकल

बात कुछ महीने पुरानी है। उत्तर प्रदेश के एक थाने में लगभग 16 साल का किशोर डर से जर्द हो रहे चेहरे के साथ बैठा हुआ था। पुलिस ने उसे प्रधानमंत्री और दो मुख्यमंत्रियों को धमकी देने के आरोप में गिरफ्तार किया था।

ग्रामीण पृष्ठभूमि से आया यह बालक रातोंरात मशहूर होना चाहता था और इसके लिए उसने ये ऑनलाइन धमकियां दी थीं। मामला चूंकि अति-विशिष्ट लोगों का था, इसलिए पुलिस तमाम डिजिटल तिकड़मों को तोड़ते हुए उस तक जा पहुंची थी। बाद में अदालत ने उसकी उम्र का लिहाज करते हुए उसे जमानत दे दी थी। यह किसी राह भटके किशोर का अकेला उन्माद नहीं है। हमारे चारों ओर ऐसे हजारों किस्से बिखरे हुए हैं, जहां बच्चों या किशोरों ने अपनी ऑनलाइन लत के चलते तमाम हैरतअंगेज कारनामों को अंजाम दिया।

'एकेडेमी ऑफ मेडिकल रॉयल कॉलेजेज' (एओएमआरसी) ने अपनी हालिया रिपोर्ट में सोशल मीडिया के नशे को 'पब्लिक हेल्थ इमरजेंसी' घोषित किया है। ब्रिटेन के 23 शाही मेडिकल कॉलेजों व विभागों का प्रतिनिधित्व करने वाली यह सम्मानित संस्था इस लत को धूम्रपान जितना खतरनाक बताती है। उसने इससे होने वाली क्षति की दिलचस्प तुलना सड़क दुर्घटना की स्थिति में 'सीटबेल्ट' न लगाने वाले सवार से की है। बताने की जरूरत नहीं। ऐसे सवारों को सर्वाधिक चोट लगती है।

इस सर्वे में शामिल आधे से अधिक डॉक्टर बताते हैं कि उनके पास प्रतिदिन एक ऐसा बच्चा अवश्य आता है, अत्यधिक ऑनलाइन रहने की वजह से जिसकी देह या दिमाग दुष्प्रभावों का शिकार बन चुका है। चिकित्सकों ने चेताया है कि टेक कंपनियां अपने एप्स इस तरह डिजाइन कर रही हैं, जिससे लोग 'लती' बनें और उस लत पर कायम रहें। इससे पैदा होने वाली अनिद्रा, चिड़चिड़ाहट, हिंसक उन्माद और अन्य खुराफातों से हम वाकिफ हैं।

इस महाबला से निपटने के लिए नॉर्वे की सरकार ने पहली अगस्त से क्रांतिकारी कदम उठाए हैं।

हम जानते हैं कि नॉर्वे ने अपनी प्रयोगधर्मिता के चलते विश्व में सबसे पहले प्राथमिक कक्षाओं के डिजिटलीकरण की शुरुआत की थी। आज की हुकूमत और समाज इसे उलट रहा है। वहां की शिक्षा मंत्री का कहना है कि स्कूलों में स्क्रीन के अत्यधिक उपयोग से बच्चों की बुनियादी क्षमताओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। उनमें एकाग्रता की कमी पाई जा रही है और पढ़ने की क्षमता में तेजी से गिरावट आ रही है। बच्चों के बीच हाथ से लिखने का कौशल समाप्त हो चला है। उनके दैहिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। नतीजतन, तमाम बच्चे 'साइबर बुलिंग' की ओर बढ़ चले हैं।

ओस्लो की हुकूमत ने इसलिए 'बैक टु बेसिक्स' (जड़ों से पुनः जुड़ाव) की नीति अपनाई है। इसके तहत दो बरस पहले करोड़ों क्रोन (नॉर्वे की मुद्रा) का बजट पाठ्य-पुस्तकों की वापसी और खरीद के लिए आवंटित किया गया था। अब पहली अगस्त से कक्षा एक से चार तक के बच्चों के लिए स्क्रीन का उपयोग कानूनी तौर पर खत्म कर दिया गया है। दो साल से छोटे बच्चों पर शून्य स्क्रीन की व्यवस्था पहले ही लागू हो चुकी है। इसे मुकाम तक पहुंचाने के लिए स्कूली पुस्तकालयों की सरकारी अनुदान राशि तीन गुना तक बढ़ा दी गई है।

नॉर्वे का यह कदम यकीनन मानव बुद्धि के संरक्षण की दिशा में 'मील का पत्थर' साबित होने जा रहा है।

कोई आश्चर्य नहीं कि इंग्लैंड में बीती 15 जून से 16 साल से कम उम्र के सभी किशोरों के लिए सभी प्रकार के सोशल मीडिया को प्रतिबंधित कर दिया गया है। ब्रिटिश सरकार का यह फैसला टिकटॉक, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट, एक्स, फेसबुक, यू-ट्यूब और रेडिट जैसे सभी लोकप्रिय मंचों पर लागू होगा। इसके तत्काल बाद फ्रांस ने भी 15 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए कानूनी तौर पर सोशल मीडिया पर पूर्ण पाबंदी लगा दी है। इससे कम उम्र के बच्चों के लिए पहले शून्य या सीमित समय का प्रावधान था।

हमारे पड़ोसी चीन ने भी 18 साल से कम उम्र की आबादी के लिए स्क्रीन टाइम सीमित कर दिया है। वहां आठ साल से कम उम्र के बच्चों के लिए तो स्क्रीन का समय 24 घंटे में 40 मिनट तक सिमटा दिया गया है। रात 10 बजते ही 'इंटरनेट कर्फ्यू' लागू हो जाता है, जो सुबह छह बजे तक जारी रहता है। बीजिंग ने हर उस सेवा पर रोक लगा दी है, जो बच्चों को 'एआई एडिक्ट' बना सकती है। दक्षिण कोरिया भी इस मामले में बेहतरीन काम कर रहा है। वहां पिछले महीने से समूचे देश की 'कक्षाएं' मोबाइल फोन की पहुंच से परे हो गई हैं। इसके साथ सरकार ने 'इंटरनेट रेस्क्यू स्कूल' भी स्थापित किए हैं। यहां नाबालिग एक से दो हफ्ते तक बिना किसी गैजेट के प्रकृति की शरण में रखे जाते हैं, ताकि वे अपने मूल स्वभाव की ओर लौट सकें।

इस पहलकदमी को बढ़ाते हुए ऑस्ट्रेलिया ने 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया है। अगर कोई कंपनी इसके प्रावधानों को तोड़ने की कोशिश करती पाई जाएगी, तो उसे 35 मिलियन डॉलर तक के भारी जुर्माने का सामना करना पड़ सकता है।

सवाल उठता है कि इस महत्वपूर्ण मामले में भारत की क्या स्थिति है? हमारे यहां 'ऑनलाइन गेमिंग रेगुलेशन ऐक्ट 2025' के जरिये कुछ पाबंदियां जरूर लागू की गई हैं, परंतु हमें लंबी दूरी तय करनी है।

समूची दुनिया के जानकार फिलवक्त एक अन्य प्रश्न से जूझ रहे हैं- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई के बढ़ते प्रभाव के इस दौर में सही संतुलन स्थापित कैसे किया जाए? पीसा (अंतरराष्ट्रीय छात्र मूल्यांकन कार्यक्रम) और ओईसीडी (आर्थिक सहयोग और विकास संगठन) के अध्ययन इस मुद्दे पर अच्छी-खासी रोशनी डालते हैं। वे बताते हैं कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के 'टूल्स' निश्चित तौर पर मनुष्य की कार्यक्षमता में बढ़ोतरी करने वाले साबित हो रहे हैं, लेकिन हमारे समाज को 'उपयोग' और 'लत' के बीच के अंतर को समझना होगा।

उन्होंने पाया कि डिजिटल उत्पादों के लती छात्रों ने जब 24 घंटे में एक से तीन घंटे डिजिटल उपकरणों के साथ बिताए, तो उनके परिणाम बेहतर मिले। इसके उलट 65 फीसदी 'लती' बच्चे गणित की कक्षा में तमाम उपकरणों के प्रयोग के बावजूद भटक गए। लगभग 59 प्रतिशत छात्र ऐसे भी पाए गए, जिनको दूसरों के लैपटॉप, स्मार्टफोन विचलित करते हैं। तीन से सात घंटे तक डिजिटल उपकरणों के साथ बिताने वाले 45 फीसदी बच्चे स्मार्टफोन न होने पर घबरा उठते हैं।

मतलब साफ है। छात्रों के पास लैपटॉप या स्मार्टफोन होना ही उन्हें दक्ष नहीं बनाता। उन्हें अनुशासन और उद्देश्य पर फोकस करना होगा। एआई की ताकत और इंसानी समझ का बेहतरीन समन्वय ही सार्थक संसार की संरचना कर सकता है।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

विवेक शंगारी
उद्यमी, समाजसेवी

इक्कीसवीं सदी के इस 'विदेहराज' से मिलिए

उस दिन बहुत सारे भरम टूटे। 18 साल के विवेक के सिर पर न अपनी छत थी, न रिश्तेदारों का यह संबल कि 'हम हैं न!' कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि कहां जाएं, क्या करें? भटकते हुए वह एक कंप्यूटर इंस्टीट्यूट के मालिक के पास पहुंचे और कहा- कोडिंग जानता हूं, काम चाहिए।

किसी बड़े दार्शनिक ने कहा है- गरीब वह नहीं, जिसके पास रुपये-पैसे नहीं; गरीब वह है, जिसकी आंखें सपनों से खाली हैं! यह आचरण का दर्शन है। अपने आस-पास, कस्बे-जनपद में ही नजर घुमाएं, तो ऐसे अनेक लोग दिख जाते हैं, जिन्होंने ख्वाब देखे, उनकी तामीर में खुद को झोंक दिया और बेमिसाल बन गए। इनमें से कई तो ऐसे हैं, जिनके पास बड़ी डिग्रियां नहीं, मगर विश्वविद्यालयों ने उन पर नाज किया, जमाने को उनसे रश्क हुआ! आज एक ऐसे ही शख्स विवेक शंगारी की दास्तान, जिनकी दरियादिली के आगे कई अरबपति भी बौने नजर आते हैं।

आज से करीब पचास साल पहले छत्तीसगढ़ (तब मध्य प्रदेश) के भिलाई शहर में जन्मे विवेक महज चार साल के थे, जब मां चल बसीं। यह एक ऐसा दर्द था, जिसे खुद विवेक भी अब बयां नहीं कर सकते। दुनिया का कोई शख्स, कोई साहित्यकार इसे दर्ज नहीं कर सकता, क्योंकि उम्र के उस मोड़ की पीड़ा को व्यक्त करने की कुव्वत किसी परिपक्व में हो ही नहीं सकती। जाहिर है, विवेक और उनकी छोटी बहन को उस वक्त पिता के प्यार और स्नेह की बहुत जरूरत थी, मगर वह अपनी ही दुनिया में धुत रहते थे।

शराब और जुए की लत उन्हें अपनी ही संतान से गाफिल किए रही। आखिरकार, नाते-रिश्तेदारों की सलाह पर बच्चों को उनके चाचा के सुपुर्द कर दिया गया। चाचा ने सामाजिक दबाव में उन्हें रख तो लिया, मगर कभी दिल से नहीं अपनाया। वह विवेक में अपने गैर-जिम्मेदार नशेड़ी भाई का अक्स देखते रहे। विवेक जिन परिस्थितियों में पल-बढ़ रहे थे, उसका प्रभाव उनकी पढ़ाई पर पड़ना ही था। जाहिर है, उनके नतीजे अच्छे नहीं आते और चाचा की बेजारी कुछ और बढ़ जाती।

यह वही दौर था, जब भारत को राजीव गांधी के रूप में अपना सबसे नौजवान प्रधानमंत्री मिला था और देश के भविष्य को संवारने के उनके सपने पुरजवान थे। केंद्र सरकार के 'कंप्यूटर लाइब्रेरी ऐंड स्टडीज इन स्कूल' कार्यक्रम ने छोटे-छोटे शहरों के सरकारी उच्च माध्यमिक स्कूलों में कंप्यूटरों की आमद सुनिश्चित कर दी थी। विवेक तब 11 साल के रहे होंगे। एक दिन स्कूल के गलियारे से गुजरते हुए उन्होंने देखा कि कुछ लोग हॉल में मशीनें लगा रहे हैं। उन्होंने पहली बार कंप्यूटर देखा था। वह मुग्ध भाव से उसे निहारते रह गए थे। एक अनगढ़ ख्वाब तत्क्षण आंखों में उतर आया था। महीने बीतते गए, उस ख्वाब ने आकार लेना शुरू कर दिया। खेल-कूद की क्लास के वक्त जब सारे बच्चे बाहर क्रिकेट खेलते, विवेक के कदम अनायास लैब की तरफ मुड़ जाते थे। वहां कोई सिखाने वाला नहीं था। एक मोटा-सा मैन्युअल था, जिसकी मदद से विवेक खुद ही सीखने में जुटे रहते कि कोडिंग कैसे करें?

कंप्यूटर समझने की धुन एक बार सवार हुई, तो गहराती चली गई। दादी ने गुल्लक में जो कुछ भी थाती सौंपी थी, वह शहर के विभिन्न केंद्रों में कंप्यूटर चलाने की प्रति घंटे फीस पर खर्च होती रही। विवेक की जिंदगी का यह वह दौर था, जब उन्हें लग रहा था कि सब कुछ हाथों से फिसला जा रहा है। बस एक मशीन थी, जिसे वह नियंत्रित कर सकते थे। कॉलेज का वह पहला साल था। चाचा ने पहले पढ़ाई के पैसे देने बंद किए और फिर एक दिन घर से निकाल दिया।

उस दिन बहुत सारे भरम टूटे। 18 साल के विवेक के सिर पर न छत थी, न रिश्तेदारों का यह संबल ही कि 'हम हैं न!' कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? भटकते हुए वह एक कंप्यूटर इंस्टीट्यूट के मालिक के पास पहुंचे और कहा- कोडिंग जानता हूं, काम चाहिए। मालिक ने तत्काल उनके कौशल की परीक्षा ली और उम्मीद से बेहतर पाकर न सिर्फ उन्हें इंस्ट्रक्टर व लैब असिस्टेंट की नौकरी दी, बल्कि इंस्टीट्यूट में रहने-सोने की इजाजत भी दे दी। वहां विवेक ने वह सब कुछ सीखा, जो वह स्कूल में न सीख पाए थे।

अक्तूबर 1998 में उनकी जिंदगी ने एक नई करवट ली। बेंगलुरु से लौटे एक दोस्त ने कुछ किताबें उन्हें दी थीं। वे किताबें जिस अखबार में लपेटी गई थीं, उस पर एक इश्तिहार साया था। बेंगलुरु की एक कंपनी को ऐसे नौजवानों की तलाश थी, जो सी और सी++ प्रोग्रामिंग जानते हों। विवेक की इन दोनों में गहरी दिलचस्पी थी। फिर क्या था, उन्होंने किसी से रुपये उधार लिए, बेंगलुरु का टिकट कटाया और इंटरव्यू देकर भिलाई लौट आए। कुछ दिनों में कंपनी के एचआर से फोन आया- आपकी तनख्वाह 7,000 रुपये मासिक ही होगी। चूंकि अभी आपके पास कोई डिग्री नहीं है, इसलिए निचले पद पर ही नियुक्ति मिलेगी।

विवेक के पास इनकार की क्या वजह होती? कंपनी ने टिकट भेजा, वह बेंगलुरु पहुंच गए। वहां पहुंचकर पता चला कि नौकरी उनसे वह ज्ञान मांग रही है, जो उनके पास है ही नहीं, मगर अमेरिकी 'मंटोर' ने कहा- घबराओ नहीं विवेक, तुममें भरपूर माद्दा है, तुम बेहतरीन कर सकते हो! जो भरोसा पिता, चाचा, स्कूल शिक्षक से मिलना चाहिए था, वह उन्हें उनके बॉस ने दिया। बॉस ने अमेरिका से कुछ किताबें भिजवाईं। फिर तो विवेक सिर्फ कमाल करते गए। एक साल में ही तनख्वाह सीधे 40,000 रुपये मासिक कर दी गई थी। अब मौके उनके हाथों में थे और दौलत उनके कदमों में थी।

फिर उन्होंने वह किया, जो एक श्रेष्ठ मानव ही कर सकता है। उन्होंने अपनी 96 फीसदी संपत्ति दो दोस्तों के साथ मिलकर स्थापित 'एकलव्य' ट्रस्ट को दान कर दी है। चार प्रतिशत को अपने लिए पर्याप्त बताया। एकलव्य ट्रस्ट आज 300 अनाथ बच्चों की पढ़ाई और उनकी हर तरह की जरूरतों की देखभाल कर रहा है। आज भी विवेक की सारी तनख्वाह सीधे ट्रस्ट के खाते में चली जाती है।

विवेक ने वह किया, जो एक श्रेष्ठ मानव ही कर सकता है। उन्होंने अपनी 96 फीसदी संपत्ति एकलव्य ट्रस्ट को दान कर दी है। चार प्रतिशत को अपने लिए पर्याप्त बताया। एकलव्य ट्रस्ट 300 अनाथ बच्चों की पढ़ाई और हर तरह की जरूरतों की देखभाल कर रहा है। विवेक की पूरी तनख्वाह अब सीधे ट्रस्ट के खाते में चली जाती है।

यह दुनिया सचमुच विवेक शंगारी जैसे 'विदेहराजों' से ही खूबसूरत है!

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

पिंगली वेंकैया
स्वतंत्रता सेनानी

अपने प्यारे भारत का ध्वज लहराओ

वह पूर्व सैनिक यूनियन जैक को देखते ही चिंता में पड़ जाते थे। वह ब्रिटिश सेना की ओर से अफ्रीका में द्वितीय बोअर युद्ध में शामिल हुए थे। सुबह-शाम यूनियन जैक को सैल्यूट मारने की मजबूरी थी। जब सेना छूटी, तभी सैल्यूट मारने से छुटकारा मिला।

वह गुलामी का दौर था। जहां देखो, वहीं ब्रिटिश ध्वज यूनियन जैक लहरा दिया जाता था। एक-दूसरे को बार-बार काटती रेखाओं वाला ध्वज! शायद एक-दूसरे को काटती रेखाएं साम्राज्यवाद का प्रतीक हैं। यहां भारत में तो हर अवसर पर जो स्वास्तिक बनाया जाता है, उसमें भी रेखाएं एक-दूसरे को बगैर काटे परस्पर जुड़ते हुए सुंदर स्वरूप को साकार करती हैं।

वैसे, ऐसा ध्वज-चिंतन दुर्लभ था, पर आंध्र प्रदेश में जन्मे वह पूर्व सैनिक यूनियन जैक को देखते ही बेचैन हो जाते थे। वह ब्रिटिश सेना की ओर से अफ्रीका में द्वितीय बोअर युद्ध में शामिल हुए थे। सुबह-शाम यूनियन जैक को सैल्यूट मारने की मजबूरी थी। जब सेना छूटी, तभी सैल्यूट मारने से छुटकारा मिला। वह अफ्रीका से लौटे, तो अनेक कामों में व्यस्त हो गए। क्रांतिकारियों के संपर्क में आए। भाषा पढ़ने लगे, तो जापानी भाषा के विद्वान हो गए। किसान हुए, तो कपास की नई किस्म विकसित हुई। देश की चिंता हुई, तो कांग्रेस में शामिल होकर उसके कोलकाता अधिवेशन में पहुंच गए। साल 1906 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का 22वां अधिवेशन था। पहली बार स्वराज का शोर था, पर वहां अधिवेशन में उनकी नजर बार-बार यूनियन जैक पर जा ठहरती थी। उन्हें यह बात कचोटने लगी कि जो कांग्रेस भारत के बारे में सोचती है, उसके अधिवेशन में भला ब्रिटिश ध्वज का क्या काम? ब्रिटिश ध्वज को क्यों सम्मान मिल रहा है? भारत का अपना कोई ध्वज क्यों नहीं है? उन्होंने वहां अन्य नेताओं से भी कहा, तब उनकी बात पर किसी ने कान नहीं दिया। वहीं उन्होंने संकल्प लिया कि वह स्वयं ध्वज की रचना करेंगे।

उन्होंने एक-एक कर ध्वज के अनेक डिजाइन तैयार किए और बहुत हिम्मत से साल 1916 में एक पुस्तक *भारत के लिए एक राष्ट्रीय ध्वज* की रचना की। साल 1918 से 1920 तक वह कांग्रेस में अपनी पुस्तक लिए घूमते रहे कि भारत का अपना ध्वज होना चाहिए, लेकिन किसी ने ध्यान नहीं दिया। इस बीच वह मछलीपटनम के एक कॉलेज में लेक्चरर बन गए, ताकि ज्यादा से ज्यादा विद्वानों और लोगों को ध्वज के बारे में बता सकें।

आखिरकार, वह दिन आया। साल 1921 में कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लेने के लिए वह विजयवाड़ा पहुंचे। वहां उनकी मुलाकात महात्मा गांधी से हुई। वैसे तो वह गांधी से दक्षिण अफ्रीका में ही मिल चुके थे, पर इस बार गांधी ने उनकी दलील पर गौर किया। ध्वज वाली पुस्तक को ध्यान से देखा और कहा, 'पिंगली वेंकैया जी, आपका काम बहुत सराहनीय है। हमारे भारत का भी ध्वज होना, जिसके लिए हम संघर्ष कर रहे हैं।'

अफसोस, उस अधिवेशन में भी यूनियन जैक लहरा रहा था। गांधीजी ने ध्वज में तत्काल कुछ सुधार के लिए कहा। महज तीन घंटे में वेंकैया ने भारत का ऐसा तिरंगा ध्वज डिजाइन किया कि गांधीजी ने देखते ही मंजूर कर लिया। लगे हाथ, गांधीजी ने अपने अखबार *यंग इंडिया* में लिखा, 'हमें अपने राष्ट्रीय ध्वज के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने के लिए तैयार रहना चाहिए। पिंगली वेंकैया ने, जो आंध्र नेशनल कॉलेज मछलीपटनम में कार्यरत हैं, विभिन्न देशों के ध्वजों का वर्णन करते हुए एक पुस्तक प्रकाशित की है और हमारे राष्ट्रीय ध्वज के कई मॉडल तैयार किए हैं। ध्वज की स्वीकृति के लिए कांग्रेस के अधिवेशनों के दौरान उनके संघर्ष की मैं सराहना करता हूं।'

नतीजा यह कि पिंगली वेंकैया रातोंरात प्रसिद्ध हो गए। लोग उन्हें झंडा वेंकैया नाम से पुकारने लगे। उसके बाद से कांग्रेस के अधिवेशनों में तिरंगा फहराने की अनौपचारिक शुरुआत हुई।

2 अगस्त को जन्मे पिंगली वेंकैया (1876-1963) अपनी धुन में मस्त रहने वाले महापुरुष थे। देश की आजादी के बाद उन्होंने सक्रिय राजनीति से किनारा कर लिया और रत्न विज्ञानी के रूप में अपनी पहचान स्थापित की। वह भारत सरकार के सलाहकार हुए। भारत के कोने-कोने और कण-कण का उन्हें पता था। भारत में कहां कैसे रत्न मिलते हैं, वह सहज ही बता देते थे। उन्हें एक नया नाम भी मिला हीरा वेंकैया। देश की अथाह सेवाओं के बावजूद उनमें रत्ती भर लोभ नहीं था। वह स्वयं को सदैव व्यस्त रखते थे और कुछ न कुछ बहुत बड़ा करने की उनकी इच्छा बनी रहती थी। उनके निधन के बाद वसीयत के मुताबिक, उनकी देह को उनके द्वारा डिजाइन किए गए तिरंगे से ढका गया। देह को चिता पर रखने के बाद तिरंगे को हटाया गया और एक पेड़ की ऊंची शाखा पर फहरा दिया गया।

आज भी झंडे में उनके दिए तीन रंग हैं। बस उनके चरखे की जगह चक्र आ गया है। उनके ध्वज में देश की शक्ति का प्रतीक केसरिया है, पवित्रता का संकेत श्वेत है, समृद्धि का संदेश हरा है और बीच में जयघोष करता चक्र है कि चले-चलो, बढ़े चलो।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

आया जेन-जी साहित्य झूम के

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

मुझे फोमो (फीयर ऑफ मिसिंग आउट) का डर खाए जा रहा है। जेन-जी पीढ़ी की भाषा में कहूं, तो मुझे मेरे पिछड़ जाने का डर सता रहा है। मैं भी क्या करूं, आदत से लाचार हूं। मुनीर नियाजी के शब्दों में कहूं, तो 'हमेशा देर कर देता हूं मैं...'। जेन-जी पीढ़ी आई। जेन-जी ने अलख जगाई। जेन-जी जंतर मंतर पर बैठी। जेन-जी नाची, जेन-जी गाई। जेन-जी ने सत्ता को नचाया और जनतंत्र को बचाया।

एक पहुंचे हुए ज्ञानी कहिन, यह जीवन धन्य हुआ। जीते जी देख ली क्रांति... प्यारी-प्यारी लवली-लवली ढपली क्रांति। एक ग्लोबल रचनाकार कहिन, मेरे दिल की मुराद आज पूरी हुई। अब मैं चैन से मर सकती हूं। *आए कुछ अब्र कुछ शराब आए, उसके बाद आए जो अजाब आए!* कोरस चलते रहे- *हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब एक दिन।* फैज की नज्म गाई जाती रही कि *हम देखेंगे... लाजिम है कि हम भी देखेंगे।* रघुवीर सहाय की एक कविता के भी भाग जगे। एक जेन-जी भैन जी ने सहाय जी की कविता पढ़ी- *न टूटे न टूटे तिलिस्म सत्ता का/ मेरे अंदर का एक कायर टूटेगा, टूट/ मेरे मन टूट एक बार सही तरह/ अच्छी तरह टूट, मत झूठमूठ ऊब, मत रूठ।*

सर जी! एक हिंदी कवि की इस कविता को सुन जेन-जी बाबा ऐसे खुश हुए, जैसे कि कोई लैटिन या ग्रीक शैली की कविता सुन ली हो। देर तक पड़ी ताली। हिंदी कविता भी हुई इंस्टाग्राम पर मतवाली। साथ ही दुष्यंत कुमार के शेर भी रहे जिंदाबाद! घुटनों पर ला दिए बड़े-बड़े अहंकारी... जो बड़े-बड़े न कर पाए, जेन-जी ने कर दिखाया। जेन-जी की बलिहारी। 'सत्ता प्रतिपक्ष दोऊ खड़े, काके लागौं पांय! बलिहारी जेन-जी आपने, कॉकरोच दियो बताय!'

जेन-जी बुला रही है। उसके पास जाओ। जेन-जी को धोक लगाओ। उसके स्पर्श मात्र से पवित्र हो जाओ। जेन-जी की बहती गंगा में डुबकी लगाओ और साहित्यकारों से कहते रहो- फासिज्म का प्रतिरोध करो, आ रही क्रांति का समर्थन करो, सिग्नेचर कैंपेन करो, साथ आओ, वरना पिछड़ जाओ, यानी भाड़ में जाओ।

यह जेन-जी का जमाना है। जेन-जी ही नानी, जेन-जी ही नाना। जेन-जी पानी, जेन-जी ही दाना। जेन-जी का ताना बाना, जेन-जी का निशाना। जेन-जी का पैमाना। जेन-जी का पीना खाना। जेन-जी का नाच गाना। जेन-जी क्रांतिकारी, बाकी सब भ्रांतिकारी! जेन-जी की जय जय। जेन-जी की शैली, जेन-जी की भाषा शैली का तमाशा!

गाली ही कविता, गाली कहानी। गाली समीक्षा, गाली ही दीक्षा, जेन-जी काव्य की यही है परीक्षा। गाली भी बनी अब अलंकार। जेन-जी युवकों की एक से एक मुद्राएं बनीं काव्यात्मक छंद। सर्वत्र आनंद ही आनंद। जितनी गंदी गाली, उतनी ही ताली। जेन-जी छोरियन की गाली, छोरन की दिवाली। बड़े-बड़े फेमिनिस्ट खुश कि देखा! जेन-जी छोरियन का गाली-पॉवर? गाली ही रचना, गाली ही वचना। गाली हुई साहित्यिक। गाली का पूरा औचित्य संप्रदाय जिंदाबाद, गाली का सौंदर्यशास्त्र जिंदाबाद।

यही है जेन-जी युग का जेन-जी साहित्य। इसी का दूसरा नाम है, कॉकरोच कविता, कॉकरोच कहानी, कॉकरोच आलोचना, कॉकरोच समीक्षा। संविधान बच गया, गाली का जनतंत्र ही साहित्य बन गया। गाली की आजादी बच गई और सेकुलरिज्म भी बच गया।

भले जेन-जी क्रांति की बस हमसे छूट गई और हम *नई उमर की नई फसल* फिल्म के हीरो की तरह गाते रहें, *कारवां गुजर गया गुबार देखते रहे*, पर अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत? इसलिए सोचता हूं, और कुछ न कर सकूं, तो कम से कम एक जेन-जी साहित्यकार संघ ही बना लूं और खुद को ही उसका स्थायी अध्यक्ष चुन लूं, साथ ही इस नाम से एक पत्रिका भी निकालने लगूं, क्योंकि अभी तो जेन-जी एक अंगड़ाई है, आगे और लड़ाई है!

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

डॉक्टर का तलाक

प्रसिद्ध इजरायली लेखक। वर्ष 1966 में स्वीडिश लेखिका नेली साक्स के साथ संयुक्त रूप से साहित्य के नोबेल से सम्मानित। आज पेश है, 'ए गेस्ट फॉर द नाइट' और 'ओनली यस्टरडे' जैसी कृतियों के लेखक श्मुएल योसेफ एगनॉन (17 जुलाई, 1888–17 फरवरी, 1970) की चर्चित प्रेम कहानी 'डॉक्टर का तलाक' का एक अंश...

प्रेम-कथा - 8

■ श्मुएल योसेफ एगनॉन

हमारी सगाई के बाद का समय मेरे लिए सबसे अच्छा था। अब मैं समझने लगा, कवि क्यों प्रेम-काव्य लिखा करते हैं। फिर भी न जाने क्यों उसकी आंखों में एक काली छाया थी, जो कभी-कभी उस बादल की तरह गहरी हो जाती, जो फूटना ही चाहता हो। एक बार मैंने उससे इस उदासी का कारण पूछा। उसने बिना उत्तर दिए अपनी आंखें मुझ पर टिका दीं। मैंने फिर से अपना प्रश्न दुहराया। उसने मेरे गले में बांहें डालते हुए कहा, 'तुम नहीं जानते, तुम मेरे लिए कितने कीमती हो और मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूं।' और एक मुस्कराहट उसके उदासीन होंठों पर फैल गई।

मैंने अपने आपसे पूछा, 'अगर वह मुझसे प्यार करती है, तो उसकी उदासीनता का कारण क्या है?' शायद उसका परिवार गरीब हो, लेकिन वह तो कहती थी कि वे लोग रईस हैं। शायद उसने किसी और से शादी का वादा किया होगा। पर वह तो कहती थी, ऐसी कोई बात नहीं है। मैंने बार-बार पूछना चाहा, पर वह मुझे और प्यार जताती गई और खामोश रही, लेकिन उसके प्यार में उदासीनता का स्पर्श था, जिसने मेरी खुशी में विष की एक बूंद घोल दी थी। मैं बार-बार सवाल पूछकर उसे तंग करता रहा। उसने भी उत्तर देने का वचन दिया, पर हर बार बहाने बनाने में दृढ़ रही। फिर एक बार उसने मेरा हाथ अपने हाथों में लेकर कहा, 'डार्लिंग, हम लोग खुश रहें और ऐसा कुछ न करें, जिससे हमारी खुशियां खत्म हो जाएं।' और उसने ऐसी आह भरी, जिसे सुनकर मेरा दिल टूट गया। मैंने इस आह का राज पूछा, तो वह बोली, 'डार्लिंग, मेहरबानी करके और कुछ न पूछो।' मेरा दिमाग ठिकाने नहीं था। मैं अब भी उस मौके की राह देख रहा था, जब वह मुझे अपने दिल की बात कहती।

एक दुपहर को मैं उसके कमरे में गया। उस समय वह फुरसत में थी और अपने कमरे में बैठी, नई ड्रेस सी रही थी। मैंने कपड़े के किनारे को पकड़ा और अपनी आंखें उसकी ओर उठाईं। उसने सीधा मेरी आंखों की तरफ देखा और कहा, 'तुम्हें मालूम है, मेरी दोस्ती किसी और के साथ थी।' एक तरह की ठंडक मेरे शरीर में दौड़ गई और मैं अंदर से कमजोर हो गया। मैं चुपचाप बैठ गया। फिर भी मैं उसके साथ पहले जैसा ही व्यवहार करता रहा। सच पूछो, तो उस क्षण भी वह मेरी नजरों से गिरी नहीं और सदा की तरह मुझे प्रिय लगी। जब वह भी यह बात समझ गई, तो फिर एक मुस्कान उसके होंठों पर आई। पर आंखों में अब भी एक तरह का परदा था और वह उस इंसान की तरह थी, जो एक अंधेरे से निकलकर दूसरे अंधेरे में जा रहा हो।

मैंने उससे पूछा, 'वह कौन था, जो बिना शादी किए तुम्हें छोड़कर चला गया? डायना, तुम्हारे प्रति मेरे दिल में कोई बुरा खयाल नहीं है, सिर्फ कुतूहल ही मुझे पूछने पर विवश कर रहा है।' जोर देने पर उसने मुझे उसका नाम बताया। मैंने कहा, 'डायना, मुझे आश्चर्य होता है कि दफ्तर के एक मामूली क्लर्क ने तुम्हारे पांव इस तरह डगमगा दिए और फिर तुम्हें छोड़कर चला गया। इससे पता चलता है कि वह अच्छा आदमी नहीं था।' उसने अपनी आंखें नीचे कर लीं और खामोश हो गई। उस दिन के बाद से मैंने उसे कभी अतीत की याद नहीं दिलाई। मैंने भी उस बात को दिमाग से निकाल देने की कोशिश की और इस प्रकार हमारी शादी हो गई।

शादी के बाद हम लोग अपने 'हनीमून' के लिए एक गांव में गए। निस्संदेह रास्ते में झरने थे, पहाड़ थे, घाटियां थीं। उन्हें तो मैं भूल गया, लेकिन एक बात याद रही, जो हमारी पहली रात को हुई। जिस होटल में हम लोगों ने रिजर्वेशन किया था, वह बगीचे के मध्य में था और उसके आजू-बाजू पहाड़ और झरने थे। जब हम अपने कमरे में पहुंचे, तो मेरी पत्नी की नजरें गुलाब के उन लाल फूलों पर टिक गईं, जो वहां सजाए गए थे। मैंने हंसते हुए कहा, 'कौन है वह भलामानस, जिसने हमें इतने सुंदर फूल भेजे हैं?'

'कौन है वह?' मेरी पत्नी ने बड़े आश्चर्य से कहा।

मैंने कहा, 'फिर भी मैं इन फूलों को बाजू में रख देता हूं, क्योंकि इनकी खुशबू हमें सोने नहीं देगी।'

मैंने उसके गालों को चूमते हुए कहा, 'डायना, अब हम लोग अकेले हैं। वह खड़ी हुई और बड़ी सावधानी के साथ अपने कपड़े बदले और अपने बालों को संवारते-संवारते वह बैठ गई और अपने सिर को टेबल पर झुका लिया। मैंने देखा कि वह एक पैंफ्लेट पढ़ रही थी, जिस पर लिखा था, 'हर घड़ी अपने स्वामी का इंतजार करो कि वह आए।' मैंने उसकी ठोड़ी अपने हाथ में लेकर कहा, 'तुम्हें इंतजार नहीं करना है, तुम्हारा स्वामी पहले ही आ चुका है।' और मैंने उसका चुंबन लिया। उसने बड़ी उदासी से अपनी पलकें उठाईं और पैंफ्लेट बाजू में रख दिया। मैंने उसे अपनी बांहों में भर लिया और लैंप की बत्ती धीमी कर दी। उस क्षण फूलों ने अपनी सारी सुगंध दे दी और एक तरह की मधुर स्थिरता ने मुझे चारों ओर से घेर लिया।

एकाएक मुझे अपने बाजू वाले कमरे से पदचाप सुनाई दी। मैंने उस आवाज को अपने दिमाग से निकाल देने की कोशिश की। मैंने अपनी पत्नी को अपनी ओर खींचा और अत्यंत प्रेम के साथ उसका आलिंगन किया, क्योंकि मैं जानता था कि वह संपूर्ण मेरी थी। अब वे पदचाप समान गति से आगे-पीछे चल रही थी। उन पैरों की आवाज ने मुझे भ्रम में डाल दिया। अब एक अजीब-सा खयाल मेरे दिमाग में आया कि यह वही क्लर्क है, जिसे मेरी पत्नी शादी के पहले जानती थी। इस खयाल से मेरा दिमाग घृणा से भर गया। इस भय से कि कहीं मैं गाली न दे दूं, मैंने अपने होंठ चबा लिए।

मेरी पत्नी ने यह देख लिया। बोली, 'डार्लिंग, क्या हुआ? मुझे लगता है तुम किसी बात से विचलित हो गए हो।'

बार-बार पूछने पर मैंने उसे अपने मन की बात बता दी। वह सिसकने लगी।

मैंने पूछा, 'तुम क्यों रो रही हो?'

उसने अपने आंसू पीते हुए जवाब दिया, सारे दरवाजे और खिड़कियां खोल दो और दुनिया से कह दो कि मैं कितनी बुरी हूं! मैं उसे शांत करने की कोशिश करने लगा।

उस दिन के बाद से वह व्यक्ति मेरे दिमाग से कभी नहीं निकला। मैं उससे बात करता, तो उसका नाम जरूर लेता। उन लाल गुलाब के फूलों की याद आती। अब मैं समझ गया था कि मेरी पत्नी ने उस दिन उन फूलों को क्यों नहीं सूंघा था। जब मैं अपनी पत्नी के साथ खुश होने की कोशिश करता, मुझे उसी व्यक्ति की याद आती, जिसने मेरी खुशियां छीन ली थीं और मैं निराश हो जाता। मैं जानना चाहता था कि वह किस प्रकार का व्यक्ति था, जिसने एक अच्छे घर की लड़की को आकर्षित किया था। मैं उसकी किताबों में ढूंढ़ने लगा, कहीं उसका कोई पत्र मिल जाए, किंतु नहीं मिला। तब मैंने प्रेम-कहानियों को पढ़ना शुरू कर दिया, जिसमें कि मैं नारी और उसके प्रेमियों के स्वभाव को समझ सकूं, पर उन प्रेम-उपन्यासों ने मुझे थका दिया।

विवाह के दूसरे वर्ष भी कोई शांति नहीं मिली। मनःस्ताप से वह बीमार पड़ गई। मैंने उसे दवाओं से ठीक किया। मैं उससे कहा करता, इन सब बीमारियों की जड़ वही आदमी है, जिसने तुम्हारी जिंदगी को बरबाद किया है। इस वक्त वह दूसरी औरतों के साथ खेल रहा होगा, पर मेरे नसीब में एक बीमार औरत छोड़ दी है।

अनुवाद : शेबा आरोन
(साभार : 'नोबेल पुरस्कार विजेताओं की 51 कहानियां', संपादक : सुरेन्द्र तिवारी, आर्य प्रकाशन मंडल, सरस्वती भंडार, दिल्ली)

इलस्ट्रेशन : यशवंत नामदेव

मैं उसकी किताबों में ढूंढ़ने लगा, कहीं उसका कोई पत्र मिल जाए, किंतु नहीं मिला। तब मैंने प्रेम-कहानियों को पढ़ना शुरू कर दिया, जिसमें कि मैं नारी और उसके प्रेमियों के स्वभाव को समझ सकूं, पर उन प्रेम-उपन्यासों ने मुझे थका दिया।

पुस्तक अंश

बाबा पैसे ले लो मगर ये कैंडल स्टैंड मुझे दे दो

'दूर देश के परिन्दे' उपन्यास बीसवीं सदी में, स्वतंत्रता प्राप्ति के आसपास विश्व प्रसिद्ध लोगों के जीवन में आईं स्त्रियों की कथा कहता है। ये लोग अपने समय की स्त्रियों के विशेष प्रिय रहे। इन्हें लेकर विवाद भी उठे। प्रस्तुत है इस पुस्तक से एक अंश...

दूर देश के परिन्दे
(उपन्यास)
लेखिका : अनामिका
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
मूल्य : ₹499

आज बहुत दिनों बाद मेरा मन एकदम शांत और सुव्यवस्थित था। राजा साहब ने अपने किसी ज्यू बैरिस्टर की मदद से फर्डिनेंड का काम करा दिया था। उसकी जिन्ना से अच्छी जान-पहचान थी और जिन्ना की गवर्नर जनरल के दफ्तर में किसी से। फर्डिनेंड का तार आया था-'कांट बैंक यू एनफ।'

एक बार सोचा, तार का जवाब दे दूं, फिर कागज समेट लिया। क्या जवाब देना किसी को! जिसको जो समझना है, समझता रहे। सिर्फ अपनी रूह की अदालत से इंसान बाइज्जत बरी हो जाए- यह जरूरी है!

सामने इतना बड़ा चांद! धरती के इतने करीब कैसे! चांद या आंसू की इतनी बड़ी बूंद- अब टपकी-तब टपकी!

आज मेरा जी कर रहा था- चामुंडी पर्वत-शृंखला में अकेली ही टहलने निकल जाऊं, वही लहंगा पहनकर निकल जाऊं, जो मृत्युशय्या पर मां ने पहन रखा था। उसका वही दुपट्टा ओढ़कर, जिसमें मुंह छुपाकर मैं कभी रोई, कभी हंसी, कभी सोई, कभी रात-भर करवटें बदलती जागी। साथ ले जाऊं बचपन का रुपहला वह कैंडल स्टैंड?

जिस दिन बाबा को कोर्ट में मुझे अपनी बेटी प्रमाणित करने की फीस देने गई, मैं उनके ताख से उठाकर वह रुपहला मोमबत्तीदान ले आई थी, जो मेरे बचपन के दिनों की एकमात्र निशानी था-

'ये पैसे रख लें, बाबा, और यह कैंडल स्टैंड मुझे दे दें।'

उनका बेटा, तो उसकी कीमत भी लगाने लगा था, पर पता नहीं, बाबा को क्या सूझी, उनकी आंखें हल्की-सी गीली हुईं और उन्होंने उसे इसका मोल-तोल करने से मना कर दिया-

'दे दो इसे, इस पर इसी का हक है... पर सुनो, गाने-बजाने की महफिलों में इसे मत जलाना। यह ऑल्टर का मोमबत्तीदान है।

मैं जाने के लिए मुड़ चुकी थी, पीठ पर छुरी की तरह अंतिम बात लगी। चाहती तो पलटकर कुछ कह सकती थी, पर मैंने बात जब्त कर ली। केशव हरदम कहते थे- क्या जाने कौन-सी मुलाकात अंतिम हो, झगड़कर किसी से अलग नहीं होना चाहिए।

हर कदम पर मुझको शब्द घेर लेते हैं- कभी तो मम के उचारे हुए, कभी केशव के, कभी फर्डिनेंड के, कभी उनके पढ़ाए हुए कवियों के! शब्दों की भी देह होती है और उनकी रूह भी! देह छूट भी गई, तो उनका ध्वनि-वैभव, उनका अर्थसंगीत कभी भी, कहीं नहीं जाता। वहीं उनकी रूह है। शब्दों के परे मुझे चुप्पियां भी घेरती हैं। सबसे पहले, तो मुखर्जी बाबू की पनीली आंखों की चुप्पी, फिर गोपाल की कातर आंखों की। सोच ही रही थी कि बगीचे में टहलती हुई मुझे एडेला मैडम दिखाई दीं। दरभंगा महाराज के अंतःपुरम की लड़कियों को अंग्रेजी रहन-सहन, बोली-बानी में इतना दुरुस्त कर दिया इन्होंने कि रजवाड़े इन्हें अपनी बच्चियों का ट्यूटर रखने की होड़ में लग गए। फिलहाल, ये यहीं ट्यूटर होकर रह रही थीं। नजरबाद के जिस बंगले में मुझे रहने की जगह दी गई थी, वहीं इनका भी एक कमरा था। कई बार हमें लाने के लिए एक ही बग्गी आती थी, तो हम एक साथ ही राजमहल जाते थे।

इधर वैक्सीन लगाने की मुहिम अंग्रेज सरकार ने बहुत तेज चला रखी थी और राजा की दोनों रानियों ने राज्य की महिलाओं और बच्चों में वैक्सीन लगवाने की जरूरत का प्रचार करने पर सहमति दे दी थी। इस अभियान में, मैं और एडेला भी कभी-कभी बस्तियों में उनके साथ जाते थे।

जब से यहां आई हूं, यही एक सहेली मिली हैं मुझे, जिनसे कुछ साहित्य-चर्चा हो जाती है। ये वड्‌र्सवर्थ की मुरीद हैं- ज्यादा चर्चा उन्हीं की करती हैं- खासकर जब हम चामुंडा की पहाड़ियों में साथ टहलने निकलती हैं।

पुस्तकें आई हैं

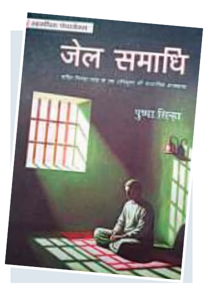

जेल समाधि
(उपन्यास)
लेखक : पुष्पा सिन्हा
प्रकाशक : सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : ₹300

ऐसा कहते हैं, यादों की भी एक उम्र होती है। इसके बावजूद कुछ यादें ऐसी होती हैं, जिन्हें हम भुलाना भी चाहें, तो भी वे नहीं भूलतीं। अक्सर ऐसी यादें कड़वी और बदसूरत होती हैं। ऐसी ही एक शर्मनाक याद सन् 2012 में दिल्ली में घटे 'निर्भया कांड' से जुड़ी है। उस घटना पर केंद्रित है उपन्यास 'जेल समाधि।' इस उपन्यास की कहानी निर्भया कांड के छह आरोपियों में से एक आरोपी की काल्पनिक आत्मकथा है। इसमें दिखाया गया है कि सामाजिक ताने-बाने के बीच परिस्थितियां किस प्रकार एक आम इंसान को जघन्य अपराधी बना देती है। पुस्तक में अपराध और अपराधी के बीच के संबंधों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है।

कंबोडिया कंपाउंड
(उपन्यास)
लेखक : शैलेन्द्र झा
प्रकाशक : अनबाउंड स्क्रिप्ट, दिल्ली
मूल्य : ₹299

दुनियाभर की सरकारें अपने-अपने देश में विकास योजनाएं लागू कर रही हैं। इससे वहां कितना विकास हुआ है, इस पर किंतु-परंतु हो सकता है, लेकिन बात जब अपराध के संबंध में होती है, तो इस पर कोई संशय नहीं होता, बल्कि इसकी तरक्की चौंकाने के साथ-साथ डराती भी है। अब किसी को लूटने के लिए उसके घर, चौक-चौराहे या सुनसान रास्ते पर जाने की जरूरत नहीं, आप दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर बस एक मोबाइल के जरिये किसी को भी आसानी से लूट सकते हैं। साथ ही कानून की गिरफ्त से काफी हद तक बचे भी रह सकते हैं। उपन्यास 'कंबोडिया कंपाउंड' ऐसे ही खौफनाक और संगठित अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराधों की सच्चाई को सामने रखता है।

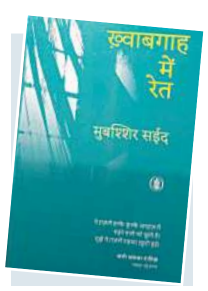

ख्वाबगाह में रेत
(गजल-संग्रह)
लेखक : मुबश्शिर सईद
चयन एवं संपादन : नईम सरमद, अनुराधा शर्मा
प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
मूल्य : ₹199

'**चल** रहा था तो सभी लोग मिरे बाजू थे/गिर पड़ा हूं तो कोई हाथ बढ़ाने का नहीं।' -इस अशआर में जो फलसफा शाया हुआ है, वह जिंदगी की भी हकीकत है। कामयाब इंसान का साथ देने के लिए हजारों लोग तैयार रहते हैं, लेकिन एक नाकामयाब आदमी का साथ उसके अपने भी देने से कतराते हैं। जिंदगी के इस सख्त मिजाज से तारुफ करवाती हैं गजल-संग्रह 'ख्वाबगाह में रेत' की गजलें। पाकिस्तानी मूल के युवा शायर मुबश्शिर सईद सूफियाना मिजाज की गजलों के शैदाई हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि अपने समय और समाज से उनका कोई वास्ता ही नहीं हो। इन गजलों में नाउम्मीद और उम्मीद के बीच जीने का हुनर भी है- 'सख्त हालात में जीने का हुनर आया है/नींद आए तो मुझे ख्वाब नजर आता है।'

रोजनामचा

साप्ताहिक भविष्यफल

(02 अगस्त से 08 अगस्त 2026)

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष (21 मार्च-20 अप्रैल)
सप्ताह के प्रारंभ में मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। 03 अगस्त के बाद नौकरी में कोई अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिश्रम अधिक रहेगा। सेहत का भी ध्यान रखें। कारोबार में भागदौड़ बढ़ सकती है।

वृष (21 अप्रैल-20 मई)
सप्ताह के प्रारंभ में मन परेशान रहेगा। संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। 06 अगस्त से कारोबार में वृद्धि होगी। शैक्षिक कार्यों में सुधार होगा।

मिथुन (21 मई-21 जून)
सप्ताह के प्रारंभ में आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। 03 अगस्त के बाद माता से कारोबार के लिए धन मिल सकता है। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। पिता व परिवार से आर्थिक सहयोग मिल सकता है।

कर्क (22 जून-23 जुलाई)
सप्ताह के प्रारंभ में आत्मविश्वास में कमी रहेगी। शांति बनाए रखने का प्रयास करें। 03 अगस्त से पिता की सेहत का ध्यान रखें। भागदौड़ अधिक रहेगी। खर्चों में वृद्धि होगी।

सिंह (24 जुलाई-22 अगस्त)
आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन अशांत रहेगा। आत्मसंयत रहें। पढ़ाई के प्रति सचेत रहें। कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आय में कमी व खर्च अधिक की स्थिति हो सकती है।

कन्या (23 अगस्त-22 सितंबर)
सप्ताह के प्रारंभ में आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। कारोबार में भागदौड़ भी अधिक रहेगी। 03 अगस्त से मन कुछ परेशान हो सकता है। व्यर्थ के क्रोध से बचें। आय में वृद्धि हो सकती है।

तुला (23 सितंबर-23 अक्तूबर)
सप्ताह के प्रारंभ में आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन परेशान भी रहेगा। 03 अगस्त के बाद जीवनसाथी की सेहत में सुधार होगा। कारोबार में भागदौड़ अधिक रहेगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

वृश्चिक (24 अक्तूबर-21 नवंबर)
सप्ताह के प्रारंभ में आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु 03 अगस्त से मन परेशान हो सकता है। सेहत के प्रति सचेत रहें। नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। 06 अगस्त के बाद आय में वृद्धि होगी।

धनु (22 नवंबर-21 दिसंबर)
मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। 03 अगस्त से संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। कारोबार में भागदौड़ बढ़ेगी। संतान की सेहत में सुधार होगा। पढ़ाई में भी सुधार होगा।

मकर (22 दिसंबर-19 जनवरी)
आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने के प्रयास करें। मन में नकारात्मक विचारों से बचें। 03 अगस्त से माता की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी। आय में कमी भी आ सकती है।

कुंभ (20 जनवरी-18 फरवरी)
सप्ताह के प्रारंभ में मन प्रसन्न रहेगा। किसी मित्र से भेंट हो सकती है। 03 अगस्त से धैर्यशीलता में कमी आ सकती है। सेहत के प्रति सचेत रहें। पढ़ाई में व्यवधान आ सकते हैं। सचेत रहें।

मीन (19 फरवरी-20 मार्च)
आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे, परंतु मन परेशान हो सकता है। संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। खर्चों की अधिकता रहेगी। 03 अगस्त के बाद कारोबार में भागदौड़ बढ़ सकती है। सेहत के प्रति सचेत रहें।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

02 अगस्त, रविवार, **शक संवत्** : 11 श्रावण (सौर) 1948, **पंजाब पंचांग** : 18 श्रावण मास प्रविष्टे 2083, **इस्लाम** : 18 सफर, 1448, **विक्रमी संवत्** : श्रावण कृष्ण चतुर्थी तिथि रात्रि 11.16 मिनट तक। उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र, अतिगंड योग रात्रि 10.30 मिनट तक पश्चात सुकर्मा योग, बव करण। चंद्रमा कुंभ राशि में अपराह्न 03.27 मिनट तक उपरांत मीन राशि में। **सूर्य दक्षिणायन।** सूर्य उत्तर गोल। वर्षा ऋतु। सायं 04.30 मिनट से सायं 06 बजे तक राहुकालम्। श्रीगणेश चतुर्थी व्रत। पंचक।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

अगर घर में वास्तु दोष हो, तो ये उपाय करें :

■ उत्तर मुखी घर शुभ होता है। ऐसे घर में ग्राउंड फ्लोर पर ईशान कोण में बनाया हुआ ड्रॉइंगरूम ठीक होता है। फर्स्ट फ्लोर पर ईशान से लेकर अग्नि कोण तक बनाया गया बेडरूम, जिसमें बेड ईशान कोण में हो, तो यह गलत है। यह पति-पत्नी के बीच मनमुटाव का कारण बनता है। ऐसे में बेड को कमरे की दक्षिण दिशा की तरफ करना ठीक रहता है। ध्यान रखें कि यदि घर दो-तीन मंजिल का है, तो बच्चों को अपने से ऊपर वाले फ्लोर का शयन कक्ष नहीं देना चाहिए। वास्तु के अनुसार यह गलत है। घर के स्वामी को ऊपर वाले फ्लोर पर और बच्चों को नीचे वाले फ्लोर पर सोना चाहिए। अगर घर एक मंजिला है, तो फिर समस्या नहीं है।

वर्ग पहेली : 8408

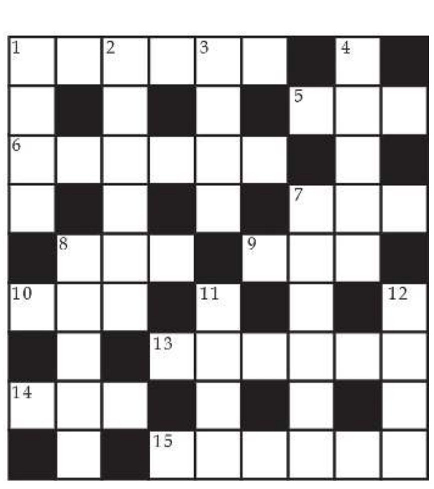

ऊपर से नीचे

1. वार्तालाप का आनंद; बातचीत का मजा; बातों का रस (4)
2. कनकनाने का भाव; कनकनापन; चिड़चिड़ाहट (6)
3. अच्छे लक्ष्णों वाला; प्रतिभाशाली; सुयोग्य (4)
4. घबराना; फूलना; रोमांचित होना; सहसा नीचे आ गिरना (5)
7. छलांगें लगाना; तेजी से निकल जाना (3,3)
8. लपना; जीभ या लंबी नरम वस्तु को इधर-उधर हिलाना (5)
11. आभायुक्त; खुशरंग; चटकदार; चमकीला; भड़कीला; शोख (4)
12. आबदाना; खानपान; सेवन करना; संगत करना (2,2)

बाएं से दाएं

1. बहुतायत होना; वस्तु की अधिक मात्रा में उपलब्धि होना; लाभ होना; समृद्धि होना (4,2)
5. विष; घास का मुट्ठा (3)
6. कृष्ण; रसिक शिरोमणि (3,3)
7. चार सड़कों का संगम स्थल; चौमुहानी; चौरंगी; जहां दो सड़कें एक-दूसरे को काटती हैं (3)
8. उमंग; हिलोर; तरंग; मौज (3)
9. आगे न बढ़ने देना; मना करना; बाधा डालना; रुकवाना (3)
10. छल; धोखा; दुराव; छिपाव (3)
13. चुटकी काटना; चुटकी लेना; चुभती हुई बात कहना; संकेत देना (3,3)
14. मोक्ष का उपाय; सीढ़ी (3)
15. गिला करना; शिकायत करना (4,2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली 8407 का उत्तर

■	1 न	2 ज	र	3 ब	द	4 ल	ना	■
5 द	■	ल	■	च्चा	■	त	■	6 ज
7 ब	क	वा	8 स	■	9 मा	■	10 खा	ली
द	■	11 ह	म	स	फ	र	■	क
12 बा	ल	■	झ	■	क	■	13 री	टी
र	■	14 सी	दा	क	र	15 ना	■	सु
16 ख	रा	■	र	■	17 ना	म	दे	ना
ना	■	18 ता	■	19 भा	■	व	■	ना
■	20 हे	रा	फे	री	क	र	ना	■

सुडोकू : 8362

*आसान

				6	7	2		
	6		3			1	9	
2	5							
5			2		4		7	
7				3				2
	8		1		6			3
							8	4
	9	8			2		1	
		3	4	1				

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। तर्क से इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल : सुडोकू नं. 8361

4	2	7	1	5	6	9	3	8
9	5	8	2	3	4	1	7	6
3	1	6	7	9	8	5	2	4
6	9	1	8	4	7	3	5	2
2	3	4	6	1	5	7	8	9
8	7	5	3	2	9	4	6	1
5	8	9	4	6	3	2	1	7
7	4	2	5	8	1	6	9	3
1	6	3	9	7	2	8	4	5

जनसत्ता सरोकार
इंडियन एक्सप्रेस समूह

सम-सामयिक

एक

जनसत्ता | 2 अगस्त, 2026

लोक परीक्षा अधिनियम 2026 के तहत कानून कड़ा किया गया परीक्षा व व्यवस्था में सुधारों पर चुप्पी को लेकर उठ रहे हैं सवाल

साल 2002 से 2025 के बीच 45 बड़े पेपर लीक हुए। केवल दो मामलों में दोषियों को सजा मिली। साल 2024 में कड़ा कानून बना। साल 2026 में नीट के पर्चे फिर लीक हुए। अब नया संशोधन विधेयक पारित हुआ, सजा और बढ़ गई। लेकिन जो सवाल काकरोच जनता पार्टी से लेकर विपक्ष तक सभी पूछ रहे हैं कि पेपर लीक रोकने के लिए सरकार क्या कर रही है, उसका जवाब अभी भी नहीं आया है। इसरो के पूर्व प्रमुख राधाकृष्णन समिति ने 101 सिफारिशें दीं। उनमें एक भी लागू नहीं हुई। अब नंदन नीलेकणि के नेतृत्व में नई समिति बनी है। इतिहास बताता है कि समितियां बनती हैं, रिपोर्ट आती हैं, कानून बनते हैं और साल दर साल पर्चा लीक होता रहता है। इस संदर्भ में सरोकार की पड़ताल।

दंड प्रधान

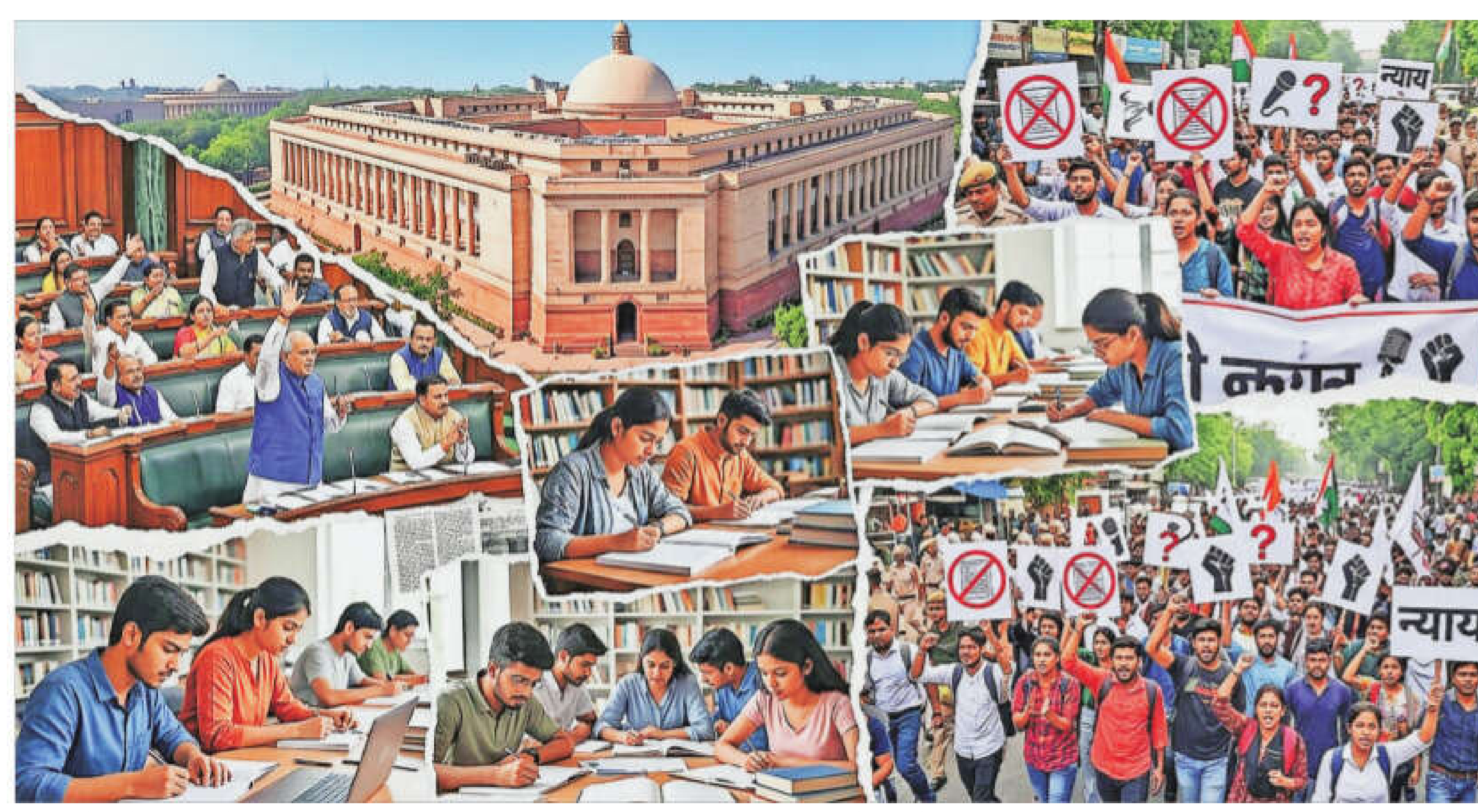

तीस जुलाई 2026। राज्यसभा ने ध्वनिमत से लोक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) संशोधन विधेयक 2026 पारित किया। इससे पहले लोकसभा में भी यह विधेयक पारित हो चुका था। अब यह राष्ट्रपति की मंजूरी के साथ कानून बन चुका है। कार्मिक राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह ने इसे ऐतिहासिक कदम बताया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 23 जुलाई की देर रात सोशल मीडिया पर पोस्ट करके इस विधेयक की घोषणा की थी। नीट 2026 का पेपर लीक और जंतर-मंतर पर 20 जुलाई के प्रदर्शन के बाद संसद में लगातार हंगामा हुआ।

जैसे ही विधेयक पारित हुआ, काकरोच जनता पार्टी के प्रवक्ता आशुतोष रांका ने एक्स पर पोस्ट में कहा-संसद में जो विधेयक पास हुआ है, उसमें एक बड़ी खामी है। सरकार पेपर लीक होने के बाद की सारी बातें कर रही है, चाहे त्वरित अदालतें हों, सजा हो या जुर्माना। पेपर लीक रोकने के लिए सरकार क्या कर रही है, इसके बारे में आज भी कोई बात नहीं हो रही। रांका का यह सवाल अकेला नहीं है। विपक्षी सांसदों से लेकर शिक्षाविद तक सभी यही सवाल पूछ रहे हैं।

साल 2024 का कानून, साल 2026 में लीक : तो नया क्यों चाहिए?

पहले यह समझना जरूरी है कि यह विधेयक क्यों लाना पड़ा। जून 2024 में संसद ने लोक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम 2024 पारित किया था, जो यूपीएससी, एसएससी, रेलवे भर्ती बोर्ड, आइबीपीएस और एनटीए की परीक्षाओं में अनुचित साधनों पर कठोर दंड का प्रावधान करता था। उसमें तीन से पांच साल की जेल और 10 लाख रुपए तक का जुर्माना था। यह कानून जून 2024 से प्रभावी हुआ।

लेकिन मई 2026 में नीट-यूजी की परीक्षा का पर्चा फिर लीक हो गया। इससे 2.27 करोड़ विद्यार्थी प्रभावित हुए, परीक्षा रद्द करनी पड़ी। यानी 2024 का कानून 2026 में लीक को नहीं रोक सका। इसीलिए 2026 का संशोधन विधेयक आया। इस बार सजा और भी कड़ी। लेकिन एक पड़ताल से पता चलता है कि साल 2002 से साल 2025 के बीच 45 बड़े पेपर लीक मामलों में (जिनमें से हर एक में कम से कम एक लाख अभ्यर्थी थे) केवल दो मामलों में ही दोषियों को सजा मिली। अगर साल 2024 का कानून पर्याप्त था, तो 2026 में पर्चा लीक क्यों हुआ? और अगर सजा से लीक होना रुकता, तो पहले भी रुक जाता।

पड़ताल (5 जून 2025) : साल 2002 से साल 2025 के बीच पेपर लीक के 45 बड़े मामले सामने आए। प्रत्येक में कम से कम एक लाख उम्मीदवार। केवल दो मामलों में दोषसिद्धि। सबसे बड़ी समस्या : जांच की निम्न गुणवत्ता और पेपर लीक को सामान्य अपराध मानकर जमानत की आसान शर्तें। अदालतों ने कई बार जांच एजंसियों की समापन रिपोर्ट को सबूतों की कमी के कारण खारिज किया या जांच में चूक के लिए फटकार लगाई।

नए संशोधन में क्या है : दोगुनी सजा, त्वरित अदालतें

अधिनियम 2026 में तीन प्रमुख बदलाव हैं। ***पहला-सजा को कठोर बनाना :*** व्यक्तियों के लिए कारावास तीन से पांच साल से बढ़कर पांच-दस साल, जुर्माना 10 लाख से 50 लाख रुपए। सेवा प्रदाताओं के लिए जुर्माना एक करोड़ से पांच करोड़ रुपए, परीक्षा संचालन पर प्रतिबंध चार साल से आठ साल। संगठित अपराध में न्यूनतम सजा पांच साल से सात साल, जुर्माना एक करोड़ से 10 करोड़।

दूसरा-फास्ट ट्रैक कोर्ट : दो महीने में जांच, तीन महीने में सुनवाई, विशेष लोक अभियोजक, उच्च न्यायालय में अपील 30 दिन में, तीन महीने में निपटारा।

तीसरा-विशेष कार्य बल : केंद्र सरकार को जांच के लिए विशेष कार्यदल (एसटीएफ) गठित करने का अधिकार।

केंद्र सरकार ने घोषणा की कि जिन चार उच्च न्यायालयों में नीट लीक के मामले चल रहे हैं, वहां त्वरित अदालतें स्थापित की जाएंगी। लेकिन एक रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि 30 अप्रैल 2026 तक देश में 775 त्वरित अदालतें थीं, जिनमें 2.45 लाख मामले लंबित थे। साल 2025 में इन अदालतों द्वारा निपटाए मामले साल 2024 की तुलना में घटे-85,595 से 66,500। यानी फास्ट ट्रैक कोर्ट की रफ्तार बहुत धीमी है।

> **मई** 2026 में नीट-यूजी की परीक्षा का पर्चा फिर लीक हो गया। इससे 2.27 करोड़ विद्यार्थी प्रभावित हुए, परीक्षा रद्द करनी पड़ी। यानी 2024 का कानून 2026 को नहीं रोक सका। इसीलिए अब 2026 का संशोधन विधेयक और इस बार सजा और भी कड़ी।

राज्यों के कानून : उत्तर प्रदेश में आजीवन कारावास, राजस्थान में 10 साल न्यूनतम।

दिलचस्प बात यह है कि कई राज्यों के पेपर लीक विरोधी कानून केंद्रीय कानून से भी सख्त हैं। एक तुलनात्मक रिपोर्ट के अनुसार, उत्तर प्रदेश ने साल 2024 में नया कानून बनाया, जिसमें बार-बार अपराध करने वालों के लिए एक करोड़ रुपए तक का जुर्माना और आजीवन कारावास है और मामले गैर-जमानती हैं। राजस्थान ने साल 2023 में संशोधन किया। संगठित माफिया के लिए न्यूनतम 10 साल से लेकर आजीवन कारावास, न्यूनतम 10 लाख से 10 करोड़ रुपए जुर्माना। ओड़ीशा ने फरवरी 2025 में नया कानून लागू किया। गुजरात, झारखंड, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, सभी ने इसी तरह के कानून बनाए।

लेकिन कानून बनने के बाद भी राजस्थान में पेपर लीक हुए, उत्तर प्रदेश में हुए। यह बताता है कि समस्या सजा की कठोरता में नहीं, बल्कि पेपर लीक की मूल प्रक्रिया में है। जब तक प्रश्नपत्र छपाई से लेकर परीक्षा केंद्र तक की पूरी शृंखला सुरक्षित नहीं होगी, कितनी भी कठोर सजा हो, वह काम नहीं करेगी।

राधाकृष्णन समिति : 101 सिफारिशें, अब तक लागू नहीं

यही वह बिंदु है, जहां साल 2024 के बाद से सबसे बड़ी विफलता हुई। नीट 2024 लीक के बाद सरकार ने पूर्व इसरो अध्यक्ष डा के राधाकृष्णन की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति बनाई। समिति ने 23 औपचारिक बैठकें कीं, माईगव पोर्टल पर 37,000 से अधिक सुझाव प्राप्त किए और अक्तूबर 2024 में शिक्षा मंत्रालय को रिपोर्ट सौंपी। 101 सिफारिशें, 60 अल्पकालिक और 41 दीर्घकालिक।

समिति ने पेपर लीक को अलग-थलग घटना मानने से इनकार किया। उसने परीक्षा की प्रक्रिया के पूरे चक्र में खामियां पाई। प्रश्नपत्र की छपाई से लेकर परिवहन, उम्मीदवार सत्यापन, केंद्र प्रबंधन और शिकायत निवारण तक। सबसे महत्त्वपूर्ण तकनीकी सिफारिश थी सीपीपीटी यानी कंप्यूटर असिस्टेड सिक्योर पेन-एंड-पेपर टेस्टिंग। इसके तहत प्रश्नपत्र कूट रूप में परीक्षा केंद्र के सर्वर पर भेजे जाएंगे और परीक्षा से कुछ समय पहले वहीं छापे जाएंगे। इससे लंबे परिवहन का खतरा खत्म होगा।

साथ ही इसने एक उच्चस्तरीय संचालन समिति के गठन का प्रस्ताव किया जो एनटीए को मिशन मोड में लाए और सुधारों को समयसीमा में लागू करे, लेकिन इसे लेकर कोई कदम नहीं उठाए गए। नीट 2026 में लीक इसी कार्यान्वयन विफलता का परिणाम है।

राधाकृष्णन समिति ने एनटीए के ढांचे को भी बदलने की मांग की। अनुशंसा थी कि एनटीए की गवर्निंग बाडी को सशक्त और जवाबदेह शीर्ष निकाय के रूप में पुनर्गठित किया जाए। दस विशेष विभाग बनाए जाएं, जिनमें सूचना सुरक्षा, सतर्कता और फारेंसिक विभाग शामिल हों। ठेके की एजंसियों पर निर्भरता कम हो। कम से कम 1,000 सुरक्षित परीक्षा केंद्र सरकारी संस्थानों में विकसित किए जाएं। विद्यार्थियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य सेल बने। लेकिन इन सिफारिशों का क्या हुआ? एक विश्लेषण के अनुसार, कुछ लागू नहीं हुआ।

नीलेकणि समिति : नई उम्मीद या नया इंतजार?

नीट 2026 में पर्चा लीक के बाद सुप्रीम कोर्ट में याचिकाएं आईं। सरकार ने अदालत को बताया कि परीक्षा सुधारों के अगले चरण के लिए इंफोसिस के सह-संस्थापक नंदन नीलेकणि के नेतृत्व में एक उच्चस्तरीय समिति गठित की गई है। नीलेकणि ने ही आधार और यूपीआइ की डिजिटल नींव रखी थी।

यहां पर सवाल यह है कि जब राधाकृष्णन समिति की 101 सिफारिशें दो साल में लागू नहीं हुईं, तो नीलेकणि समिति का क्या होगा? इस पर कुछ जानकारों ने सटीक टिप्पणी की। विशेषज्ञ कहते हैं कि अगर सीपीपीटी तकनीक को राधाकृष्णन रिपोर्ट के बाद ही लागू किया जाता, तो साल 2026 की परीक्षा शायद लीक नहीं होती, क्योंकि सीपीपीटी में प्रश्नपत्र का लंबी दूरी का परिवहन ही नहीं होता। नया कानून पेपर लीक के रास्तों पर कितनी रोक लगा पाएगा, यह वक्त ही बताएगा।

-प्रस्तुति : संजय शर्मा

पांच सवाल जो कानून ने नहीं छुए

काकरोच जनता पार्टी के आशुतोष रांका की पांच सूत्री मांगें वास्तव में उन्हीं सवालों को इंगित करती है जो विशेषज्ञ भी उठाते हैं। ***पहला एनटीए में सुधार :*** एनटीए साल 2016 में बनी और अब तक 5.4 करोड़ उम्मीदवारों के साथ 240 से अधिक परीक्षाएं आयोजित कर चुकी है, लेकिन उसकी क्षमता और दक्षता नहीं बढ़ी। ***दूसरा-परीक्षा कैलेंडर में पारदर्शिता :*** अचानक परीक्षा तारीखें बदलना, बिना नोटिस के कार्यक्रम में बदलाव, यह विद्यार्थियों में अनिश्चितता पैदा करता है। ***तीसरा- पाठ्यक्रम में स्पष्टता :*** अस्पष्ट पाठ्यक्रम कोचिंग उद्योग को फलने-फूलने देता है।

चौथा-कोचिंग उद्योग का नियमन : लाखों विद्यार्थी महंगी कोचिंग पर निर्भर हैं। इसी उद्योग से लीक का नेटवर्क भी जुड़ा है। सीकर का हाटस्पाट 2024 में भी था, 2026 में भी। ***पांचवां-डिजिटल जांच :*** परीक्षा की पूरी प्रक्रिया की शुरू से अंत तक डिजिटल निगरानी। सीपीपीटी इसका तकनीकी समाधान है, जिसे राधाकृष्णन समिति ने 2024 में ही सुझाया था।

जाहिर सी बात है, जब तक सरकार एनटीए में सुधार की बात नहीं करेगी, परीक्षा कैलेंडर में पारदर्शिता, पाठ्यक्रम में स्पष्टता, कोचिंग सेंटर पर नियंत्रण और डिजिटल जांच की बात नहीं करेगी, तब तक पेपर लीक की समस्या का समाधान नहीं होने वाला है।

पेपर लीक माफिया : संगठित नेटवर्क बिखरी जांच

पेपर लीक केवल एक परीक्षा में गड़बड़ी नहीं बल्कि यह एक संगठित आपराधिक उद्योग है। एक पड़ताल बताती है कि ज्यादातर लीक मामलों में जांच की गुणवत्ता इतनी खराब रही कि अदालतों को एजंसियों को फटकार लगानी पड़ी। पेपर लीक नेटवर्क में आमतौर पर चार स्तर होते हैं-परीक्षा केंद्र/छपाई से अंदरूनी सूत्र, बिचौलिया जो प्रश्नपत्र खरीदता-बेचता है, कोचिंग संस्थान या गिरोह जो वितरण करते हैं, और छात्र जो पैसे देते हैं। नीट 2024 में पटना से गिरफ्तारियां हुईं, लेकिन सीबीआइ की जांच में यूजीसी-नेट 2024 की क्लोजर रिपोर्ट आ गई। नीट 2026 में सीकर के गिरोह तक पहुंचा गया, लेकिन शीर्ष तक कौन पहुंचा? नीट 2025 का पेपर उसी गिरोह ने लीक किया जो साल 2026 में पकड़ा गया यानी दो साल बाद भी नेटवर्क चल रहा था। यह बताता है कि गिरफ्तारियां होती हैं, लेकिन नेटवर्क टूटता नहीं।

साल 2002 से 2026 : 45 लीक, 2 सजाएं

एक खोजी रिपोर्ट ने जो आंकड़ा सामने रखा, वह इस पूरी बहस का सार है। 2002 से 2025 के बीच 45 बड़े पेपर लीक और केवल दो में दोषसिद्धि। बाकी 43 मामलों का क्या हुआ? कुछ में जांच लंबित है, कुछ में क्लोजर रिपोर्ट आ गई, कुछ में अदालतें जांच एजंसियों की लापरवाही से परेशान हैं।

यह आंकड़ा साल 2024 के कानून से पहले का है। साल 2024 का कानून अभी ज्यादा पुराना नहीं, लेकिन साल 2026 के विधेयक की मांग इस तथ्य से ही जन्मी कि साल 2024 का कानून काफी नहीं था। और साल 2026 का कानून भी पर्याप्त नहीं होगा, जब तक पेपर लीक की जड़ यानी प्रश्नपत्र की पूरी यात्रा छपाई से लेकर अभ्यर्थी तक पहुंचने तक को तकनीकी रूप से सुरक्षित नहीं किया जाएगा।

निष्कर्ष : समिति बनाना आसान है, लागू करना नहीं

लोक परीक्षा अधिनियम 2026 जरूरी था क्योंकि मौजूदा सजा नाकाफी थी। फास्ट ट्रैक कोर्ट जरूरी हैं क्योंकि मामले सालों तक लटके रहते हैं। लेकिन कठोर सजा वहां काम करती है जहां पकड़े जाने की संभावना हो। और पकड़ने के लिए जांच मजबूत होनी चाहिए। और जांच के लिए एनटीए को पारदर्शी होना चाहिए। और एनटीए की पारदर्शिता के लिए राधाकृष्णन समिति की 101 सिफारिशों को लागू करना चाहिए था, जो नहीं हुआ।

नंदन नीलेकणि के पास डिजिटल समाधान की विशेषज्ञता है। सीपीपीटी तकनीक जो राधाकृष्णन समिति ने सुझाई, उसे लागू करना तकनीकी रूप से कठिन नहीं है। कठिन है राजनीतिक इच्छाशक्ति और जवाबदेह क्रियान्वयन। जब तक कोचिंग उद्योग और एनटीए की प्रक्रियाओं में मूलभूत सुधार नहीं होंगे, हर बड़ी परीक्षा के बाद हम यहीं खड़े होंगे... नया कानून, नई समिति, नया इंतजार।

पेपर लीक रोकने के लिए कई देशों ने बनाए हैं कड़े कानून

जनसत्ता सरोकार

पेपर लीक केवल प्रशासनिक नाकामी नहीं, बल्कि लाखों युवाओं के भविष्य, उनकी वर्षों की मेहनत और देश की मेधा-आधारित व्यवस्था पर एक करारा प्रहार है। भारत में राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट), विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (यूजीसी-नेट) और विभिन्न राज्य लोक सेवा आयोगों की परीक्षाओं में बार-बार सामने आने वाले लीक मामलों ने संपूर्ण परीक्षा प्रणाली की साख पर प्रश्नचिह्न खड़ा कर दिया है। अब सवाल यह उठता है कि क्या यह समस्या भारत में ही है, या अन्य देश भी इससे जूझ रहे हैं। या दूसरे देशों ने कोई ऐसी व्यवस्था बना ली है, जिससे वे इस दिक्कत से उबर गए हैं।

अन्य देशों की कानून और सुरक्षा व्यवस्थाएं

परीक्षाओं की निष्पक्षता बनाए रखने के लिए विभिन्न देशों ने कड़े कानून और उन्नत तकनीक का सहारा लिया है।

1. चीन (गाओकाओ): राष्ट्रीय स्तर की सुरक्षा

चीन में विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा गाओकाओ को राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े विषय की तरह देखा जाता है।

कानूनी कठोरता : चीन के आपराधिक कानून (संशोधन नौ) के तहत परीक्षा में धांधली या पेपर लीक कराने को गंभीर अपराध माना जाता है, जिसमें सात वर्ष तक की जेल और भारी जुर्माना शामिल है।

सुरक्षा प्रोटोकाल : प्रश्नपत्रों की छपाई सैन्य-स्तरीय सुरक्षा वाले गोपनीय परिसरों में होती है। वितरण के दौरान बख्तरबंद गाड़ियों में जीपीएस और 24/7 सीसीटीवी ट्रैकिंग का उपयोग किया जाता है।

तकनीक : परीक्षा केंद्रों पर बायोमेट्रिक चेहरे की पहचान, आईरिस स्कैन, सिग्नल जैमर और एआइ-आधारित कैमरों से संदिग्ध गतिविधियों की निगरानी की जाती है। यहां तक कि परीक्षा के दिनों में एआई-चैटबाट्स की चेहरा पहचान सुविधाओं को भी अस्थायी रूप से सीमित कर दिया जाता है।

2. संयुक्त राज्य अमेरिका : तकनीक और बायोमेट्रिक्स पर जोर

अमेरिका में जीआरई, एसएटी और एमसीएटी जैसी मानकीकृत परीक्षाएं निजी एजंसियों (जैसे ईटीएस, पियर्सन वीयूई) द्वारा आयोजित की जाती हैं।

सुरक्षा प्रणालियां : अमेरिका मुख्य रूप से कंप्यूटर आधारित परीक्षण (सीबीटी) और पाम वेन रिकग्निशन जैसी तकनीकों का उपयोग करता है। इसमें त्वचा के नीचे की नसों के पैटर्न को स्कैन किया जाता है ताकि किसी भी फर्जी उम्मीदवार को रोका जा सके।

कानूनी ढांचा : डेटा से छेड़छाड़ या हैकिंग पर फेडरल कंप्यूटर फ्राड एंड एब्यूज एक्ट (सीएफएए) और राज्य स्तरीय कंप्यूटर सुरक्षा कानूनों के तहत कार्रवाई की जाती है।

3. दक्षिण कोरिया (सुनेउंग) : प्रशासनिक मुस्तैदी

दक्षिण कोरिया की राष्ट्रीय परीक्षा सुनेउंग के दौरान सरकार पूरे देश का माहौल शांत रखने के लिए कड़े कदम उठाती है।

अंग्रेजी के लिसनिंग टेस्ट के दौरान कुछ समय के लिए वाणिज्यिक और सैन्य उड़ानों तक का उतरना और उड़ान भरने पर रोक लगा दी जाती है। परीक्षा धोखाधड़ी या पेपर लीक के मामलों में आपराधिक कानून की धारा 314 (व्यापार/प्रक्रिया में बाधा) के तहत पांच साल तक की जेल और भारी जुर्माना हो सकता है। इसके अलावा दोषी छात्रों का शैक्षणिक रिकार्ड पूरी तरह रद्द कर दिया जाता है।

क्या विदेशों में भी नकल माफिया अस्तित्व में हैं?

संगठित नकल माफिया भारत तक सीमित नहीं हैं, विकसित देशों में उनका स्वरूप अलग है:-

संविदात्मक धोखाधड़ी : ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया जैसे देशों में पेपर लीक के बजाय कांट्रैक्ट चीटिंग (पैसे देकर असाइनमेंट या आनलाइन टेस्ट लिखवाना) एक बड़ा संगठित उद्योग बन गया था। इसके जवाब में ब्रिटेन ने स्किल्स एंड पोस्ट-16 एजुकेशन एक्ट, 2022 बनाकर ऐसी व्यावसायिक संस्थाओं को पूरी तरह गैर-कानूनी घोषित कर दिया।

तकनीकी सिंडिकेट: दक्षिण कोरिया और चीन में कोचिंग संस्थानों और तकनीकी सिंडिकेट द्वारा स्मार्ट ग्लासेज, हिडन ईयरफोन और एआइ-डिवाइसेज के जरिए प्रश्नपत्र लीक कराने की कोशिशें सामने आई हैं।

चाकचौबंद परीक्षा प्रणाली के मुख्य आधार

पेपर लीक को रोकने के लिए एक अभेद्य परीक्षा प्रणाली का निर्माण तीन मुख्य स्तंभों पर टिका है:-

तकनीकी सुरक्षा : इसके तहत एंड-टू-एंड एंक्रिप्शन के साथ डिजिटल प्रश्न-पत्र डिलीवरी, रैंडम प्रश्न-पत्र निर्माण, और परीक्षा केंद्रों पर एआइ तथा बायोमेट्रिक आर्थेंटिकेशन का उपयोग अनिवार्य होना चाहिए।

प्रशासनिक नियंत्रण : इसमें प्रिंटिंग प्रेस से लेकर परीक्षा हाल तक जीपीएस-ट्रैक्ड लाकर्स का इस्तेमाल, केवल टू-पर्सन रूल (दो अधिकृत अधिकारियों की अनिवार्य उपस्थिति) में ही प्रश्नपत्र का डिजिटल/भौतिक लाक खोलना, और संवेदनशील चरणों की आउटसोर्सिंग के बजाय सरकारी नियंत्रण बनाए रखना शामिल है।

कड़ा कानूनी शिकंजा : इसके अंतर्गत पेपर लीक मामलों के निपटारे के लिए त्वरित अदालतों का गठन, संगठित नकल माफिया की संपत्ति जब्त करना, और गैर-जमानती धाराओं के साथ सख्त व दीर्घकालिक कारावास का कानूनी प्रावधान सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

भारत में सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम जैसे कड़े कानून बनाए गए हैं, लेकिन केवल कानून कागजों पर होने से समाधान नहीं होगा।

जनसत्ता सरोकार

इंडियन एक्सप्रेस समूह

विमर्श

दो

जनसत्ता | 2 अगस्त, 2026

सबक का वक्त

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

काकरोच जनता पार्टी (काजपा) के जंतर मंतर पर आंदोलन ने ऐसा सबक सिखाया, जिसे भारत की 79 वर्षों की लोकतांत्रिक राजनीति के इतिहास में सियासी दल कभी नहीं सीख पाए। इस तरह के 'सबक' की पहली झलक इसी वर्ष की शुरुआत में दिखाई दी थी, जिसका उल्लेख आगे किया जाएगा।

अब तक इतिहास ने हमें यही सिखाया है कि राजनीतिक दल संघर्ष और चुनाव जीतकर बदलाव ला सकते हैं। यह बात आज भी सच है। कांग्रेस ने उस आंदोलन का नेतृत्व किया, जिससे आजादी मिली। लगातार चुनाव जीतकर कांग्रेस ने भारतीय लोकतंत्र के कई स्तंभ खड़े किए, जैसे- संवैधानिक शासन, धर्मनिरपेक्षता, आरक्षण, भाषाई राज्य, एक स्वतंत्र केंद्रीय बैंक, संसाधनों का बंटवारा इत्यादि। क्षेत्रीय दल जैसे- द्रविड़ पार्टियों ने राज्यों में चुनाव जीते और वहां की भाषा, अधिकार, सांस्कृतिक पहचान तथा भूमि सुधार इत्यादि को प्राथमिकता दी। वर्ष 1975 में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व वाले आंदोलन ने केंद्र सरकार को बदला और आजादी के लिए संवैधानिक सुरक्षा उपाय लागू कराए। वर्ष 1978 में एएएसयू (आसू) आंदोलन से सीमा पार से होने वाले पलायन को नियंत्रित करने के लिए कानूनी प्रावधानों की शुरुआत हुई। असल में, पूरे भरोसे के साथ यह कहा जा सकता है कि भारत के शासन में *सभी* बड़े बदलाव राजनीतिक पार्टियों द्वारा संघर्ष और चुनावों के माध्यम से ही लाए गए थे।

असामान्य योग्यताएं

काजपा पारंपरिक अर्थों में कोई राजनीतिक पार्टी नहीं है। इसकी शुरुआत अभिजीत दिपके नाम के एक व्यक्ति की नाराजगी भरी प्रतिक्रिया के रूप में हुई थी। जाहिर है, दिपके और उनके कुछ दोस्त एक उकसाने वाली टिप्पणी से बहुत आहत हुए थे। दिपके ने एक मंच तैयार किया और पूछा, 'क्या हो अगर सारे काकरोच एक साथ आ जाएं?' उन्होंने कहा कि इस मंच से कोई भी जुड़ सकता है, जो *'बेरोजगार हो, आलसी हो, हर समय आनलाइन रहता हो और जिसमें पेशेवर तरीके से शिकायत करने की काबिलियत हो'*। जाहिर है, ऐसे कई लोग हैं- जिनमें छात्र और शोधार्थी भी शामिल हैं, जो इन अनोखी योग्यताओं पर खरे उतरते हैं! ऐसे भी कई लोग हैं, जो नौकरीपेशा तो हैं, लेकिन हर समय आनलाइन रहते हैं और अपनी आवाज जोरदार तरीके से बुलंद कर सकते हैं। इनमें कलाकार, शिक्षक, चिकित्सक, नर्स, वकील, व्यवसायी, पत्रकार समेत अन्य पेशेवर और कनिष्ठ सरकारी कर्मचारी जैसे सम्मानित लोग शामिल हैं।

इस मंच के पास एक संस्थापक-नेता, प्रवक्ता और मजबूत इरादे हैं, लेकिन इसके अलावा और कुछ खास नहीं है। जहां तक जानकारी है, इसका न कोई संगठन है, न सदस्यता, न पंजीकरण, न घोषित नीतियां और न ही किसी राजनीतिक दल जैसी अन्य विशेषताएं। फिर भी, 35 दिन के विरोध-प्रदर्शन के जरिए काजपा ने दो कैबिनेट मंत्रियों को बातचीत के लिए मजबूर किया, एक मंत्री का इस्तीफा लिया, सरकार को प्रदर्शनकारियों के खिलाफ मामले वापस लेने पर मजबूर किया और सरकार से लिखित आश्वासन भी लिए। यह अभूतपूर्व है।

> मोबाइल फोन, एक्स, फेसबुक और इंस्टाग्राम के जरिए नागरिकों की चुप्पी टूट गई है, अब लगता है कि उनका डर भी खत्म हो गया है। खाकी या नीली वर्दी, पुलिस, लाठी, आंसू गैस, बंदूक और गिरफ्तारी या हिरासत जैसी चीजें अब युवाओं को नहीं डरातीं, और हो सकता है कि बुजुर्ग भी उनका अनुसरण करें। मेरी कामना है कि सियासी दलों से परे और उनके दायरे से बाहर मौजूद यह राजनीतिक क्षेत्र लगातार विस्तृत होता जाए।

नई परिघटना के संकेत

जैसा कि मैंने कहा, राजनीतिक दलों से *अलग* और उनके *दायरे से बाहर* ऐसे सियासी क्षेत्र की पहली झलक इसी साल तमिलनाडु में दिखी थी। जोसेफ विजय ने फरवरी, 2024 में एक राजनीतिक पार्टी तमिलगा वेट्री कषगम (टीवीके) की घोषणा की, लेकिन यह आम राजनीतिक दल का 'स्वरूप' नहीं ले पाई, असल में यह बस एक बेढंगे से 'फैंस एसोसिएशन' (प्रशंसक संघ) की तरह ही बनी रही। इस संगठन के ज्यादातर पदाधिकारी ही अलग-अलग स्तरों पर टीवीके के पदाधिकारी बन गए। इसके उम्मीदवारों का चयन भी पारंपरिक राजनीतिक समझ को दरकिनार करते हुए किया गया- यानी जाति, धर्म, लिंग, विरासत, दौलत वगैरह को नजरअंदाज किया गया। इस पार्टी के 234 में से 200 से ज्यादा उम्मीदवारों के पास न तो पैसा था और न ही उन्होंने किसी अन्य स्रोत से पैसा खर्च किया। अधिकांश विधानसभा क्षेत्रों में टीवीके के उम्मीदवारों का चुनाव प्रचार लगभग न के बराबर था। कई उम्मीदवार अपने चुनाव क्षेत्र के लिए अनजान थे और उनके पास बूथ, पोलिंग या मतगणना एजंट भी बहुत कम थे। विजय ने कुछ ही रोड शो किए और बहुत कम सभाओं को संबोधित किया। ऐसा प्रतीत हुआ कि मतदाताओं के लिए सिर्फ 'विजय' और 'सीटी' का चुनाव चिह्न ही मायने रखता था। इस करिश्मे के पीछे सोशल मीडिया (इंस्टाग्राम और यूट्यूब) का हाथ था: विजय *हर जगह* दिखाई देते थे और *हर घर* में उनकी आवाज सुनी जाती थी। टीवीके ने द्रमुक और अन्नाद्रमुक जैसी दो मजबूत राजनीतिक एवं चुनावी मशीनरी के खिलाफ 108 सीटों पर जीत हासिल की और कुल मतों का 35 फीसद हासिल किया।

किसी भी राजनीतिक दल, नेता, पत्रकार या चुनाव विश्लेषक ने टीवीके की जीत की भविष्यवाणी नहीं की थी। जब चुनाव नतीजे आए, तो टीवीके को भी उतनी ही हैरानी हुई, जितनी की स्थापित राजनीतिक दलों को इस झटके से हुई।

तमिलनाडु में यह राजनीतिक बदलाव उन नागरिकों ने किया, जो सियासी दलों से *परे* और उनके *दायरे से बाहर* थे। तमिलनाडु की मिसाल को देखते हुए, यह कल्पना करना मुश्किल नहीं है कि ऐसे नागरिक भी बदलाव ला सकते हैं, जो एक-दूसरे को न जानते हों, न आपस में बात करते हों और न ही किसी संगठन से जुड़े हों, लेकिन वे अगर *एक जैसी सोच* के साथ मतदान करें, तो पर्याप्त प्रतिनिधि चुनकर सरकार भी बना सकते हैं।

राजनीतिक दलों के लिए चुनौती

राजनीतिक दलों को तमिलनाडु के चुनाव नतीजों और जंतर मंतर पर हुए विरोध-प्रदर्शन के निष्कर्षों पर बारीकी से गौर करना चाहिए। हो सकता है कि संगठित राजनीतिक दल कभी खत्म न हों, लेकिन 'हाई कमान' कार्यकारी समिति, 'जनरल काउंसिल', *महासभा*, सदस्यता और पार्टी चुनाव जैसी पारंपरिक अवधारणाएं बेमानी हो जाएं। 'वोट बैंक' जैसी अप्रिय शब्दावली भी शायद खत्म हो जाए।

मोबाइल फोन, एक्स, फेसबुक और इंस्टाग्राम के जरिए नागरिकों की चुप्पी टूट गई है, अब लगता है कि उनका डर भी खत्म हो गया है। *खाकी* या नीली वर्दी, पुलिस, *लाठी*, आंसू गैस, बंदूक और गिरफ्तारी या हिरासत जैसी चीजें अब युवाओं को नहीं डरातीं, और हो सकता है कि बुजुर्ग भी उनका अनुसरण करें। मेरी कामना है कि सियासी दलों से परे और उनके दायरे से बाहर मौजूद यह राजनीतिक क्षेत्र लगातार विस्तृत होता जाए।

जेन-जी और दूसरे प्रदर्शनकारियों के सामने चुनौतीपूर्ण कार्य-

- सबसे पहले उन्हें विश्वविद्यालयों को मध्ययुगीन सोच और अंधविश्वास से बाहर निकालना होगा।
- वर्दीधारी पुलिस, नैतिक पुलिसिंग और बजरंग दल जैसे स्वयंभू 'प्रवर्तकों' की ताकत का लोकतांत्रिक ढंग से सामना करना होगा।
- कानून के जरिए थोपी गई नैतिकता और भेदभाव के खिलाफ लड़ना होगा।
- स्थानीय राजस्व एवं पंजीकरण कार्यालयों, अस्पतालों, राशन की दुकानों, स्थानीय निकायों और अन्य सरकारी संस्थानों में फैले दमनकारी भ्रष्टाचार को रोकना होगा।

जंतर-मंतर के बाद अब ऐसा लगता है कि बेहतरी के लिए हर बदलाव मुमकिन है।

कसौटी पर लोकतंत्र

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

लोकतंत्र एक ऐसा पौधा है जो जिंदा तब तक रहता है, जब तक आम नागरिक उसकी अहमियत समझते हों। इसलिए पिछले सप्ताह मुझे पहली बार लगने लगा कि भारत में लोकतंत्र को खतरा होने लगा है, ऐसा खतरा जो छिप-छिप कर वार कर रहा है। कहने को तो सब ठीक है। चुनाव होते रहते हैं किसी न किसी राज्य में हर साल। ऊपर से काकरोच जनता पार्टी ने याद दिलाया है सबको कि लोकतंत्र का मतलब, उसका महत्त्व, वे बच्चे भी समझ गए हैं, जिन्होंने शायद कभी वोट नहीं डाला है किसी चुनाव में।

जंतर मंतर पर उन्होंने दिखाया है कि लोकतंत्र का असली मतलब है कि सत्ता हिलाई जा सकती है जब आम लोगों को एहसास होने लगता है कि उनकी निजी शक्ति सत्ताधारियों से कहीं ज्यादा है. सो उस प्रधानमंत्री को उन्होंने घुटनों पर लाकर दिखाया जो अपने बारे में बहुत बार कह चुके हैं कि उनकी छाती छप्पन इंच की है और उनके सामने दुनिया के बाकी नेता बौने लगते हैं। नरेंद्र मोदी ने यह भी दिखाया है कि उनके सामने इस देश के बाकी नेता तो इतने ज्यादा बौने हैं कि उनके राजनीतिक दल तोड़े जा सकते हैं आसानी से। तकरीबन सारे विपक्षी दल टूट कर बिखर चुके हैं इतनी बुरी तरह कि चुनाव मैदान में मोदी के सामने कोई ताकतवर प्रतिद्वंद्वी दिखता ही नहीं है। युवाओं ने जंतर मंतर से अपनी शक्ति न दिखाई होती, तो उनके भक्त कहते फिरते आज भी यकीन से कि 2029 में 'आएगा तो मोदी ही'।

अब लगता है कि मोदी की टीम थोड़ी घबरा गई है। सोशल मीडिया पर जो होने लगा है उसकी तरफ ध्यान आप देंगे, तो देखेंगे कि मोदी सरकार और उनके समर्थकों ने एक ऐसी मुहिम छेड़ रखी है जिसका मकसद है काकरोच जनता पार्टी को बदनाम करना। यह इस आधार पर कह रही हूं मैं कि सोशल मीडिया पर मेरी नजर रहती है दिन भर और वहां से जो आवाज उठती हैं आम लोगों की, उनको मैं सुनती हूं पूरे ध्यान से। सो जब से काकरोच जनता पार्टी ने शिक्षा मंत्री को उनके पद से हटाया है तब से मोदी के खास भक्तों ने ऊंची आवाज में कहना शुरू कर दिया है कि जो हुआ वह अलोकतांत्रिक था और ऐसा किसी दूसरे लोकतांत्रिक देश में हो ही नहीं सकता है। यानी भारत ही एक ऐसा देश है जहां युवाओं को प्रधानमंत्री के खिलाफ उल्टी-सीधी बातें बोलने के बावजूद उन पर कोई कानूनी कार्रवाई नहीं होगी।

हुआ ऐसा कि मैंने एक वीडियो देखा जिसमें अरुंधति राय को दर्शाया गया है जंतर मंतर पर। जहां से वे कहती हैं कि बहुत दिनों बाद उनको भारतीय होने पर गर्व होने लगा है। आगे यह मशहूर लेखिका कहती हैं कि अब वे खुशी से मर सकेंगी, क्योंकि देश के नौजवानों ने ऐसा कुछ करके दिखाया है, जिससे उनके दिल में एक बार फिर उम्मीद जाग गई है। इस वीडियो को एक मोदी भक्त ने 'एक्स' पर डाल कर कहा कि ऐसी बातें किसी और देश में लोग कह नहीं सकते हैं। क्या चीन, उत्तर कोरिया या रूस में इस तरह की बातें कोई कर सकता है?

> सोशल मीडिया की तरफ ध्यान आप देंगे, तो देखेंगे कि मोदी सरकार और उनके समर्थकों ने एक ऐसी मुहिम छेड़ रखी है जिसका मकसद है काकरोच जनता पार्टी को बदनाम करना। जब से काजपा ने शिक्षा मंत्री को उनके पद से हटाया है तबसे मोदी के खास भक्तों ने ऊंची आवाज में कहना शुरू कर दिया है कि जो हुआ वह अलोकतांत्रिक था और ऐसा किसी दूसरे लोकतांत्रिक देश में हो ही नहीं सकता है।

मैंने इस पोस्ट को पढ़ कर 'एक्स' पर टिप्पणी की कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है, सो उसकी तुलना तानाशाही देशों के साथ नहीं, लोकतांत्रिक देशों के साथ करनी चाहिए। यहां याद दिलाना चाहूंगी आपको कि अगर आप अमेरिकी टीवी चैनलों से थोड़ा बहुत भी वाकिफ हैं, तो आपने देखा होगा वहां किस तरह रोज डोनाल्ड ट्रंप का मजाक उड़ाते हैं मशहूर एंकर। कभी उनकी नकल करके, कभी उनकी नीतियों को गलत बता कर और कभी उनके परिवार की कथित भ्रष्ट आदतों पर टिप्पणी करके। हैरान हुई जब मेरी इस टिप्पणी के बाद मुझे कितनी गालियां पड़ीं। कुछ लोगों ने मुझे कहा कि ट्रंप के खिलाफ जिसने भी आवाज उठाई है उसका वीजा रद्द कर उसको सीधे घर वापस भेज दिया जाता है। सच यह है कि किसी विदेशी व्यक्ति ने अपने प्रधानमंत्री के खिलाफ अगर जंतर मंतर पर खड़े होकर आवाज उठाई होती, तो उसके साथ भी ऐसा होता। मगर अरुंधति भारतीय हैं, सो उनके साथ ऐसा नहीं हो सकता है और उनको अपनी बात कहने का पूरा अधिकार है।

मेरी इस बात से सोशल मीडिया पर ऐसी बहस छिड़ गई जिसमें मुझे भी राष्ट्रविरोधी घोषित कर दिया गया और ढेर सारी गालियां सुनने को मिलीं भाजपाइयों से भी और आम लोगों से भी। कुछ लोगों ने कंगना रनौत की तरह यहां तक कहा कि हमारे प्रधानमंत्री को कई लोग भगवान मानते हैं, तो उनके खिलाफ कुछ कहना न सिर्फ गलत है, बल्कि भगवान का अपमान है। इन बातों को सुनने के बाद थोड़ी देर सोच में पड़ गई मैं, इसलिए कि इंदिरा गांधी का आपातकाल भी देखा है मैंने और तब भी चुपके से इंदिरा गांधी को हम लोग खूब गालियां दिया करते थे, और जब '77 का चुनाव आया, तो मतदाताओं ने इंदिरा गांधी और उनके बेटे को उनके अपने चुनाव क्षेत्रों में हरा कर दिखाया कि जनता की कितनी शक्ति है।

मोदी के दौर में जब तक काकरोच जनता पार्टी नहीं बनी थी, किसी ने खुल कर बोलने की अगर हिम्मत नहीं दिखाई है, तो सिर्फ इसलिए कि मोदी के दौर में माहौल खौफ का बन रहा है इतना कि जाने-माने टीवी एंकर भी दबी जुबान अपनी बातें रखते हैं। रही मेरी अपनी बात, तो बेझिझक कहने को तैयार हूं कि मैं खुद फूंक-फूंक के चलती हूं और डर-डर के अपने लेख लिखती हूं। ऐसा उन देशों में नहीं होता है, जहां लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होती हैं। भारत में ये जड़ें इतनी कमजोर हैं कि आम लोग भी मानते हैं कि लोकतंत्र की सीमा चुनाव जीतने तक ही रहती है। लोकतंत्र के लिए यह खतरनाक नहीं है क्या?

भाषा की संवेदना

भाषा

मोनिका भाम्भू कलाना

मनुष्य ने किसी समय ध्वनि संकेतों से स्वयं को अभिव्यक्त करना सीखा होगा, जिससे भाषा बनी होगी। भाषा और मनुष्य के बीच संबंधों के कई सिरे हैं। यह सीधा और इकहरा संबंध नहीं है। भाषा केवल सामाजिक जुड़ाव और विचारों की अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं होकर मनुष्य की सांस्कृतिक पहचान का अनिवार्य अंग होती है। किसी जन समुदाय की संस्कृति का सर्वाधिक जीवंत और मूर्त रूप उसकी भाषा में ही मिलता है। किसी संस्कृति का अतीत मिथकों के साथ-साथ उसकी भाषा की अवधारणाओं में भी ध्वनित होता है। भाषा के माध्यम से हम केवल अपने विचारों को व्यक्त नहीं करते, बल्कि हम उसमें स्वयं को व्यक्त करते हैं। सच यह है कि भाषा के बिना मनुष्य कुछ भी नहीं है। पशु और देवता के बीच मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो अपना अन्वेषण स्वयं करता है। भाषा उसके इस आत्म अन्वेषण का औजार है। यह मनुष्य के शरीर का अदृश्य अंग है, दृष्टि है। सच यह है कि भाषा चाहे किसी भी रूप में अभिव्यक्त हो, उसके बिना मनुष्य में कोई आत्मदृष्टि नहीं बन सकती।

भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम भर नहीं होती, वह संस्कृति की वाहक होती है। किसी संस्कृति के बिखर जाने पर भी उसका सत्य उसकी भाषा में जीवित रहता है। मनुष्य के विकास के दौरान प्रत्येक भाषा की विशिष्ट संरचना बनती है, लेकिन एक बार अस्तित्व ग्रहण करके वह मनुष्य की अन्तः प्रक्रियाओं को प्रभावित करने लगती है। भाषा केवल किसी समाज के सांसारिक प्रयोजनों को साधने का माध्यम भर नहीं होती, बल्कि समाज के अंदरूनी स्वभाव उसके संवेदन तंत्र और चरित्र को भी निर्धारित करती है। प्रत्येक भाषा की अपनी दृष्टि होती है, जिसके सहारे वह दुनिया को देखती-परखती है। भाषा हमारी संस्कृति का, हमारी अस्मिता का महत्त्वपूर्ण अंग है। संस्कृति के जो बिंब, मिथक, रूपक और विशिष्ट प्रतीक होते हैं, वे सब उसकी भाषा से ही उसके साहित्य में स्थान पाते हैं। भाषाओं के अपने मिथकीय स्रोत उनकी दुनिया, उनकी संरचना को प्रभावित करते हैं। इसलिए एक ही दुनिया में होते हुए हर भाषा की अपनी अलग दुनिया होती है और अपना भूगोल होता है।

प्रत्येक भाषा संस्कृति सापेक्ष होती है। संस्कृति का दर्शन उसकी भाषा से छनकर आता है। इस तरह भाषा संस्कृति के दर्शन को उजागर करने वाली खिड़की है। यह एक माध्यम मात्र न होकर स्वायत्त शक्ति का एक साधन है। किसी समाज और संस्कृति की धार्मिक-संवेदनाएं, विश्वास, आस्था और मिथकीय चेतना उसकी भाषा में अपने स्मृति-चिह्न छोड़ती हैं। किसी संस्कृति की पहचान उसके यथार्थ तक सीमित न होकर उसके स्वप्नों तक विस्तृत होती है। इसलिए संस्कृति की बुनावट में भाषा का महत्त्वपूर्ण योग रहता है। संस्कृति के स्वप्न उसकी स्मृतियों द्वारा निर्धारित होते हैं। हमें इस पर ध्यान देने की जरूरत है कि भाषा के प्रश्न को महज साहित्य सृजन का प्रश्न मानकर नहीं टाला जा सकता। वह हमारी सांस्कृतिक मनीषा की बुनावट से जुड़ा है, हमारे संस्कार और हमारी स्मृतियां उसी से आकार ग्रहण करते हैं।

आज जब शब्द पर अनेक साधनों से आक्रमण किया जा रहा है, राजनीति, सिनेमा विज्ञापन और प्रचार द्वारा उसके आत्यंतिक चरित्र को भ्रष्ट किया जा रहा हो, अनेक साधनों और माध्यमों से उसे कुंद किया जा रहा हो, वहां अपनी भाषा के प्रति प्रतिबद्धता केवल साहित्यिक मूल्य नहीं होकर एक सामाजिक मूल्य भी होना चाहिए। अन्य सामाजिक प्रतिबद्धताएं और मूल्य किसी काम के नहीं रहेंगे अगर हम अपनी भाषा के प्रति संवेदनशील रुख नहीं अपनाएंगे। साहित्यकार अनेक माध्यमों से दूषित हुए शब्द को फिर से सार्थकता प्रदान करने की कोशिश करते हैं, लेकिन कोई भाषा केवल साहित्य और साहित्यिक के लिए ही नहीं, संस्कृति, समाज और स्वयं मनुष्य की अस्मिता के लिए भी बहुत जरूरी होती है। किसी समाज की संस्कृति जीवित ही नहीं रह सकती, अगर उसकी भाषा मृत हो जाती है। अगर हमारे अतीत का सब कुछ मर-मिट जाए, लेकिन भाषा बची रहे, तब भी एक समाज के सदस्य आपस में संवाद कर सकते हैं, वे अवचेतन रूप में अपने अतीत से जुड़े रहते हैं और अतीत अदृश्य रूप में उनके वर्तमान में प्रवाहित होता रहता है। किसी देश की संस्कृति ऐतिहासिक झंझावातों द्वारा क्षत-विक्षत भले ही हो जाए, उसका सत्य उसी भाषा में बचा रहता है। इस तरह, भाषा भीतर के सत्य और बाहर के यथार्थ के बीच सेतु का काम करती है।

आज तकनीक और संचार साधनों के बढ़ने के साथ जिस अनुपात में भाषा को भ्रष्ट करने के साधन बढ़े हैं, शब्द और अर्थ में अंतराल होता जा रहा है, वैसे-वैसे हम अपनी भाषा से दूर होते जा रहे हैं। शब्द निरर्थक हो रहे हैं। कई बार ऐसा लगता है कि वे कुछ भी संप्रेषित नहीं कर पा रहे। हम संवाद से दूर हो रहे हैं। अपने भीतर सिकुड़ते-सिकुड़ते हम भाषा की दुनिया से बाहर हो गए हैं। भाषा हमसे अलग हो रही है।

> जब कोई भाषा केवल संप्रेषण का साधन बनने तक सीमित हो जाती है, तो आखिरकार वह संप्रेषण में भी असमर्थ होने लगती है। अपनी भाषा को जीवित रखकर ही हम अपनी संस्कृति और उसके भीतर बनने वाली पहचान को जिंदा रखते हैं। किसी भाषा का होना या बचे रहना ही उसका जीवित होना नहीं होता। जीवित भाषा समाज, साहित्य, कलात्मक अनुभवों में सक्रिय होती है। अपनी संस्कृति की जीवंतता के लिए भाषा को भ्रष्ट होने से बचाना आवश्यक है।

जब कोई भाषा केवल संप्रेषण का साधन बनने तक सीमित हो जाती है, तो आखिरकार वह संप्रेषण में भी असमर्थ होने लगती है। अपनी भाषा को जीवित रखकर ही हम अपनी संस्कृति और उसके भीतर बनने वाली पहचान को जिंदा रखते हैं। किसी भाषा का होना या बचे रहना ही उसका जीवित होना नहीं होता। जीवित भाषा समाज, साहित्य, कलात्मक अनुभवों में सक्रिय होती है। अपनी संस्कृति की जीवंतता के लिए भाषा को भ्रष्ट होने से बचाना आवश्यक है। हम अपने भावों, मिथकों, अनुभवों को भाषा के माध्यम से ही संरक्षित कर सकते हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में जब अंग्रेजी बाजार और तकनीक की भाषा के रूप में हावी है, इसके वर्चस्व तले अपनी देशी भाषाओं का भी संरक्षण जरूरी है। दुनिया में शिक्षा, तकनीक और करिअर में जब एक ही भाषा को प्राथमिकता मिलती है, तब कुछ देशों, भाषाओं और संस्कृति के लिए यह एक तरह से आक्रमण है। इस आक्रमण को रोकने की सामर्थ्य हममें हो न हो, प्रतिरोध करने की क्षमता तो है ही।

धारणाओं के बरक्स

बाखबर

सुधीश पचौरी

संसद नहीं, सड़क तय करेगी..! अफसोस कि 'शाहीन बाग-2' बनने से रह गया..! शिक्षा मंत्री पर आरोप लगाने पर सत्ता पक्ष की मांग कि विपक्षी सांसद माफी मांगें..!

फिर 'राष्ट्रीय परीक्षा समिति' के सदस्य, एक नामी वैज्ञानिक पर एक सांसद का कटाक्ष कि वे तो गौमूत्र विशेषज्ञ हैं... पर संसद में हंगामा। सत्ता पक्ष की विपक्षी सदस्य से माफी की मांग। फिर 215 पूर्व उपकुलपतियों की सांसद को चिट्ठी कि नामी वैज्ञानिक का मजाक उड़ाना उचित नहीं। फिर संसद में आया 'छात्र, इडियट और भक्त' की कहानी का कटाक्ष कि तुरंत 'इडियट' शब्द पर हुआ एतराज कि 'इडियट' शब्द असंसदीय' है।

फिर एक 'काकरोची' धमकी, कि अगर प्रदर्शनकारियों पर कार्रवाई बंद नहीं हुई, तो हम फिर जंतर मंतर पर बैठ जाएंगे। उधर सर्वोच्च अदालत की व्यवस्था कि विद्यार्थियों को बख्शा जाए, लेकिन पेशेवर उपद्रवियों और हिंसा करने वालों को सजा दी जाए। फिर पुलिस के हवाले से खबर कि हिंसक उपद्रवियों के चेहरों की शिनाख्त की गई, उनकी संख्या ढाई हजार से अधिक... इनको नहीं बख्शा जा सकता..! एक 'राष्ट्रवादी चैनल' मांग करता रहा कि जिन्होंने उपद्रव किया, उनको नहीं छोड़ा जाना चाहिए, वरना पुलिस के 'मनोबल' का क्या होगा? काकरोच पार्टी की 'फिर से बैठने' की धमकी पर चर्चक विभक्त। कुछ प्रदर्शनकारियों के हमदर्द, तो कुछ शरारती तत्त्वों की हिंसा के खिलाफ 'सख्त कार्रवाई' की मांग करते हुए।

प्रधानमंत्री की 'जवाबी रीलों' पर भी विवाद। कुछ चर्चकों द्वारा जेन-जी पीढ़ी से उसी की भाषा में संबोधित करने की प्रधानमंत्री की पहल की तारीफ, तो कुछ ने उड़ाया इसका भी मजाक। संसद में सत्तापक्ष 'हाथ बांधे' दिखता है, जबकि विपक्षी दलों के कई नेता, सत्तापक्ष के प्रति प्रायः 'सख्त भाषा' का उपयोग करते दिखते हैं। मगर गुरुवार को कुछ चैनलों ने जो दिखाया उसे देख 'जेन-जी' पीढ़ी के एक से एक 'गाली वीरों' की कलई खुलती दिखी। जो 'जेन-जी' गाली देकर 'गालीवीर' बने दिखते थे, वे अचानक माफी मांगते और गाली देने को गलती मानते दिखे। 'जेन-जी' पीढ़ी की ऐसी वीरता पर घर बैठ प्रदर्शन की गंगा में डुबकी लगाने वाले कई उस्ताद कहते दिखते हैं कि सत्ता उनको तंग कर रही है... हम इसका विरोध करेंगे..! लेकिन जिस पर बीतती है, वही जानता है कि एक हद के आगे कोई सत्ता नहीं सहती..! बेचारे जेन-जी क्या जानें कि जिस 'गाली रील' बनाने को वे अपना 'जनतांत्रिक अधिकार' समझ रहे थे, वह उनको कानून की जद में ले आ सकता है। इसीलिए घबरा रहे हैं। जब कानून अपनी पर आता है, तो बड़े-बड़े सूरमा त्राहि-त्राहि करने लगते हैं।

> फिर एक 'काकरोची' धमकी, कि अगर प्रदर्शनकारियों पर कार्रवाई बंद नहीं हुई, तो हम फिर जंतर मंतर पर बैठ जाएंगे। उधर सर्वोच्च अदालत की व्यवस्था कि विद्यार्थियों को बख्शा जाए, लेकिन पेशेवर उपद्रवियों और हिंसा करने वालों को सजा दी जाए।

शुक्रवार की सुबह कई चैनलों पर अचानक 'अल्फा पीढ़ी' की एक बच्ची कहती दिखी कि प्रधानमंत्री अंकल जी, आप तनाव मत लो, हम आपके साथ हैं..! एक बच्चे ने भी कहा कि वह जेन-जी है, तो हम अल्फा है... हम आपके साथ हैं..! तीसरी बच्ची ने तो प्रधानमंत्री के पक्ष में एक कविता ही सुना दी। यानी अभी लड़ाई जारी है। हिंसा के बुरी तरह शिकार बने पुलिसकर्मियों के परिजनों ने एक संवाददाता सम्मेलन करके पुलिसकर्मियों के विरोध में अब तक चलाई जाती धारणा का मानो सटीक जवाब दिया और कई चैनलों के जरिए एक नया पुलिस यथार्थ पहली बार सामने आया। आहत पुलिसजनों के परिवारियों का कहना था कि पुलिस वाले भी इंसान होते हैं; प्रदर्शनकारियों को अनुशासित करने में पुलिसकर्मियों द्वारा झेली जाती कठिनाइयों और उन पर शरारती तत्त्वों द्वारा किए जाते हमले तथा उनके घायल होने की आपबीती कभी सामने नहीं आती।

एक घायल हुए पुलिस अफसर की पत्नी ने अपनी भीगी आवाज में कहा कि पुलिस वाले सिर्फ वर्दी नहीं होते, उनके भी परिवार होते हैं, जो इंतजार करते हैं कि पापा सही सलामत कब वापस आएंगे। एक बेटी बोली कि मेरे पिता को लगभग लिंच कर दिया गया था! जिन्होंने हमला किया, वे अपनी हिफाजत के लिए सुप्रीम कोर्ट जा रहे थे, तो इसे देख अपने को बचाने के लिए हम भी सुप्रीम कोर्ट गए और न्याय की मांग की। दूसरी महिला बोली- मेरे पति एएसआइ हैं। वे ड्यूटी कर रहे थे। भीड़ में आए कुछ शरारती तत्त्वों ने पत्थरों से हमला किया। उनका हेल्मेट तक टूट गया। वे बुरी तरह घायल हो गए। उसी जगह एक और पत्थर लग जाता, तो वे आज कहां होते? मैं तो कहूंगी कि संसद में पुलिस पर हुए हमलों का संज्ञान लिया जाए... हमारे खिलाफ जो प्रचार किया जा रहा है, वह गलत है। एक युवा बोला- मेरे पापा पुलिस अफसर हैं। 25 जुलाई की रात को पता चला कि अस्पताल में उनको छह टांके लगे। राउडी तत्त्वों ने पत्थर मारे... उनका सिर फट गया..। एक लड़की ने कहा- मेरे पिता को 25 जुलाई की रात गंभीर चोट लगी।

फिर आया एक चैनल पर काकरोच पार्टी के अभिजीत दिपके का साक्षात्कार... कि युवाओं का गुस्सा अब भी सुलग रहा है..!

एक बार मिल लो

कहानी

सुमन बाजपेयी

जैसे ही कैब से उतर कर घर में प्रवेश किया, मां ने लपक कर गले लगाते हुए पूछा, 'कैसी है?' खुशी उनके शब्दों से झर रही थी। 'अच्छी हूं।' आदतन संक्षिप्त उत्तर दिया। बचपन से ही ऐसी है वह। लंबे-लंबे संवाद उसे उबाते हैं। जो भी कुछ कह रहा होता, तो बिना सोचे-समझे कि उसे बुरा लग सकता है, उसकी बात काटते हुए कह देती थी, 'कट शार्ट। इतनी लंबी भूमिका बांधने की क्या जरूरत है? कम शब्दों में कहोगे तब भी बात समझ आ जाएगी।' बोलने वाला चुप ही हो जाता था, और इस तरह न जाने कितनी बातें अनकही रह गईं। हालांकि, अब थोड़ा बदल रही है वह। इसकी वजह शरद है। वह बहुत बातें करना पसंद करता है। उसका बस चले तो चुप ही न हो। कहता है, 'इंसान को अगर गलतफहमियों से बचना है तो एक्सप्रेसिव होना चाहिए।'

'अच्छी हूं। मतलब खुश तो है न? सुखी तो है न?'

'कभी अपनी भी चिंता किया करो। कितनी थकी-थकी लग रही हो?' मां ने हैरानी से उसकी ओर देखा था। हैरानी की बात तो थी उनके लिए, क्योंकि पहले तो कभी मां के प्रति ऐसी संवेदना या चिंता मन में जगी नहीं थी उसके अंदर। सच तो यह है कि विवाह के बाद ही बहुत कुछ समझ पाई है वह। छह महीनों में जैसे एक अलग ही दुनिया जी ली है उसने। आजतक वह हमेशा अपनी मनमर्जी करती आई थी। वह कैसे समझ पाती मां की पीड़ा को। दो बहनों और छोटे भाई को पालने में उम्र बिता दी मां ने। पापा के लिए मां हमेशा ऐसी घरेलू महिला रहीं जिनका काम घर संभालना, उनकी जरूरतें पूरी करना और बहुत सारी परेशानियों से उन्हें मुक्त रखना ही रहा।

पापा ने तो कभी मां को प्यार भरी नजरों से देखा तक नहीं। यहां तक कि ललचाई दृष्टि से भी नहीं। कभी उनके सौंदर्य की, उनकी देह के लचीलेपन को सराहा भी नहीं। उनके लंबे बालों पर रश्क नहीं किया। कभी उनके साथ बैठ कर वक्त भी नहीं गुजारा। कभी बात की भी तो पैसों को लेकर या हिदायत देने के लिए कि तुम्हें न समय प्रबंधन आता है, न ठीक से गृहस्थी चलाना। पैसे बचा कर रखना तुम्हारी जिम्मेदारी है। जब पापा अपना गुबार निकाल कर जाने लगते तो मां कैसे उन्हें हसरत भरी निगाहों से देखती थीं।

'मुझे इस बात की खुशी है कि तेरी अकड़ में कमी आई है।' 'प्रेम जादुई होता है न मां। तुमसे बेहतर और कौन समझ सकता है?' 'क्या मतलब?' मां चौंक उठी थीं। मां की आंखों में न जाने उस पल कितने सपने तैरते दिखे थे उसे। 'मुझे तसल्ली है कि तू खुश है। शरद अच्छा पति है। कम से कम तेरे पापा जैसा नहीं। वह होते तो शायद समझ पाते कि पति का दोस्त बनना कितना जरूरी है।' मां ऐसे बोलीं, मानो किसी और दुनिया में पहुंच गई हों। वरना शिकायत करते कहां देखा है उसने कभी उन्हें।

उसकी बात सुन मां माथे पर हाथ रख रसोई में रखे स्टूल पर बैठ गईं और बहुत अजीब सी नजरों से उसे देखा। बहुत कुछ था उस पल उनकी नजरों में।

'पति से ज्यादा दोस्त ही है शरद। तभी बहुत कुछ सीख पाई हूं और प्रेम के एहसास के भीतर छिपे सच को भी जान पा रही हूं।' 'कैसा सच?' 'यही कि प्यार को जो महसूस कर लेता है, उससे हमेशा जुड़ा रहता है। बेशक समय के साथ उसे कहीं छिपा कर रख दे, पर प्यार कभी मरता नहीं और एहसास को मरने भी नहीं देता है। फिर तुमने क्यों कभी जीने की कोशिश नहीं की मां? जिनसे प्यार करती थीं, उनके ख्याल ने कभी आपको बागी नहीं बनाया। एक बार भी शिवम काका से मिलने की इच्छा नहीं हुई?'

अवाक खड़ी मां उसे ऐसे देखने लगीं मानो उसने उनके पांव से जमीन खींच ली हो। 'क्या बकवास कर रही है मिट्ठू? तुझे यह सब कैसे पता?' 'मैं मिली हूं उनसे। मेरी ससुराल के बगल वाले घर में रहते हैं। उन्होंने ही बताया कि तुम और वह बचपन में पगडंडियों पर साथ चलते-चलते ही जवान हुए।'

उसकी बात सुन मां माथे पर हाथ रख रसोई में रखे स्टूल पर बैठ गईं और बहुत अजीब सी नजरों से उसे देखा। बहुत कुछ था उस पल उनकी नजरों में। वह सोच रही थीं अपने बचपन के साथी शिवम के बारे में। एक ही पगडंडी पर दोनों साथ चलते थे और उस पगडंडी ने जैसे उनके जीवन को भी एक कर दिया था। एक साथ स्कूल जाते थे और रास्ते में वह कभी उसको कच्ची इमली तोड़ कर देता तो कभी आम से उसकी झोली भर देता। कालेज तक वे साथ रहे, फिर शिवम आगे की पढ़ाई के लिए कोलकाता चला गया और उनकी शादी कर दी गई। वही था जो बहुत प्यार से उनका नाम लेता था। जब वह उनको रूमी कहकर पुकारता था, तो लगता था मानो कोई धुन बज रही है। याद नहीं उन्हें कि कभी मिट्ठू के पापा ने उन्हें नाम लेकर पुकारा हो। हमेशा मिट्ठू की मां, सोनम की मां, परितोष की मां, यही कहा। सच अपना नाम भूल ही गई हैं वह।

'एक बार मिलना नहीं चाहोगी उनसे?' उसने रात में पूछा। मां से लिपट गई थी वह। वह उन्हें प्रेम का अनुभव करवाना चाहती थी जो उन्हें पापा से कभी नहीं मिला 'मां, जिंदा रहने के लिए प्रेम का होना बहुत जरूरी है, और तुम्हें अपने प्यार को जिंदा रखना चाहिए। मिल लो एक बार शिवम काका से। वह इसी शहर में हैं। मैं उन्हें अपने साथ ही लाई हूं। होटल में ठहरे हैं।' 'अब क्या करूंगी मिलकर मिट्ठू? क्यों अतीत को वर्तमान में उलझा रही है। जो बीत गया उस पर धूल पड़ी रहने दे।' 'एक बार अपने मन की बात तो कह दो।' 'क्या हो जाएगा?' 'कुछ नहीं। तुम्हारे चेहरे पर रौनक तो लौट आएगी। जब-जब शिवम काका के बारे में सोचोगी जीने की उमंग तो पैदा होगी। और उन्हें भी हक है कि वह एक बार तो तुमसे मिलकर जान लें कि तुम उनसे प्रेम करती थीं। इसमें कुछ गलत नहीं। बेशक मन ही मन तुम दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते थे, पर कभी कहा तो नहीं। अपने प्रेम की स्वीकृति देकर, अपनी भावनाओं को शब्द देकर उस अफसोस से तो बाहर निकल आओ। स्वीकृति का अधिकार तुम दोनों को है। उस स्वीकृति के सहारे जीना आसान हो जाएगा तुम दोनों के लिए। तुम बस एक बार मिल लो शिवम काका से।' मां कुछ बोली नहीं, पर उनके निस्तेज चेहरे पर एक अजीब सी चमक बिखरी।

सुबह चाय का प्याला उसे थमाते हुए मां बोलीं, 'कब चलना है?'

समय सूचक

आज भी चमत्कृत करती है चित्रलेखा

जनसत्ता सरोकार

एक स्त्री को कैसी होना चाहिए? आए दिन हमें स्त्रियों के चारित्रिक गुण की सूची मिलती रहती है। ऐसे में उस किरदार को परखते हैं, जिसने एक सदी पहले कहा था कि स्त्री को वैसी ही होना चाहिए, जैसी वह होना चाहती है। भगवतीचरण वर्मा ने 1934 में चित्रलेखा की रचना की थी। उपन्यास का आधार यह सवाल था कि पाप क्या है? इस एकल प्रश्न के बहुवैकल्पिक उत्तर के रूप में सामने आती है चित्रलेखा। लेखक ने पाप और पुण्य के सवालों के बरक्स एक नगरवधू के किरदार को चुना। भारतीय साहित्य में कई अन्य संदर्भों में भी नगरवधुओं के किरदार को ऊंचाई दी गई है। भगवतीचरण वर्मा नगरवधू के जरिए जिस तरह के सामाजिक व सांस्कृतिक द्वंद्व दिखाते हैं वह आज एक सदी के बाद भी प्रासंगिक लगता है।

चित्रलेखा

चित्रलेखा नगरवधू है। वह किसी पुरुष की निजी संपत्ति नहीं है। वह अपना जीवन अपनी शर्तों पर जीती है। इसलिए धर्म, नैतिकता और समाज के बनाए हुए नियम उसके सामने ठिठक कर खड़े हो जाते हैं, क्योंकि चित्रलेखा इनसे प्रश्न पूछती है, तुम्हें जीवन में क्यों और कितना शामिल किया जाए। वह प्रेम भी करती है, विरह भी सहती है और समाज के कठोर निर्णयों के बरक्स अपने सिद्धांतों पर अटल भी रहती है। चित्रलेखा का संबंध बीजगुप्त नामक सामंत से होता है। इस संबंध में भी चित्रलेखा का मर्म यही है कि मैंने प्रेम स्वीकारा है, दासत्व नहीं। वहीं चित्रलेखा का सामना तपस्वी कुमारगिरी से भी होता है। चित्रलेखा का सौंदर्य और उसका दार्शनिक पक्ष कुमारगिरी के वैराग्य को भी चुनौती दे डालता है। चित्रलेखा, बीजगुप्त और कुमारगिरी के जरिए उपन्यास इसी नतीजे पर निकलता है कि मनुष्य का व्यक्तित्व उसकी परिस्थितियों का हासिल होता है। पाप और पुण्य मनुष्य का कोई स्थायी जैविक गुण नहीं है। कोई भी मनुष्य अपनी परिस्थितियों के अनुसार ही पापी या योगी होता है।

जादुई कुआं

बाल कथा

ललित शौर्य

माधवपुर नाम का एक गांव था। गांव में रात होते ही सन्नाटा छा जाता था। वहां रहने वाले बच्चे, जवान और बूढ़े सभी डरे-डरे से रहते। माधवपुर के पास ही एक पुराना कुआं था। उसके पास जाने से लोग डरते थे। ऐसा कहा जाता था कि उस कुएं के पास कोई भी जाता तो वह जिंदा लौट कर नहीं आता। सभी को अपनी जान का खतरा बना रहता था।

एक रात किसी के चीखने की आवाजें सुनाई दीं। सभी गांव वाले अपने घरों में दुबक गए। सभी को लगने लगा था कि जरूर आज कोई कुएं के पास गया होगा, वहीं से ये आवाजें आ रही हैं। अगले दिन सुबह होते ही कुछ लोग हिम्मत करके कुएं के पास गए। कुएं के आस-पास बहुत सारा सामान बिखरा पड़ा था। 'शायद ये कोई व्यपारी रहा होगा। तभी भूला-भटका कुएं के पास चला गया। गांव का होता तो कुएं के पास न जाता।', एक ग्रामीण ने कहा। 'चलो-चलो अब यहां से चलते हैं। कहीं हम भी इस कुएं के शिकार न हो जाएं।' एक बुजुर्ग ने डरते हुए कहा। किसी की हिम्मत नहीं हुई कि वह कुएं में झांक कर भी देख सके। सभी वहां से वापस गांव की ओर चल दिए।

इसी गांव में एक गरीब लकड़हारा रहता था, जिसका नाम भोलू था। वह अनाथ था। भोलू बहुत मेहनती था। जब भोलू ने ये बात सुनी कि कोई व्यापारी कुएं का शिकार हो गया है तो वह बहुत विचलित हो गया। उसने दिन का खाना भी नहीं खाया। वह गांव वालों को कुएं के खौफ से मुक्ति दिलाना चाहता था।

शाम होने को थी। भोलू अपनी कुटिया में बैठा हुआ था। उसे बाहर किसी की आवाज सुनाई दी। वह दौड़कर बाहर गया। वहां एक बुढ़िया बेसुध पड़ी थी। वह भूख-भूख, प्यास-प्यास बोल रही थी। भोलू ने अपने लिए खाने को जो कुछ भी बनाया था वह उस बुढ़िया को दे दिया। खाने के बाद बुढ़िया को थोड़ा होश आया। उसने बताया, 'मैं दूसरे गांव की रहने वाली हूं। माधवपुर से आगे वाले गांव में मेरी बेटी रहती है, मैं वहीं जा रही थी। तुमने मुझे खाना तो खिला दिया। लेकिन पानी नहीं पिलाया। मुझे बहुत प्यास लगी है। थोड़ा पानी पिला दो।'

भोलू बुढ़िया के लिए पानी लेने को उठा। 'ठहरो मैं तुम्हारे घर का पानी नहीं पी सकती। मुझे गांव के पास वाले कुएं का पानी पीना है।', बुढ़िया ने कहा। कुएं का नाम सुनते ही भोलू के हाथ से गिलास नीचे गिर गया। वह पसीना-पसीना हो गया।

'क्या हुआ। तुम मुझे प्यासा ही मरने दोगे। मेरे लिए पानी नहीं लाओगे।' बुढ़िया ने कहा। भोलू ने एक सांस में कुएं की सारी कहानी बुढ़िया को बता दी। ये सब सुनकर बुढ़िया मुस्कुराने लगी।

'कुछ भी हो मुझे उसी कुएं का पानी चाहिए। अगर तुम पानी नहीं लाए तो मैं प्यासी तुम्हारी झोपड़ी में दम तोड़ दूंगी।', बुढ़िया बोली। भोलू बहुत दुविधा में फंस गया था। फिर उसने निर्णय लिया कि जो उसकी शरण में आया है उसकी सेवा करना उसका धर्म है। वह एक घड़ा लेकर पानी भरने को बाहर निकलने लगा। जैसे ही उसने दरवाजे से बाहर कदम रखा एक तेज रोशनी हुई। वह बुढ़िया एक सुंदर परी में बदल गई। भोलू ये देख कर डर सा गया था। 'तुम कौन हो। कहीं कुएं वाला दैत्य तुम ही तो नहीं।', भोलू ने डरते हुए पूछा।

'नहीं, नहीं। डरो नहीं। ऐसा कुछ भी नहीं है। मैं सोनपरी हूं। तुम्हारे सेवा भाव की परीक्षा लेने आई थी। तुम वास्तव में बहुत अच्छे इंसान हो। मांगों क्या मांगते हो। मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर सकती हूं।' परी ने कहा।

भोलू सोचने लगा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या मांगे। कभी उसके दिमाग में आ रहा था कि वह अपने लिए सुंदर घर, कपड़े और खाने की चीजें मांग ले। कभी ये खयाल आता कि गांव से बाहर एक बड़ा सा महल बनवा ले। लेकिन फिर उसके दिमाग में आया कि क्यों न परी से कहकर कुएं वाले दैत्य का अंत करवा दिया जाए, जिससे गांव वाले चैन से रह सकें। फिर वह भी गांव में आराम से रह सकता है। उसने अपने मन की बात परी को बता दी।

परी और भोलू दोनों उस कुएं के पास पहुंच गए। कुएं के पास पहुंचते ही परी ने अपनी छड़ी घुमाई। कुएं के अंदर से आग की लपटें उठने लगीं। थोड़ी ही देर में एक दैत्य कराहते हुए बाहर निकला। उसके पूरे शरीर में आग लग चुकी थी। कुछ ही क्षणों में वह जलकर भस्म हो गया। परी ने अपनी जादुई छड़ी से कुएं को बहुत सुंदर बना दिया।

भोलू की बात सुनकर परी मुस्कुराई। 'तुम अपने लिए कुछ नहीं मांग रहे हो। तुमने गांव की भलाई के लिए अपनी इच्छाओं को खत्म कर दिया। यही इंसानियत है। मैं अभी उस पापी दैत्य का नाश करती हूं। चलो मेरे साथ।' परी ने कहा।

परी और भोलू दोनों उस कुएं के पास पहुंच गए। कुएं के पास पहुंचते ही परी ने अपनी छड़ी घुमाई। कुएं के अंदर से आग की लपटें उठने लगी। थोड़ी ही देर में एक दैत्य कराहते हुए बाहर निकला। उसके पूरे शरीर में आग लग चुकी थी। कुछ ही क्षणों में वह जलकर भस्म हो गया। परी ने अपनी जादुई छड़ी से कुएं को बहुत सुंदर बना दिया। कुआं पानी से लबालब हो गया। ये सब देखकर भोलू बहुत खुश हो गया।

'मैं तुम्हें एक उपहार भी देना चाहती हूं।' परी ने छड़ी घुमाते हुए कहा। देखते ही देखते कुएं के पास एक शानदार महल खड़ा हो गया। उसमें सारी सुख-सुविधाएं थी। भोलू को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। परी ने भोलू से कहा, 'ये सब तुम्हारा है। तुम्हारी सच्ची भावनाओं, उदारता का ये उपहार है। तुम यहां अब आराम से रह सकते हो। तुम्हें कोई भी कष्ट नहीं होगा।' भोलू परी से कुछ कहता तब तक वह गायब हो चुकी थी। इस सबके बाद भोलू गांव की ओर दौड़ा। आधी रात को हर घर का दरवाजा खटखटा कर उसने दैत्य के खात्मे की खबर दी। पूरा गांव खुशी से झूम उठा।

सच स्वीकारते सुधा और चंदर

जनसत्ता सरोकार

'गुनाहों का देवता' के चंदर और सुधा ने लंबे समय तक प्रेम की आदर्श स्थिति पर बहस चलाई है। धर्मवीर भारती का चंदर प्रेम को जीता नहीं है, बल्कि उसकी पूजा करता है। वह अपने गुरु के प्रति आदर्श की चारदीवारी खड़ी कर उसी में कैद हो जाता है। चंदर हर निर्णय को नैतिकता पर इतना परखता है कि सबसे ज्यादा अनैतिक परिणाम सामने आता है। उसकी प्रेमिका सुधा भी प्रेम के आगे पिता के निर्णय को सर्वोच्च मानती है। न दो लोग प्रेम कर पाते हैं, न खुश रह पाते हैं। उनका जीवन एक शून्य में तब्दील हो जाता है।

मार्गदर्शन

धर्मवीर भारती के चंदर और सुधा की दिक्कत है, सच से दूर भागना। सच के लिए प्रयास नहीं करना। पिछले दिनों नेटफ्लिक्स पर आई सीरिज 'मुसाफिर कैफे' में भी चंदर और सुधा दिखते हैं। दिव्य प्रकाश दुबे की रचना पर आधारित इस सीरिज के चंदर और सुधा प्रेम की नई परिभाषा गढ़ते हैं। 'गुनाहों का देवता' वाले चंदर और सुधा के पाठकों को अवसाद से बाहर निकालते हैं। नई सुधा अपनी सोच को लेकर पूरी तरह साफ है। वह अच्छी तरह जानती है कि उसे जीवन में क्या और कैसे पाना है। वह खुद को लेकर सच बोलने से डरती नहीं है। उसने किसी को निजी संपत्ति की तरह पाने की इच्छा नहीं रखी है तो वह इस खोने और पाने के खौफ से मुक्त है। 2026 की सुधा का सूत्र वाक्य है, 'किसी के होने का आपके जीवन पर उतना ही असर होता है, जितना उसके नहीं होने का।' अपने खास लक्ष्य के निर्धारण तक वह किसी को उस स्तर पर नहीं पाना चाहती है कि फिर उसे खोने से डर लग जाए। डर...हां सुधा सच स्वीकारने से डरती नहीं है। वह चंदर को भी अपना सच पहचानने के लिए प्रेरित करती है।

धर्मवीर भारती के सुधा और चंदर की असली त्रासदी यही थी कि दोनों एक-दूसरे से सच नहीं बोल सके। प्रेम में सबसे जरूरी है-संवाद। बिना संवाद के आपका त्याग भी पहचान-विहीन रह जाएगा। मगर आज की सुधा कहती है कि त्याग क्यों? मैं अपनी पसंद के पीछे जाती हूं, तुम अपनी पसंद के पीछे जाओ। अपनी-अपनी पसंद के साथ भी हम मिलते रह सकते हैं।

वहीं चंदर की जिंदगी से जाने के बाद भी सुधा उसके वजूद का हिस्सा बन जाती है। चंदर सुधा के साथ लंबी दूरी वाले रिश्ते को लेकर तैयार नहीं हो रहा था। सुधा दूर चली गई, लेकिन चंदर उससे दूर नहीं हो सका। उसने खुद के अंदर एक सुधा बुन ली। अब वह प्रीति के साथ था, लेकिन प्रीति को लगता था कि जब तक सुधा का वजूद खत्म नहीं हो जाता, चंदर पूरी तरह से उसका नहीं हो सकता। सुधा के साथ चंदर को शादी और बच्चे चाहिए थे। लेकिन वह प्रीति के साथ शादी जैसे रिश्ते में बंधने से बचता रहा। यहां प्रीति एक ऐसी लड़की के रूप में दिख रही है, जो चंदर के लिए त्याग कर रही है। प्रीति के पास अब कुछ भी अपना नहीं है। वह चंदर के सपनों को आगे बढ़ाने के लिए जीती है। कहानी सुखांत में खत्म होती है, क्योंकि किरदारों ने सच स्वीकारते हुए जीवन में नया प्यार खोजा।

नन्हे राजकुमार की जीवन-यात्रा

जनसत्ता सरोकार

इस बार बात करते हैं उस किरदार की जो धरती के पार का है। एक छोटा सा ग्रह है बी-612, जहां रहता है लिटल प्रिंस। उसका संसार बहुत ही छोटा है। तीन ज्वालामुखी के बीच एक गुलाब के फूल के साथ वह अकेला रहता है। वह अपने गुलाब को लेकर बहुत संवेदनशील है। लेकिन उसे एहसास होता है कि गुलाब उसकी संवेदनाओं को समझ नहीं पाता है। गुलाब की संवेदनाओं से उलझने के बाद वह अपनी समझ की गुत्थी को सुलझाने के लिए यात्रा पर निकल पड़ता है। लिटल प्रिंस की यह यात्रा जीवन की यात्रा है।

'द लिटल प्रिंस' विश्व साहित्य के मंच का ऐसा बाल-पात्र है जिसे बच्चे एक परी-कथा की तरह पढ़ते हैं। वहीं वयस्क पाठकों को इस किताब में जीवन-दर्शन दिखता है। फ्रांसीसी लेखक अंतवान द सेंट एक्जूपेरी की यह पुस्तक 1943 में प्रकाशित हुई थी और आज 300 से अधिक भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। इसे दुनिया की सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली किताबों में से एक माना जाता है।

अमर किरदार

लिटल प्रिंस अपनी यात्राओं के जरिए इस दुनिया के विरोधाभासों को सामने लाता है। वह अलग-अलग ग्रहों के लोगों से मिलता है। उसे आभास होता है कि ज्यादातर जगहों के लोग अपने अहंकार और मूर्खताओं की सीमाओं में कैद हैं।

लिटल प्रिंस अपनी यात्राओं के जरिए इस दुनिया के विरोधाभासों को सामने लाता है। वह अलग-अलग ग्रहों के लोगों से मिलता है। इस मुलाकात के दौरान उसे आभास होता है कि ज्यादातर जगहों के लोग अपने अहंकार और मूर्खताओं की सीमाओं में कैद हैं। उसकी मुलाकात ऐसे राजा से होती है जो बिना प्रजा का राज्य चाहता है। उसकी इच्छा है कि वह बिना प्रजा के ही प्रशासन कर ले। लिटल प्रिंस को वैसे लोग मिलते हैं जो अपनी प्रशंसा के अलावा और कुछ नहीं सुनना चाहते हैं। उसकी मुलाकात ऐसे शराबी से होती है जो अपनी शर्म को भुलाने के लिए शराब पीता है। एक ऐसा व्यापारी है जो आसमान के तारों का मालिक बनना चाहता है। उसकी मुलाकात ऐसे भूगोलशास्त्री से भी होती है जो दुनिया का सारा ज्ञान लिखता है, लेकिन उसे देखने नहीं जाता है।

इन मुलाकातों में सबसे अहम है लोमड़ी से संवाद। लोमड़ी प्रतीक है जीवन-दर्शन का। लोमड़ी से लिटल प्रिंस को सीख मिलती है कि किसी को अपना बनाने में समय लगता है, और जब कोई अपना बन जाता है, तो उसकी जिम्मेदारी भी हमारी होती है। लिटल प्रिंस को अहसास होता है कि जो सबसे आवश्यक है, वह आंखों से दिखाई नहीं देता। उसे केवल हृदय से देखा जा सकता है। अब लिटल प्रिंस अपने गुलाब का महत्त्व भी समझता है। गुलाब प्रेम, जिम्मेदारी और रिश्तों का प्रतीक है। लिटल प्रिंस के लिए अपना गुलाब सबसे अनमोल हो जाता है, क्योंकि गुलाब की देखभाल उसने की है। कहानी के अंत में लिटल प्रिंस अपने ग्रह लौटने का फैसला करता है।

इस किताब को पढ़ते वक्त एक वयस्क पाठक के दिमाग में यही कौंधता है कि बड़े होते-होते उसके अंदर कितना लिटल प्रिंस बचा है? बच्चों के लिए यह जादुई यथार्थ जैसा है। एक बाल किरदार के साथ बच्चे प्रेम, जिज्ञासा और करुणा को जीवन की सच्चाई की तरह देखना सीखते हैं।

जनसत्ता सरोकार

इंडियन एक्सप्रेस समूह

विविध

चार

जनसत्ता | 2 अगस्त, 2026

संवाद का सौंदर्य

विचार बोध

रोहित कुमार

मौन, शांति, एकांत बेशक एक नए समांतर संसार की रचना करते हैं और उसमें व्यक्ति अपने स्तर पर विचार की दुनिया में विचरण करते हुए अपनी सीमा में अपने आत्म को खोजता है, उसका विस्तार करता है। मगर इसके साथ ही जुड़ा सच यह भी है कि वह मौन, शांति और एकांत वास्तव में विचार से रहित नहीं हो सकता। व्यक्ति हर पल एक विचार से गुजरता है और अपने भीतर खुद से मथता है और इसका सहारा बनते हैं मस्तिष्क में बनने वाले संवाद के सिरे। विचार भी अपनी कड़ियों में संवाद से ही अभिन्न होता है और उसी के सहारे अपने हर अगले कदम का सफर तय करता है। विचार का एक सिरा किसी बिंदु पर आगे बढ़ता है, तो वह भी संवाद के जरिए होता है और उसके साथ व्यक्ति जब अपने अंतस में खुद से जूझता है, तो वह भी संवाद की पीठ पर सवार होकर ही। यानी कहा जा सकता है कि वह प्रत्यक्ष हो या परोक्ष, जिस तरह विचार अपने क्रम में एक पल भी शून्य नहीं हो सकता, उसी तरह संवाद भी ठहर नहीं सकता।

जीवन-तत्त्व

किसी भी स्थिति में रहते हुए व्यक्ति या तो अपने सामने खड़े किसी व्यक्ति से संवाद करता है, या फिर वह किसी के न होने पर अपने भीतर उभरे किसी विचार-बिंदु पर खुद से ही बहस या विचार करना शुरू कर देता है। कभी ऐसा भी होता है, जब कोई नहीं होता, तब व्यक्ति अपने आप से बात करना शुरू कर देता है। एक सवाल उठता है, दूसरों के भीतर या फिर अपने मन में। उसके जवाब तक पहुंचने या फिर जवाब तैयार होने तक संवाद के कई सिरे खुल चुके होते हैं। यानी हर स्थिति में संवाद सबके लिए सहारा बन जाता है।

वह संवाद ही होता है, जो विचार के रूप में उभरता है और किसी अन्य को संप्रेषित किया जाता है। यही संप्रेषण संवाद है, जो व्यक्ति और मनुष्य समाज के लिए जीवन-तत्त्व है। यह न केवल व्यक्ति और व्यक्ति के बीच कड़ियों को जोड़ता है, बल्कि एक ऐसा संसार रचता है, जिसमें लोगों की एक दुनिया बन जाती है। चुप रहने या फिर एकांत में रहने के बावजूद व्यक्ति संवाद की अपनी दुनिया में विचरण करता रहता है और उसके बाद निष्कर्ष में जो बातें सामने आती हैं, वह आगे बढ़ने का एक रास्ता साबित हो सकता है। यानी कहने का आशय यह है कि अपने आप से संवाद करना और उस संवाद से एक दुनिया बनना दरअसल प्राकृतिक है, स्वाभाविक है।

समाधान की कड़ियां

यह एक जगजाहिर सत्य है कि जहां भी दो पक्षों के बीच संवाद का अभाव हुआ है, वहां बहुस्तरीय समस्याएं खड़ी होनी शुरू हो गईं। जबकि यह संभव है कि दोनों पक्षों के बीच किसी के प्रति ऐसा आग्रह नहीं हो, जो एक नकारात्मकता पर आधारित परिस्थिति का निर्माण करते हों और दोनों के बीच दूरी पैदा करते हों। इसके उलट यह भी होता है कि शांति या मौन प्रत्यक्ष रूप से तो संवाद नहीं पैदा करते, लेकिन उसके भीतर जो संवाद होता है, वह बिना किसी प्रयास के भी अपना काम कर रहा होता है। मगर प्रत्यक्ष संवाद की अपनी अहमियत होती है, जो बड़ी-बड़ी समस्याओं का समाधान चुटकी में निकाल देता है।

सिर्फ बातचीत ही करने की तो जरूरत होती है और किसी बड़े मसले का भी हल वही पल निकाल देते हैं, जिसके लिए कोई व्यक्ति कई बार विचार की गहराई में उतरता है, लेकिन अपने आप से संवाद के सहारे। जबकि

> **कभी** नकारात्मकता उलट कर सकारात्मक परिस्थितियों में तब्दील हो जाती है, तो कई बार सकारात्मक दिशा भी नकारात्मकता का सिरा थाम लेती है। ऐसे में हल क्या हो? जाहिर है, जिन परिस्थितियों की रचना व्यक्ति करता है, उसके खमियाजे झेलने होते हैं और उसके नफा-नुकसान का बोझ भी उठाना पड़ता है।

समस्या अगर द्विपक्षीय है, तो संवाद भी दोनों पक्षों के बीच होगा। एक बार संवाद शुरू होने के बाद एक-दूसरे के बारे में बनी धारणाएं, पूर्वाग्रह या दुराग्रह का ढांचा टूटता है। कभी नकारात्मकता उलट कर सकारात्मक परिस्थितियों में तब्दील हो जाती है, तो कई बार सकारात्मक दिशा भी नकारात्मकता का सिरा थाम लेती है। ऐसे में हल क्या हो? जाहिर है, जिन परिस्थितियों की रचना व्यक्ति करता है, उसके खमियाजे झेलने होते हैं और उसके नफा-नुकसान का बोझ भी उठाना पड़ता है।

अहं की राह

सवाल है कि संवाद की बहुस्तरीय अहमियत को जानने-समझने के बाद भी कुछ लोग इसे हाशिये पर क्यों और कैसे धकेल देते हैं। इसकी जड़ में अहं के सिवा और क्या हो सकता है कि जिन मसलों के समाधान का स्रोत ही संवाद होता है, उसे खारिज कर-के एक व्यक्ति सोचता है कि उसने संसार की कई तहों की गिरहें अपने प्रयासों से खोल दी। जबकि सच यह है कि संसार की गिरहों को खोलने के मामले में अगर सचमुच कुछ नया हासिल किया गया है, तो उसके पीछे किसी न किसी रूप में संवाद की भूमिका है। जहां संवाद नहीं है, वहां समस्या की शुरुआत होती है।

इसके बावजूद हमारा समाज किस रूप में विकसित हुआ है, पला-बढ़ा है कि जरूरत होने पर भी संवाद को ताक पर रख कर सीधे प्रत्यक्ष भिड़ंत को प्राथमिकता देने लगता है। अगर कोई व्यक्ति इस ढांचे में जीता है, तो निश्चित तौर पर संवाद के सौंदर्य और उसकी अहमियत को समझने से वंचित रह जाता है।

बारिश में बीमारियां सतर्कता जरूरी

गर्मी और बारिश के दिनों में तापमान में उतार-चढ़ाव से पाचन तंत्र पर असर पड़ता है। वहीं स्वास्थ्य संबंधी कई समस्याएं पैदा होती हैं। खासकर संक्रमण की समस्या। यही वह समय होता है, जब लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता धीमी पड़ने लगती है। कई लोग सर्दी और जुकाम से भी पीड़ित होते हैं। बारिश में जुकाम हो जाए, तो यह और भी परेशान करता है। इन दिनों किसी रोग का जोखिम न हो, इसके लिए सजग रहना चाहिए।

असंतुलन के नतीजे

यह ऐसा मौसम है जब एक तरफ उमस की वजह से बेचैनी महसूस होती है, तो दूसरी तरफ अधिक बारिश होने से ठंडक महसूस होती है। तापमान में एक प्रकार से असंतुलन बना रहता है। इन दिनों भीग जाने और देर तक कपड़े न बदलने से शरीर का तापमान बदल जाता है। इससे बुखार होने के साथ सर्दी-जुकाम का अंदेशा रहता है। शरीर के तापमान में असंतुलन की स्थिति बीमारियों के जोखिम को बढ़ा देती है। तापमान बदलने से प्रतिरक्षा तंत्र पर असर पड़ता है। ऐसे में बारिश के दौरान जितना संभव हो भीगने से बचें।

साफ-सफाई के बीच

बारिश के मौसम में साफ-सफाई बेहद जरूरी है। इस दौरान घर से जब न निकलना हो, तो बाकी काम निपटाते हुए खुद को सक्रिय रखें। अगर बाहर भीग गए हैं, तो घर लौटने पर गुनगुने पानी से शरीर कों पोंछ लें। इससे त्वचा साफ हो जाती है। इन दिनों सर्दी-जुकाम होने पर घरेलू नुस्खे बहुत काम आते हैं। इन्हें आजमाया जा सकता है। अगर आप हर्बल चाय बना कर लें, तो इससे प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है। इस चाय से गले को भी राहत मिलती है। अदरक-पुदीने और काली मिर्च से बनी चाय भी खूब फायदा करती है। तुलसी के पत्ते का इन दिनों इस्तेमाल करना चाहिए। नींबू की चाय बनाते समय इसमें तुलसी के दो-तीन पत्ते मिला दें, तो सर्दी-जुकाम में आराम मिलता है। बारिश के दिनों में गुनगुने पानी में शहद और नींबू मिला कर लें। इससे ऊर्जा तो मिलती ही है, गले को भी आराम मिलता है। हाजमा दुरुस्त रहता है।

सोंठ का सहारा

इन दिनों में प्रायः नमी बढ़ जाती है जिससे स्वास्थ्य संबंधी कई समस्याएं पैदा होने लगती हैं। इन्हीं दिनों सांस और त्वचा तथा पेट संबंधी बीमारियां होती हैं। घमौरियां होने के साथ चकत्ते भी निकल आते हैं। अगर सोंठ का इस्तेमाल नुस्खे के रूप में किया जाए, तो इससे कई समस्याओं से छुटकारा मिलता है। अगर बुखार हो जाए, तो इसका एक सरल नुस्खा है। चाय बनाते समय अगर तुलसी के दो पत्ते और थोड़ी-सी सोंठ मिला दें, तो यह शरीर को गर्माहट देती है। बुखार भी इससे उतरने लगता है। गर्म दूध में सोंठ मिला कर भी लिया जा सकता है।

नुस्खे

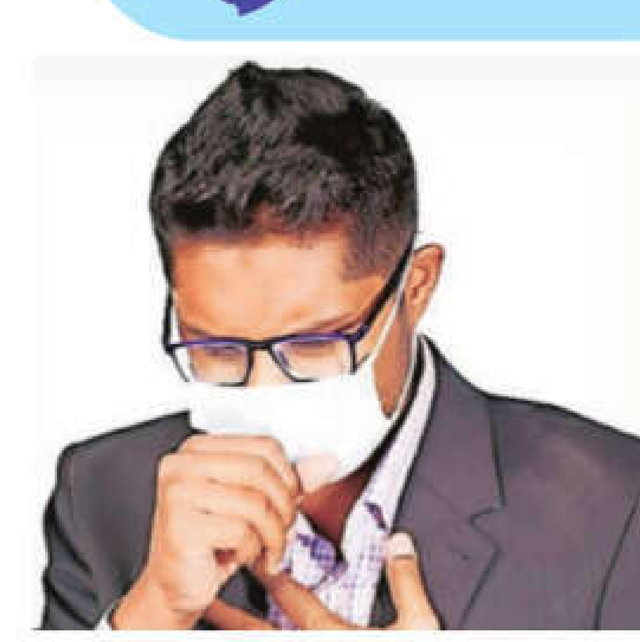

बढ़ाएं प्रतिरोधक क्षमता

बारिश के दिनों में जुकाम की वजह से बार-बार नाक बंद हो रही हो, तो इसका आसान-सा नुस्खा है। गर्म पानी में यूकेलिप्टस का तेल मिला दें। फिर इसकी भाप लें। इससे सिरदर्द हल्का हो जाता है, बंद नाक खुल जाती है। रात को सोने से पहले भांप लेने से काफी आराम मिलता है। मानसून के दौरान रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए भोजन बनाते समय लहसुन की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए। सब्जियों में अदरक और गरम मसाले का इस्तेमाल भी फायदेमंद है।

मुश्किल में हो दिल तो देता है संकेत

सेहत

दिल का दौरा पड़ना आजकल सामान्य बात है। चिंता की बात यह है कि अब बड़ी संख्या में लोग हृदय रोग का शिकार होने लगे हैं। युवाओं में जिस तरह दिल के दौरे बढ़े हैं, उससे समस्या गंभीर हो गई है। जबकि पहले आम तौर पर हृदयरोग के मामले बड़ी उम्र के लोगों में देखे जाते थे। इसलिए सीने में बार-बार दर्द होने पर इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। हमें यह भी जानना चाहिए कि हृदय रोग से किस तरह हम सुरक्षित रहें। चिकित्सकों का मानना है कि अस्वस्थ आहार और बदलती जीवनशैली इस समस्या की वजह है।

दिल पर बढ़ता बोझ

मनुष्य के शरीर में दिल एक अहम हिस्सा है। यह बिना एक पल गंवाए पूरे शरीर को लगातार आक्सीजन पहुंचाता रहता है। वहीं अशुद्ध रक्त जमा होने पर उसे फेफड़े में शुद्ध करने के लिए भेजता है। यानी दिल काम करना बंद कर दे, तो व्यक्ति एक पल भी जीवित नहीं रह सकता। वहीं यह नियमित रूप से काम न करे, तो धमनियों में रक्त संचार प्रभावित होने लगेगा। हृदय से जुड़ी धमनियां एवं शिराएं जीवन भर बिना थके काम करती हैं। इस तरह दिल पर पहले ही बहुत दबाव है। ध्यान रखें कि जो लोग मोटापे से शिकार हैं, उनका दिल जोखिम में है।

लापरवाही की मुश्किल

सभी जानते हैं कि यह रोग किसी की भी अचानक जान ले लेता है। ऐसे में हमें उन लापरवाहियों पर ध्यान देने की जरूरत है जिससे यह समस्या पैदा होती है। दिल कोई एक दिन में कमजोर नहीं होता। हृदय रोग से बचने के लिए रक्त शर्करा के स्तर की जांच कराते रहना चाहिए। इसी तरह अपने मोटापे और रक्तचाप पर ध्यान रखना चाहिए। अगर कुछ नियमित जांच होती रहे, तो समय रहते हृदय रोग का पता चल जाता है। हृदय में कोई समस्या पैदा होती है, तो वह हमें सचेत करता है। मगर ज्यादातर लोग दिल के संकेत को नजरअंदाज कर देते हैं। पीठ, हाथ जबड़े या कंधे में दर्द हो, तो समझिए कि ये संकेत हैं। सीने में भारीपन के साथ दर्द हो और सांस लेने में परेशानी हो रही हो, तो यह बड़ा संकेत है। कमजोरी महसूस होना और चक्कर आना गंभीर लक्षण है। अगर किसी की मदद के बिना आप खड़े हो जाते हैं और चलने पर सांस नहीं फूलती, तो इसका मतलब है कि दिल ठीक से काम कर रहा है।

दुष्प्रभाव की वजहें

आजकल ऐसे लोग भी हृदय रोग का शिकार हो रहे हैं जो स्वस्थ रहने के लिए जिम जाते हैं। आखिर इसकी क्या वजह है। दरअसल, जिम जाने वाले अधिकतर लोग प्रोटीन के अलावा कई पूरक आहार लेते हैं जिसकी जरूरत नहीं होती। वहीं शारीरिक सौष्ठव के लिए कई लोग अनावश्यक इंजेक्शन भी ले रहे हैं जिसका पूरे शरीर पर गंभीर दुष्प्रभाव पड़ता है। हृदय पर भी स्वाभाविक रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। समस्या यह है कि इन दिनों जिम जा रहे लोग यह नहीं देखते कि उनका शरीर कितना दबाव सह सकता है। अपनी उम्र और वजन को ध्यान में रखते हुए चिकित्सक से अवश्य परामर्श करना चाहिए कि इससे उनके दिल पर प्रभाव तो नहीं पड़ेगा।

बचाव के रास्ते

दिल को स्वस्थ रखना कोई मुश्किल नहीं है। स्वस्थ जीवन शैली अपना कर हृदय को स्वस्थ रखा जा सकता है। यथासंभव तनाव से दूर रहें। शराब और सिगरेट पीने से बचें। रक्त शर्करा और रक्तचाप को नियंत्रण में रखें। अपने आहार में जितना संभव हो हरी सब्जियां और ताजे फल शामिल करें। भोजन में नमक की मात्रा को कम कर देना चाहिए। साबुत अनाज को पका कर दिल के मरीज को दिया जा सकता है। हेल्दी फैट के लिए मछली और बादाम ले सकते हैं। योगाभ्यास करने से भी हृदय स्वस्थ रहता है।

(यह लेख सिर्फ सामान्य जानकारी और जागरूकता के लिए है। उपचार या स्वास्थ्य संबंधी सलाह के लिए विशेषज्ञ की मदद लें।)

शिष्टाचार का सिकुड़ता दायरा

जीवन शैली

अनुशासन और शिष्टाचार एक अच्छे तथा सुखी जीवन का आधार हैं। जीवन में सफलता, शांति और समृद्धि हासिल करने में इन दोनों का अहम योगदान होता है। अनुशासन हमें नियम, सिद्धांतों और समय का पाबंद होना सिखाता है, जबकि शिष्टाचार हमारी बोलचाल और अच्छे व्यवहार से सबका आदर-सम्मान करने की सीख देता है। मगर, आज की भागदौड़ भरी जिंदगी और डिजिटल तकनीक के दौर में परिवार के स्तर पर अच्छे आचरण तथा सही मार्गदर्शन का अभाव साफ देखा जा रहा है। घर और विद्यालय में शिष्टाचार सिखाने की अक्सर अनदेखी की जाती है, जिसके परिणामस्वरूप बच्चे जीवन के इन बुनियादी सिद्धांतों को जानने-समझने और उन्हें आत्मसात करने से वंचित रह जाते हैं।

सम्मान की कुंजी

अनुशासन एवं शिष्टाचार अच्छी शिक्षा का प्रतिबिंब होते हैं और ये दूसरों पर व्यक्तित्व का अच्छा प्रभाव डालने में सहायक होते हैं। हमारे पारंपरिक समाज में बचपन से ही परिवार और विद्यालयों के स्तर पर शिष्टाचार सिखाया जाता रहा है। सभ्य समाज में सभी को एक बात में निपुण होना चाहिए और वह है एक अच्छा इंसान बनना, जो तभी संभव है जब हम जीवन में अनुशासन और शिष्टाचार के महत्त्व को समझें। किसी व्यक्ति को सम्मान उसकी दौलत से नहीं, बल्कि अनुशासन और शिष्टाचार से मिलता है। एक आकर्षक व्यक्तित्व के निर्माण के लिए ये दोनों गुण अत्यंत आवश्यक हैं। अच्छे गुणों से युक्त व्यक्ति अपने अंदाज से हर किसी का दिल जीत सकता है। शिष्टाचार और उचित व्यवहार हमारे समाज में पहले से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं, चाहे वह विद्यालयों में हो, सामाजिक परिवेश में हो, घर पर या सार्वजनिक स्थानों पर हो।

सुसंस्कृत और सभ्य

शालीनता, शिष्टता, कृतज्ञता, विनम्रता और दयालुता शिष्टाचार के तत्त्व हैं। इन गुणों से संपन्न व्यक्ति को सुसंस्कृत और सभ्य माना जाता है। शिष्टाचार हमारे दैनिक जीवन में दूसरों के साथ बातचीत में झलकता है, जैसे कि जब हम अपने दोस्तों या रिश्तेदारों से मिलते हैं, फोन पर बात करते हैं और जिस तरह से हम एक-दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं। विनम्रतापूर्वक धन्यवाद कहना, गलती करने या अनजाने में किसी को ठेस पहुंचाने पर क्षमा मांगना, हर काम को सही समय पर करना और बुरी आदतों से दूरी, ये सब अनुशासन और शिष्टाचार के तत्त्व हैं। यही नहीं, अपने आस-पास और वातावरण को साफ रखना भी अच्छे शिष्टाचार का प्रतीक है।

> **सभ्य** समाज में सभी को एक बात में निपुण होना चाहिए और वह है एक अच्छा इंसान बनना, जो तभी संभव है जब हम जीवन में अनुशासन और शिष्टाचार के महत्त्व को समझें।

चरित्र का विकास

याद रखना चाहिए कि विद्यालय हो, दफ्तर या खेल का मैदान हो, हर जगह अनुशासित व्यक्ति को ही सबसे ज्यादा सम्मान मिलता है। मगर, वक्त के साथ अनुशासन और शिष्टाचार का दायरा लगातार सिकुड़ता जा रहा है। कुछ लोग इसके लिए पारिवारिक संबंधों में आए बदलावों को दोषी ठहराते हैं, तो कुछ इसे डिजिटल तकनीक के अत्यधिक उपयोग के दुष्प्रभाव के रूप में देखते हैं। परिवार के बड़े लोगों के पास अब बच्चों के लिए समय का अभाव है। बच्चों को जो चीजें मूल रूप में अपने माता-पिता या परिवार के अन्य सदस्यों से सीखनी होती थी, वे अब उन्हें मोबाइल फोन या लैपटाप की स्क्रीन पर विरूपित रूप में मिलती है। इसलिए जरूरी है कि विद्यालयों और पारिवारिक परिवेश में शिक्षा के साथ-साथ मानवीय मूल्यों, सद्गुणों और चरित्र विकास पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

चटपटा और खुशबूदार जायका

रसोई

ब्रेड पोहा

नाश्ते में कुछ चटपटा खाने का मन हो, तो ब्रेड पोहा एक बेहतर विकल्प है। यह झटपट तैयार हो जाता है और इसका स्वाद भी मजेदार होता है। इसमें हरी सब्जी का इस्तेमाल होता है, इसलिए यह स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है।

सामग्री

सफेद ब्रेडः पांच-छह, शिमला मिर्चः एक, राईः आधा चम्मच, कढ़ी पत्ताः दो-तीन चम्मच, प्याजः एक, हरी मिर्चः दो-तीन, टमाटरः दो, जीराः एक चम्मच, अदरकः एक इंच, गरम मसाला पाडरः आधा चम्मच, नमकः स्वादानुसार।

विधि

शिमला मिर्च को धोकर बारीक काट लें। फिर प्याज और अदरक को काटकर उसका पेस्ट तैयार कर लें। इसके बाद तवे पर देसी घी डालें और ब्रेड को दोनों तरफ से सेंकें। फिर ब्रेड को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर एक तरफ रख दें। अब एक कड़ाही में तेल गरम करें। उसमें राई और कढ़ी पत्ता डालकर हल्का सा भूनें। इसमें प्याज-अदरक का पेस्ट और बारीक कटी हुई हरी मिर्च डालें। इन सभी को लाल सुनहरा रंग आने तक भूनें। इसमें बारीक कटे हुए टमाटर डालें और धीमी आंच पर ढक्कन लगाकर नरम होने तक पकाएं। इसके बाद हल्दी, मिर्च पाउडर और नमक डालें। अब इसमें शिमला मिर्च मिलाएं और धीमी आंच पर पकाएं। ध्यान रहे कि इसे ज्यादा न पकाएं, ताकि इसमें थोड़ा कच्चापन रह जाए। इसके बाद तवे पर सेंके गए ब्रेड के टुकड़े इसमें डाल दें। इन्हें चम्मच की मदद से धीरे-धीरे मिलाएं, ताकि ब्रेड के टुकड़े टूटे नहीं। अब कड़ाही पर ढक्कन रखकर आंच धीमी कर दें और एक-दो मिनट तक पकाएं, ताकि ब्रेड के टुकड़े मसालों को अवशोषित कर लें। अब ब्रेड पोहा बनकर तैयार है। इसमें हरा धनिया और नींबू का रस मिलाकर परोसें।

अरबी की कढ़ी

अरबी की सब्जी बनाने के कई तरीके हैं, लेकिन इसकी कढ़ी का अपना ही स्वाद होता है। यह तरीदार होती है और हाजमे को दुरुस्त रखती है। इसे बनाना भी आसान है। ग्रामीण इलाकों में इसे खूब पसंद किया जाता है।

सामग्री

अरबीः 300-400 ग्राम, दहीः दो कप, प्याजः एक, लहसुनः तीन-चार कलियां, हरी मिर्चः दो-तीन, अजवाइनः आधा चम्मच, हींगः एक चुटकी, जीराः एक चम्मच, अदरकः एक इंच, गरम मसाला पाडरः एक चम्मच, नमकः स्वादानुसार।

विधि

सबसे पहले अरबी को अच्छी तरह धो लें और फिर इसे कुकर में उबालें। ठंडा होने पर इसके छिलके निकालकर छोटे-छोटे टुकड़ों में काटें। अब प्याज, लहसुन, अदरक और हरी मिर्च को बारीक काटकर एक थाली में रख लें। इसके बाद कड़ाही में तेल गरम कर उसमें जीरा, तेज पत्ता, लौंग और अजवाइन हल्का सा भूनें। फिर कटा हुआ प्याज तथा लहसुन उसमें डाल दें और हल्का सुनहरा रंग आने तक भूनें। इसके बाद इसमें हींग, हल्दी और धनिया पाउडर डालें। इन्हें चम्मच की मदद से अच्छी तरह मिला लें और कटी हुई हरी मिर्च तथा अदरक भी डाल दें।

इसे धीमी आंच पर भूनें और फिर इसमें अरबी डाल दें। साथ ही नमक, लाल मिर्च पाउडर और गरम मसाला डालकर इसे करछी से पलटते हुए मिला लें। इसे मध्यम आंच पर तब तक पकाएं, जब तक कि अरबी तले में चिपकने न लगे। अब इसमें दही तथा कसूरी मेथी डालें और धीमी आंच पर ढक्कन रखकर दो से तीन मिनट तक पकाएं। अंत में इसमें बारीक कटा हुआ हरा धनिया डालकर आंच बंद कर दें। अब अरबी की कढ़ी बनकर तैयार है। इसे चपाती, नान या चावल के साथ परोसा जा सकता है।

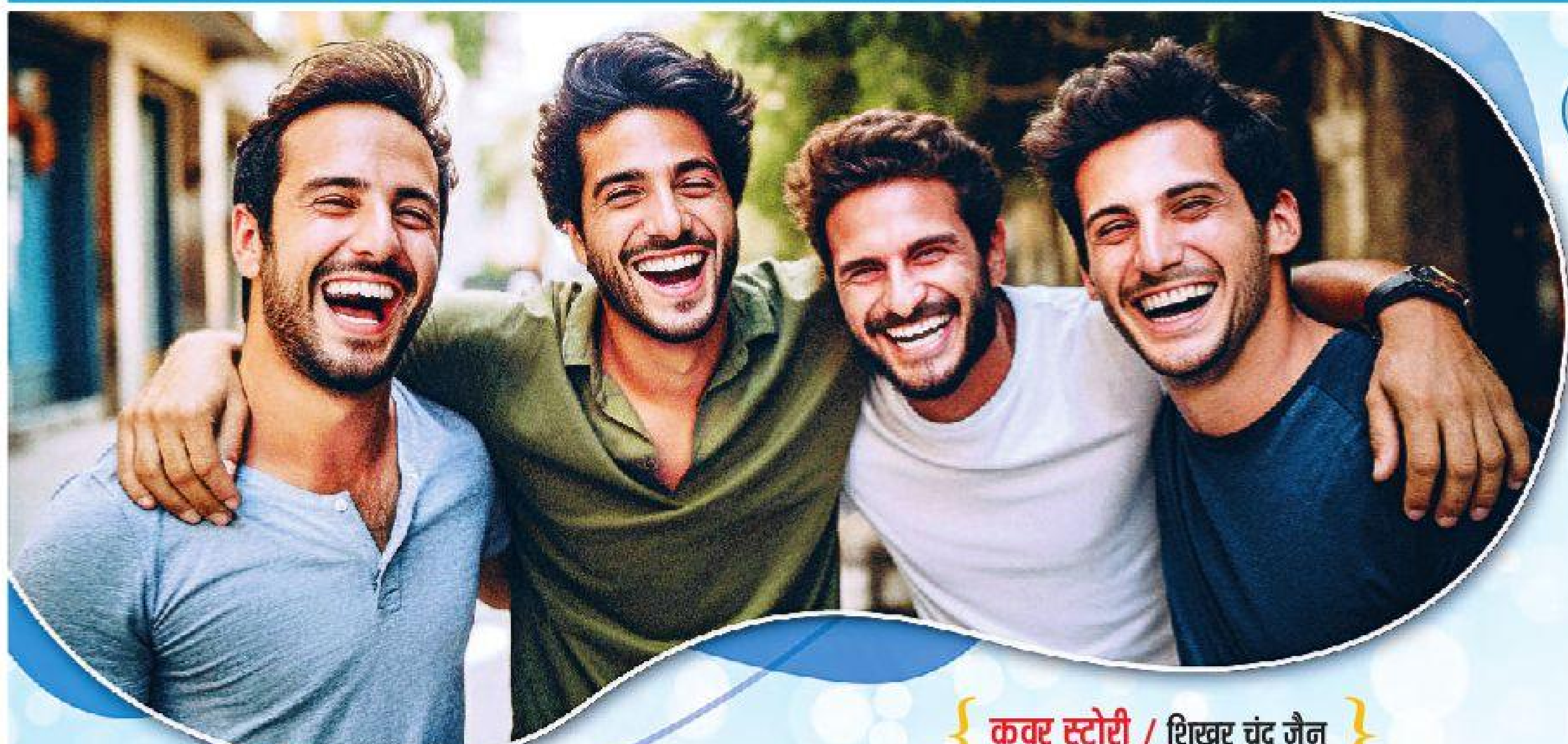

मित्रता दिवस विशेष

दुनिया भर के वैज्ञानिक शोधों और व्यावहारिक अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि दोस्ती केवल मौज-मस्ती करने के लिए नहीं या केवल समय बिताने का माध्यम नहीं है। यह इंसानी जीवन की एक बुनियादी जैविक के साथ ही मनोवैज्ञानिक आवश्यकता भी है। यह हमें सफलता के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है, मानसिक सुकून प्रदान करती है। यही नहीं खुशहाल जीवन का आधार भी होती है दोस्ती। तो आइए, आज मित्रता दिवस पर हम खुद से वादा करें कि अपने दोस्तों का साथ कभी नहीं छोड़ेंगे।

कवर स्टोरी / शिखर चंद जैन

सफलता-सुकून-समृद्धि खुशहाल जीवन का आधार दोस्ती

इस दुनिया में हमारी पहचान विभिन्न प्रकार के आपसी संबंधों के ताने-बाने से बुनी होती है। इन संबंधों में दोस्ती यानी मित्रता को सबसे पवित्र, निःस्वार्थ और सहज माना जाता है। आधुनिक भाग-दौड़ भरी जिंदगी, व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा और मानसिक तनाव के इस दौर में दोस्ती केवल एक सामाजिक रिश्ता भर नहीं है, बल्कि हमारे ओवरऑल डेवलपमेंट और वेलबीइंग का एक जरिया भी है। अतीत गवाह है कि श्रीकृष्ण-सुदामा की सहज मित्रता से लेकर आधुनिक कॉर्पोरेट जगत के सह-संस्थापकों की पार्टनरशिप तक, दोस्ती ने हर युग में जीवन को एक नई दिशा दी है। वैश्विक स्तर पर हुए विभिन्न शोधों, मनोवैज्ञानिक अध्ययनों और न्यूरोसाइंस के निष्कर्षों से भी यह सिद्ध हुआ है कि एक सच्चा दोस्त हमारे जीवन में सफलता का वाहक, मानसिक सुकून का ढाल, समृद्धि का मार्गदर्शक और जीवन को सरल बनाने वाला सबसे बड़ा कारक होता है।

तनाव में होती है कमी: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के एक दीर्घकालिक अध्ययन के अनुसार, जो व्यक्ति अच्छे सामाजिक संबंधों और गहरे दोस्तों के बीच रहते हैं, वे अधिक खुश और तनावमुक्त रहते हैं। जब हम किसी विश्वसनीय मित्र से अपनी बातें साझा करते हैं, तो हमारे मस्तिष्क में 'ऑक्सीटोसिन' और 'डोपामाइन' जैसे हैप्पी हार्मोन का स्राव होता है। यह प्रक्रिया कोर्टिसोल नामक तनाव उत्पन्न करने वाले हार्मोन के स्तर को तेजी से कम करती है, जिससे मानसिक सुकून मिलता है।

करियर सक्सेस में सहायक: अमेरिकी समाजशास्त्री मार्क ग्रेनोवेटर के 'द स्ट्रेंथ ऑफ वीक टाइज' सिद्धांत और स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में हुए शोध बताते हैं कि प्रोफेशनल लाइफ में सफलता का सीधा संबंध आपके मित्रों के दायरे और नेटवर्किंग से है। दोस्त न केवल आपको

नए अवसरों की जानकारी देते हैं, बल्कि आपके कौशल को निखारने में रचनात्मक आलोचना भी करते हैं। कार्यस्थल पर एक अच्छा मित्र होने से कर्मचारी की उत्पादकता में 50 प्रतिशत तक की वृद्धि देखी गई है।

शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार: 'प्लॉस मेडिसिन' पत्रिका में प्रकाशित 148 अध्ययनों के एक मेटा एनालाइसिस के अनुसार, जिन लोगों का सामाजिक जीवन और मित्रों का दायरा मजबूत होता है, उनके समय से पूर्व डेथ की आशंका 50 प्रतिशत तक कम हो जाती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि अकेलेपन का स्वास्थ्य पर डेली 15 सिगरेट पीने जैसा असर होता है। दोस्त हमें स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और बीमारियों से लड़ने की इच्छाशक्ति देते हैं।

खुले आर्थिक समृद्धि का मार्ग: दुनिया के कई बड़े व्यापारिक साम्राज्य जैसे गूगल (लैरी पेज और सर्गेई ब्रिन) या एप्पल (स्टीव जॉब्स और स्टीव वोज्नियाक) गहरी दोस्ती की नींव पर बने हैं। बर्कले यूनिवर्सिटी के एक आर्थिक अध्ययन के अनुसार, मित्रों के बीच आपसी विश्वास के कारण जोखिम लेने की क्षमता बढ़ती है। जब मित्र मिलकर किसी विचार पर काम करते हैं, तो वित्तीय समृद्धि के रास्ते अधिक सुगम और सुरक्षित हो जाते हैं।

संघर्ष करने की क्षमता में इजाफा: मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से पता चलता है कि जब व्यक्ति किसी कठिन समस्या का सामना अकेले करता है, तो उसे वह समस्या बहुत बड़ी लगती है। वर्जीनिया यूनिवर्सिटी के एक प्रसिद्ध प्रयोग (हिल विजुअलाइजेशन स्टडी) में पाया गया कि दोस्तों की उपस्थिति जीवन की मुश्किलों को सरल बना देती है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास: कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं के अनुसार, बचपन और किशोरावस्था में बने गहरे दोस्त व्यक्ति की भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ाते हैं। दोस्तों के साथ रहकर हम सहानुभूति, साझा करना और दूसरों के दृष्टिकोण को समझना सीखते हैं।

अवसाद-अकेलेपन से सुरक्षा: शिकागो विश्वविद्यालय के कॉग्निटिव एंड सोशल न्यूरोसाइंस केंद्र के अध्ययनों के अनुसार, अकेलापन मस्तिष्क के उन हिस्सों को सक्रिय करता है, जो शारीरिक दर्द के लिए जिम्मेदार होते हैं। इसके विपरीत, मजबूत दोस्ती एक सुरक्षा कवच की तरह काम करती है। अवसाद या किसी बड़े व्यक्तिगत नुकसान (जैसे नौकरी जाना या प्रियजन की मृत्यु) के समय दोस्तों का भावनात्मक समर्थन मानसिक संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।

बढ़े निर्णय लेने की क्षमता: येल यूनिवर्सिटी के एक न्यूरोइकोनॉमिक्स अध्ययन के अनुसार, संकट के समय मित्र हमारे लिए एक 'बाहरी पर्यवेक्षक' की भूमिका निभाते हैं। जब हमारा मस्तिष्क तनाव के कारण सही निर्णय नहीं ले पाता, तब सच्चे दोस्त हमें पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर सोचने में मदद करते हैं। उनकी सलाह से हमारी निर्णय प्रक्रिया सरल और सटीक हो जाती है, जो अंततः हमारी समृद्धि का प्रमुख कारण बनती है।

रचनात्मकता-नवाचार को बढ़ावा: मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी के एक शोध के अनुसार, मित्रों के समूह में होने वाली ब्रेन स्टॉर्मिंग से मस्तिष्क में नए न्यूरल पाथवे बनते हैं। दोस्तों के साथ बिना किसी डर या झिझक के विचारों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता होती है। यही स्वतंत्रता रचनात्मकता और नए आविष्कारों को जन्म देती है, जो आधुनिक संदर्भों में अर्थव्यवस्था में सफलता का मुख्य आधार हैं। *

वृद्धावस्था में संज्ञानात्मक स्वास्थ्य की रक्षा

ओल्ड एज में होने वाली डिमेंशिया की समस्या पर द लैंसेट में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, बढ़ती उम्र में मानसिक सक्रियता और याददाश्त बनाए रखने के लिए दोस्तों के साथ सामाजिक रूप से जुड़े रहना बेहद जरूरी है। जो बुजुर्ग नियमित रूप से अपने दोस्तों से मिलते हैं और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेते हैं, उनमें अल्जाइमर जैसी बीमारियों का खतरा भी 60 प्रतिशत तक कम पाया गया है।

तकनीक ने हमारी जीवनशैली को ही नहीं, दोस्त बनाने के तरीके को भी बदल दिया है। आज सोशल मीडिया के जरिए हम एक क्लिक पर दुनिया में किसी से भी दोस्ती कर सकते हैं। सबसे खूबसूरत इंसानी रिश्तों में से एक दोस्ती को तकनीक कैसे नए ढंग से परिभाषित कर रही है, इस बारे में आप भी जानिए।

फ्रेंड रिक्वेस्ट ने बदल दी दोस्त बनाने की परिभाषा

न्यू ट्रेंड
शैलेंद्र सिंह

इस बात में संदेह नहीं कि सोशल मीडिया के अस्तित्व में आने के बाद दोस्ती करना आसान हो गया है। इसके पहले दुनिया में कहीं भी किसी से दोस्ती करना इतना आसान न था कि किसी को दो लाइन की एक लिखित रिक्वेस्ट भेजो और अमूमन 90 फीसदी से ज्यादा मौकों पर दोस्ती हो जाती है। ये है दोस्ती का नया तरीका यानी फ्रेंड रिक्वेस्ट। यह तरीका सोशल मीडिया के पहले दुनिया के पास नहीं था।

बन सकते हैं हजारों दोस्त: आज अपने देश में कम से कम 60 फीसदी ऐसे वयस्क हैं, जिनके सोशल मीडिया पर एक हजार या इससे ज्यादा दोस्त हैं। 10 फीसदी तो ऐसे लोग हैं, जिनके दोस्तों की इस अभासी दुनिया में संख्या पांच हजार के आस-पास है और एक से डेढ़ फीसदी ऐसे लोग भी हैं, जिनके दोस्तों की संख्या हजारों नहीं दसियों हजार से ऊपर है। दरअसल, ये दोस्त नहीं फॉलोवर्स कहलाते हैं।

दुनिया भर में कर सकते हैं दोस्ती: दुनिया में एक और बड़ा धमाका सोशल मीडिया के अस्तित्व में आने के बाद हुआ। चाहे आप देश या दुनिया के कितने ही पिछड़े इलाके में रह रहे हों, लेकिन सोशल मीडिया के चलते आप देश-विदेश कहीं भी दोस्ती कर सकते हैं। ऐसे लोगों के साथ जिन्हें न कभी देखा हो, न कभी उनसे मुलाकात हुई हो, न उनके बारे में कुछ ज्यादा जानते हों और न ही उनके आपके विचार, रुचियां और सपने एक जैसे हों। इसके बाद भी चाहें तो आप सोशल मीडिया के जरिए ऐसे विपरीत रुचियों के लोगों के साथ भी सहजता से देश-विदेश में दोस्ती कर सकते हैं। अब दोस्ती के लिए न बहुत हैसियत की जरूरत है, न बहुत पैसे की, न सामाजिक प्रभुत्व या न ही किसी क्षेत्र विशेष में उल्लेखनीय होने की जरूरत है। दोस्ती के लिए अब सिर्फ एक ही चीज की जरूरत है- आपके पास मोबाइल या कंप्यूटर हो, उसमें इंटरनेट का कनेक्शन हो। बस इतने भर से आप देश-विदेश में कहीं भी दोस्ती कर सकते हैं। दोस्ती की दुनिया में ये असाधारण परिवर्तन है, जो इंटरनेट और सोशल मीडिया के आने के पहले कभी नहीं हुआ था।

हर सीमा, सरहद से परे: दोस्ती हमेशा से इंसानी रिश्तों की सबसे खूबसूरत कड़ी रही है। कभी ये स्कूल, कॉलेज, पड़ोस या कार्यस्थल तक सीमित रहती थी, लेकिन जब से संपर्क करने का सबसे तीव्र माध्यम इंटरनेट अस्तित्व में आया और फिर सोशल मीडिया जैसे आभासी प्लेटफॉर्म बने। उसके बाद से दोस्ती की परिभाषा, उसकी अवधारणा हमेशा-हमेशा के लिए बदल गई। अब दोस्ती का दायरा स्थानीय नहीं है बल्कि वैश्विक हो चुका है। इंस्टाग्राम, फेसबुक, लिंक्डइन, एक्स, डिस्कॉर्ड, रेडिट और अन्य सोशल मीडिया मंचों ने दुनिया भर के करोड़ों लोगों को दोस्ती के एक ऐसे साझा मंच से जोड़ा है, जिसकी पहले कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

अपनी रुचि के लोगों से दोस्ती: सोशल मीडिया की सुविधा ने तरह-तरह के समूहों को जन्म दिया है। मान लीजिए, आप लेखक हैं और आपको दूसरे लेखकों के साथ बातचीत करना, उठना-बैठना अच्छा लगता है, तो चाहें तो आप देश-विदेश के हजारों लेखकों से ही अपनी दोस्ती बना लें और दिन-रात उनके साथ ही मस्त रहें। मतलब यह कि सोशल मीडिया ने दोस्ती को एक ऐसा उपभोक्ता उत्पाद बना दिया है, जिसे आप अपनी चाहत और सुविधा के हिसाब से किसी भी रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं।

हर वर्ग को हो रहा फायदा: इंटरनेट और सोशल मीडिया ने इस दूरस्थ दोस्ती में कुछ इस तरह का रंग भरा है कि आज युवा ही नहीं तमाम वरिष्ठ नागरिक भी इस ऑनलाइन दोस्ती का खूब आनंद ले रहे हैं। यह ऑनलाइन दोस्ती सिर्फ मनोरंजन या जिज्ञासा तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसने कारोबार की दुनिया में भी बड़ी जबर्दस्त भूमिका निभाई है। यानी ऑनलाइन दोस्ती हर वर्ग को फायदा पहुंचा रही है। *

गजल
ओम निश्चल

दोस्त के हंसते ही...

मुस्कराने से अमलतास भी खिल उठता था
दोस्त के हंसते ही आकाश भी खिल उठता था
उसके आने से आ जाती थी घर में रौनक
उसके होने से मधुमास भी खिल उठता था
ऐसे मिलता था वो जन्मों से हो रिश्ता जैसे
पास बैठा हुआ उल्लास भी खिल उठता था
उसकी यादों में मुकम्मल-सा जहां है अपना
उसके होने का अहसास भी खिल उठता था
छेनी से उसकी तराशी थी कुछ ऐसी मूरत
उसकी जुंबिश से नक्काश भी खिल उठता था
हाथ रखता था वो यूं कांधे पे करीने से
उसके छूने से विश्वास भी खिल उठता था

{ लघुकथाएं }

पुरानी बेंच

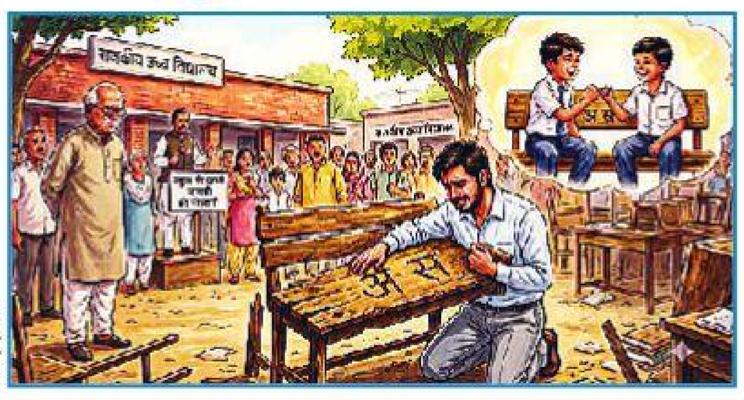

एक लंबे समय बाद अरुण का गांव लौटना हुआ। गांव में बहुत कुछ बदल गया था। पगडंडियों ने सड़क का रूप धारण कर लिया था। उसका अपना स्कूल नए भवन में शिफ्ट हो चुका था, नए फर्नीचर से सजा नया विद्यालय भवन देख मन कुछ प्रसन्न था तो कहीं मन में अवसाद भी था। स्कूल का पुराना सामान नीलाम किया जा रहा था। भारी कदमों से अरुण भी इस नीलामी में जा पहुंचा। कबाड़ के ढेर में पड़ी एक टूटी-फूटी लकड़ी की बेंच देखकर अरुण ठिठक कर रुक गया। 'इसे भी बेचेंगे?' उसने प्रधानाचार्य से पूछा। 'हां, अब इसका कोई उपयोग नहीं।' अरुण ने उस बेंच पर बड़े प्यार से हाथ फेरा। उस पर परकार (कंपास) से उकेरे गए दो अक्षर अब भी सुस्पष्ट रूप से अंकित थे। 'अ' और 'स'। उसके चेहरे पर एकाएक कई भाव, कई रंग आए और चले गए। वह और समीर हमेशा इसी बेंच पर बैठा करते थे। अंगूठे के साथ पूरा हाथ घुमाते हुए दोनों ने एकदम पक्की दोस्ती का दम भरते हुए कहा था, 'चाहे जहां रहें, अपनी यह दोस्ती कभी नहीं टूटेगी।' समय के साथ, अपनी-अपनी नौकरी के चलते, दोनों दूर तो हुए पर उनकी दोस्ती का धागा पूरी मजबूती से बंधा रहा। अरुण बेंच पर बैठ गया और अपने पास की खाली जगह पर प्यार से हाथ फेरते हुए भर्राए स्वर में बोला, 'समीर! तू चल न मेरे साथ, आज भी मैं अकेला नहीं बैठूंगा।' अरुण ने वह बेंच खरीद ली। लोग हैरानी से उसे देख रहे थे। बेंच को सीने से लगाते हुए वह बोला, 'समीर दोस्त था मेरा। युद्ध में दुश्मन से लोहा लेते हुए शहीद हो गया। पर हमारी दोस्ती आज भी इसी बेंच पर बैठी मेरा इंतजार कर रही है।' *

\- डॉ. यशोधरा भटनागर

अपनों से दोस्ती

हंसती-खिलखिलाती उसकी फ्रेंड ठीक उसी अल्हड़ अंदाज में अपने घर के भीतर दाखिल हुई, जैसे कॉलेज कैंपस, बाजार या सिनेमा हॉल में सहेलियों के साथ रहती है। अपनों के साथ भी खुलकर बातें, सीधे-सच्चे सवाल और खुशनुमा व्यवहार का खुलापन। मां, दादी और छोटे भाई से दिनभर की बातें और शिकायतें। न कुछ पूछने में उलझन ना ही कुछ कहने में अटकाव। सब कुछ तरल-सा, बहता-सा, संबंधों में साथ-स्नेह के सही मायने समझाता-सा। उसके लिए यह हैरान-परेशान करने वाले दृश्य थे। वे दोनों बहनें तो घर के भीतर आते ही एक ठहरा ठिठका-सा रंग-ढंग ओढ़ लेती हैं। चाहे कहीं से भी लौटें घर के आंगन में पांव धरते ही कुछ अलग-सी ही हो जाती हैं। हर बात में बड़ों की प्रतिक्रिया के प्रति सजग। आज सहेली के साथ उसके घर आकर अपनों का यह मैत्री भाव देखा तो लगा जैसे बहुत कुछ छूट रहा है, उनके जीवन से, मन से, रिश्तों से। मित्रता जो नहीं है, उनकी एक-दूसरे से। रिश्तों की औपचारिक सजगता और कभी सम्मान तो कभी सधापन रखने के नाम पर, सखा भाव को पनपने का अवसर ही ना मिला। उस घर के बड़े-छोटे सदस्यों की दोस्ती देख यही सोचते हुए विदा हुई कि 'घर के बाहर दोस्तों के साथ खिलखिलाने, मन की कहने का परिवेश अगर घर में ही हो तो, यह दुनिया की सबसे प्यारी दोस्ती होगी।' उसने मन ही मन तय कर लिया कि अपने घर में भी मित्रता का माहौल बनाने की कोशिश करेगी। *

\- डॉ. मोनिका शर्मा

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

संगीत के अनछुए सुर

पत्रकार, लेखक और चित्रकार देव प्रकाश चौधरी की हालिया प्रकाशित किताब 'शब्द उठान सुर तिहाई' ऐसी संगीतमय किताब है, जिसके हर पन्ने पर सुर हैं, संगीत की राग-रागिनियां हैं। इन रागिनियों से निकले हैं संगीत साधकों के जीवन साधना से जुड़े अनेक किस्से। पुस्तक उस्ताद फैयाज खान की संगीत साधना के एक किस्से से शुरू होती है। एक बार जब फैयाज खान, ट्रेन के डिब्बे में बैठे सुरों की साधना में लीन होते हैं। अंग्रेज गार्ड खिड़की के बाहर खड़ा होकर सुरों के सागर में गोते लगाने लगता है। गाड़ी के चलने का वक्त निकलने लगता है और स्टेशन मास्टर बेचैन हो उठता है, मगर गार्ड हरी झंडी नहीं दिखाता। वह कहता है, 'भीतर फरिश्ता गा रहा है।' यह पुस्तक भारतीय संगीत और नृत्य की समृद्ध परंपरा का जीवंत दस्तावेज है। इसमें पंडित बिरजू महाराज के नृत्य में समाहित अभिनय, कथा और संगीत का अद्भुत समन्वय है। बनारस के घाटों पर मंदिरों की गूंजती घंटियों के बीच बिस्मिल्लाह खां की शहनाई की सुर-लहरियां हैं। उस्ताद अमीर खां की रूहानी गायिकी की गहराई है, तो मेवाती घराने के दैदीप्यमान सितारे पंडित जसराज का वह प्रेरक प्रसंग भी है, जिसमें वे तबला वादन से गायन की ओर अग्रसर होते हैं। ये किस्से सुर और संगीत की जादुई शक्ति से हमारा परिचय कराते हैं। लेखक की संवेदना से भरी भाषा ने इसे और आत्मीय, और कलात्मक बना दिया है। *

पुस्तक: शब्द उठान सुर तिहाई, **लेखक:** देव प्रकाश चौधरी
मूल्य: 225 रुपए, **प्रकाशक:** सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

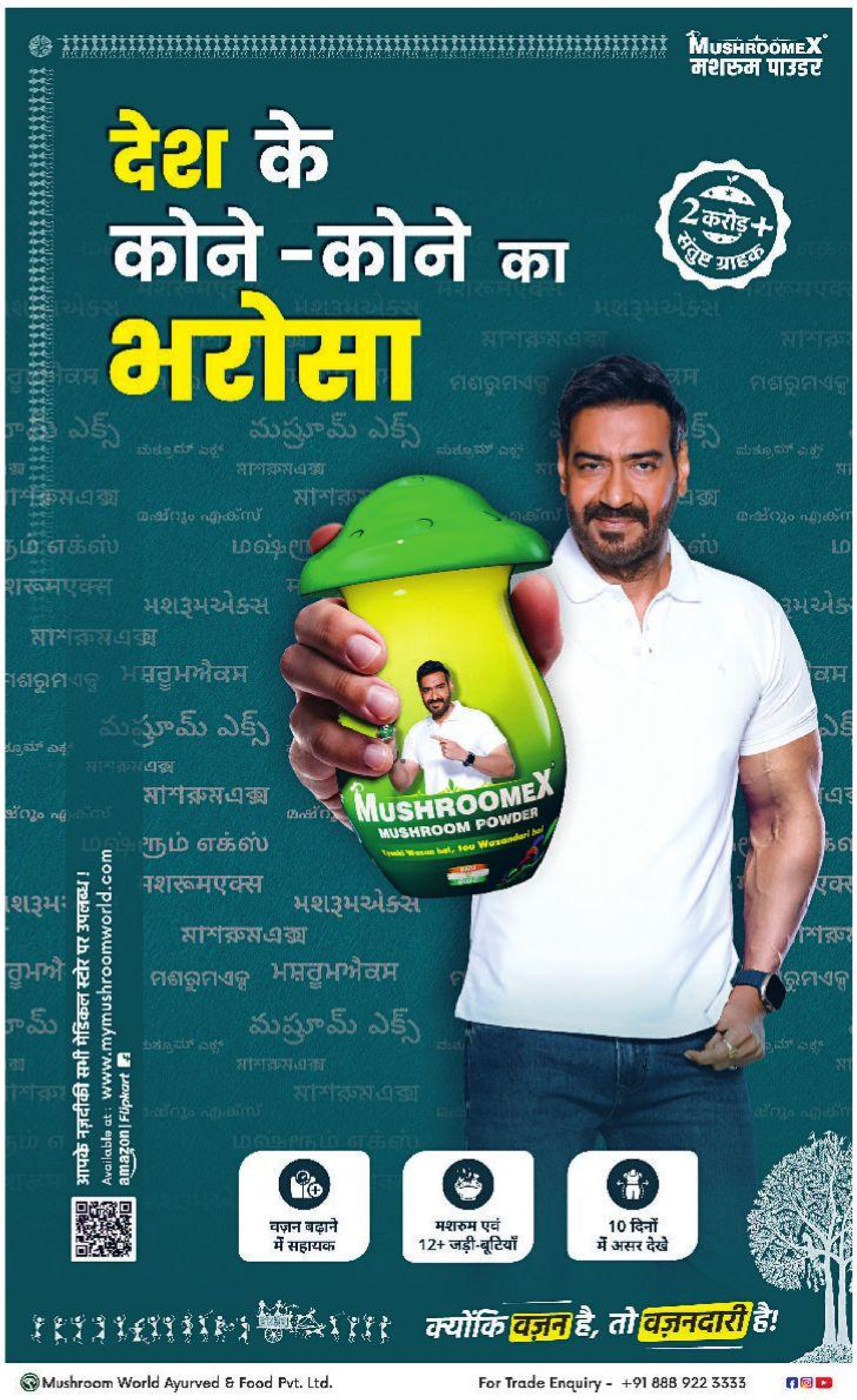

Mushroom World Ayurved & Food Pvt. Ltd.
For Trade Enquiry - +91 888 922 3333